स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना,

उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश

(व्यक्तित्व विकास एवं कॅरियर मार्गदर्शन हेतु स्नातकोत्तर पूर्वार्द्ध के विद्यार्थियों के लिए दृष्टि-पथ)

प्रार्थना

स्मरणीय बातें – जय जवान → जय किसान → जय विज्ञान → जय अनुसंधान

पञ्च प्रण :

(1) भारत को विकसित देश बनाना है ।

(2) जीवन से गुलामी का अंश मिटाना है ।

(3) हमें अपनी विरासत पर गर्व हो ।

(4) एकता और एकजुटता पर जोर ।

(5) नागरिकता के पालन पर जोर ।

जुलाई

आषाढ़ : ‘धर्म को संशय दृष्टि से देखना’ कवीन्द्र रवीन्द्र की चिंता है। इस बात को समझने के लिए, चलिए उस धर्म की बात करते हैं, जिसके लिए कहा जाता है कि ‘यह जगत व्यासोच्छिष्ट है।’ कथा आती है कि एक दिन महर्षि नारद व्यास के आश्रम गये तो वहाँ चुप्पी थी। न तो हवन कुंड में होमाग्नि प्रज्ज्वलित हो रही थी, न हवन की भीनी महक वायुमंडल में तैर रही थी, न वेदपाठ की गूँज दिशाओं में गुंजरित थी और न ही कहीं शास्त्रों की आलोचना चल रही थी। नारद जी आकुल हो कह उठते हैं, ‘‘भो भो ब्रह्मर्षिवासिष्ठ ब्रह्मघोष न वर्तते। एको ध्यानपरस्तुष्णीं किमास्ये चिन्तयन्निव ॥ / ब्रह्मघोषर्विरहित: पर्वतोअयं न शोभते।/रजसा तमसा चैव सोत: सोपल्लवो यथा। / न भ्राजते यथापूर्व निषादनोमिवालय:॥’’ (शान्तिपर्व), ‘अरे यह मैं कहाँ आ गया हूँ ? यह व्यासदेव का आश्रम है या किसी व्याध का गृह ? व्यास जी के आश्रम में कोई सामगायन नहीं हो रहा है, धार्मिक क्रियाएँ नहीं हो रही हैं, यह कैसी विचित्र अनहोनी है ? ’ नारद की इस चिंता का उत्तर देते हुए व्यास जी कहते हैं, ‘मेरे पुत्रों से भी अधिक प्रिय मेरे शिष्य (वैशम्पायन, सुमन्त, पैल और जैमिनी आदि) आज वेद प्रचार के लिए आर्यावर्त गए हुए हैं। शिष्यों के बिना मैं बहुत दुखी हूँ। मेरे मन में कोई शान्ति नहीं है। इसलिए मैं मन मार कर चुपचाप बैठ गया हूँ।’ नारद जी ने व्यास की इस वासनाजन्य क्षोभ का उत्तर बड़ी सावधानी से दिया, ‘अधीयतां भवान् वेदान् सार्धं पुत्रेण धीमता। विधुन्वन् ब्रह्म घोषेण रक्षोभ्यकृतं तम:॥’ अर्थात् मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आपके प्राणाधिक प्रिय शिष्य वेदवाणी प्रचार करने आर्यावर्त गए है परंतु क्या इसलिये धर्मज्ञान का केन्द्र व्यासाश्रम चुप्पी साध लेगा ? आप अपने परम विद्वान एवं बुद्धिमान पुत्र शुकदेव के संग मिलकर, पुन: वेदपाठ प्रारंभ कीजिए तथा ब्रह्मघोष और ओंकारध्वनि द्वारा राक्षसभय को दूर कीजिये, जब अधर्मी और नराधम राक्षस देश के कोने-कोने में भ्रष्टाचार व अंधेरा फैलाते हैं, तब उन्हें दूर करती हैं वेदों की गिरा और पुन: धर्म संस्थापित हो जाता है। इसी प्रकार क्या आषाढ़ के पहले दिवस में हमारे विद्यार्थियों -गुरुओं की चिंता भी दूर होगी ?

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : (i) गुरुपूर्णिमा पर्व पर गुरुवेनमः कार्यक्रम का आयोजन भी सभी कक्षाओं में ऑनलाइन/ऑफलाइन किया जाये। (ii) 26 जुलाई ‘कारगिल विजय दिवस’ के उपलक्ष्य में सैनिकों के सम्मान में आयोजन किए जाएं। (iii) प्रत्येक विद्यार्थी को जल संरक्षण तथा कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करने हेतु प्रेरित किया जाए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (भाग चार)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में पुरानी शिक्षा नीति की खामियों को हटाकर नए पाठ्यक्रम को लाया गया है। इसमें इस बात का खास ख्याल रखा गया है कि पाठ्यक्रम सरल और सहज हो, जो विद्यार्थियों की समझ में आ सके ,बोझ न बने। ऐसी शिक्षा प्रणाली हो जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के अंतर्गत पाठ्यक्रम को छात्रों के लिए रुचिपूर्ण बनाया गया है तथा तकनीकी ज्ञान और उसके व्यावहारिक प्रशिक्षण को भी सम्मिलित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा की गुणवत्ता का उच्चतर स्तर बनाये रखने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार ज्ञान सिर्फ रटने व परीक्षा पास करने के लिए नहीं बल्कि विद्यार्थियों में तार्किक, रचनात्मक, नैतिक सोच आदि का विकास करने के लिए है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत इसे अलग-अलग चरणों में लागू किया जाएगा। इसके कुल चार चरण होंगे। राष्ट्रीय नीति के तहत अब प्राथमिक शिक्षण व्यवस्था **5 +3 +3 +4** की प्रक्रिया में होगी। ये पुरानी प्रक्रिया **10 +2** के आधार से अलग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत ‘राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद’ (NCERT) द्वारा पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाएगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्राथमिक ढांचा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के तहत वर्ष 2030 तक सकल नामांकन (GER) अनुपात को शत प्रतिशत पर लाने और केंद्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर जीडीपी के 6% हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा-नीति, 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय का नाम बदलकर ‘शिक्षा मंत्रालय *(Education Department-ED)* कर दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रमुख बिंदु :(स्कूली शिक्षा के संदर्भ में) :स्कूली शिक्षा के लिए शैक्षणिक ढांचे और पाठ्यक्रम रूपरेखा 5+3+3+4 डिज़ाइन से होगी। जिसके तहत क्रमशः. (i) प्राथमिक स्तर (Foundational Stage) : में 3 से 8 वर्ष के बच्चे आते। ये राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत आने वाला पहला चरण है। पहले की शिक्षा नीति में 6 वर्ष तथा उस से बड़े बच्चों को ही एजुकेशन सिस्टम का भाग माना जाता था। अब प्राइमरी -प्री एजुकेशन को भी फॉर्मल एजुकेशन माना जाएगा , यानी कि अब से 3 से 6 वर्ष के बच्चे भी शिक्षा व्यवस्था का भाग होंगे। इस उम्र तक बच्चों के मस्तिष्क का सही विकास और शारीरिक वृद्धि हो सके इस बात को ध्यान में रखकर उनके लिए पाठ्यक्रम में खेल कूद व अन्य गतिविधियाँ रखी गई हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत अब प्रारंभिक बाल्य अवस्था से ही बच्चों को आगे आने वाली शिक्षा दीक्षा के लिए तैयार किया जाएगा। इसके लिए सम्बंधित संगठनात्मक ढाँचे को और मजबूत बनाया जाएगा जैसे की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता/सहायिका को ट्रेनिंग देना तथा बाल सुलभ, हवादार भवन का निर्माण इत्यादि। 5 साल से कम आयु के बच्चों के लिए “बालवाटिका” का प्रावधान भी किया गया है। यहाँ खेल-कूद के साथ - साथ संख्या ज्ञान आदि दिया जाएगा। कक्षा दो तक कोई भी परीक्षा नहीं ली जाएगी। इस तरह बच्चों को बिना दबाव के शिक्षित किया जाएगा एवं शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाई जाएगी।

(ii) **प्रीपेरटरी स्टेज :** इस स्टेज में 8 से 11 वर्ष के विद्यार्थी शामिल होंगे, इन कक्षाओं के छात्र अपनी मातृभाषा तथा स्थानीय भाषा में भी पढ़ाई कर सकते हैं। यही नहीं वे चाहें तो परीक्षा भी स्थानीय या मातृभाषा में दे सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह कदम यही सोच के उठाया गया है कि अपनी भाषा में ज्ञान अर्जित करना ज्यादा रोचक व सरल होता है। अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता को ख़त्म कर दिया गया है और इसे एक विषय के रूप में पढ़ाया जाएगा, हालाँकि जो अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने के इच्छुक हों उनके लिए भी ऑप्शन है।

(iii) मिडिल स्कूल स्टेज : इस स्टेज में कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थी आएँगे जिनकी उम्र 11 से 14 वर्ष के बीच हो सकती है। इस कक्षा से अब कंप्यूटर ज्ञान और कोडिंग की जानकारी दी जाने लगेगी। सभी को रुचि के अनुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा और उसके बाद इंटर्नशिप भी करवाई जाएगी। इसके लिए उन्हें मार्क्स भी मिलेंगे। इस तरह से प्रशिक्षण के साथ - साथ उनमें व्यावहारिक समझ भी विकसित की जाएगी।

(iv) सेकेंड्री स्टेज : 14 से 18 वर्ष के विद्यार्थी इस स्तर में होंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार अब कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को सेमेस्टर वाइज परीक्षा देनी पड़ेगी। पहले परीक्षा सालभर में एक बार होती थी। अब साल भर में दो परीक्षाएं होने से छात्रों को निरन्तर अध्ययनरत रहना होगा।

अब विद्यार्थियों को आर्ट्स साइंस और कॉमर्स में से किसी एक स्ट्रीम को ही पढ़ने की बाध्यता ख़त्म कर दी गयी है। विद्यार्थी चाहें तो साइंस, कॉमर्स के विषय के साथ आर्ट्स के विषय भी ले सकते हैं ,हालंकि इसके लिए विषयों के पूल बनाये जाने की व्यवस्था की जाएगी।

मूल्यांकन : विद्यार्थियों का मूल्यांकन अब पहले की तरह नहीं किया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत रिपोर्ट कार्ड राष्ट्रीय प्रक्रिया से तैयार होगा। किसी भी छात्र को फाइनल रिपोर्ट कार्ड पर अंक देते हुए उसके ओवरऑ ल परफॉरमेंस को देखा जाएगा। उसका व्यवहार, उसकी एक्स्ट्रा करीकुलर एक्टिविटीज में भागीदारी व प्रदर्शन, तथा उसकी मानसिक क्षमताओं का भी ध्यान रखा जाएगा। अब से रिपोर्ट कार्ड 360 डिग्री असेस्मेंट के आधार पर बनेगा, जिसमें विषय पढ़ाने वाले अध्यापक के साथ-साथ विद्यार्थी अपना व अपने सहपाठियों का विश्लेषण कर खुद को और सहपाठियों को भी अंक देंगे।

प्रवेश शिक्षण प्रणाली से जुड़े सुधार - राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के तहत महाविद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों के लिए भी नए प्रावधान बनाये गए हैं। अगर विद्यार्थियों को 12वीं के मार्क्स के आधार पर मनपसंद कॉलेज में सीधे (कटऑफ के बेस पर) प्रवेश नहीं मिलता है, तो ऐसे विद्यार्थी CAT(कॉमन एप्टीटुड टेस्ट) दे सकते है । ऐसे विद्यार्थी 12वीं तथा कैट एग्जाम के अंक मिलाकर अपनी पसंद की यूनिवर्सिटी में प्रवेश लेने का अवसर पा सकते हैं।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल - एक शोध के अनुसार बच्चों के मस्तिष्क का 85% विकास 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है। इस स्थिति में बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए आरंभिक 6 वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत 6 वर्ष की आयु तक के बच्चों पर खास ध्यान देने का प्रावधान रखा गया है ,जिससे कि बच्चों का विकास संपूर्ण रूप से हो सके।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता - इस घटक के अंतर्गत बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता के ज्ञान को विकसित करने के लिए निपुण योजना का संचालन किया जाएगा। इस योजना का पूरा नाम 'नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरसी' है। इस योजना के माध्यम से आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता का ज्ञान छात्रों को तीसरी कक्षा के अंत तक प्रदान किया जा सकेगा। जिससे वह पढ़ने, लिखने एवं अंकगणित को सीखने की क्षमता प्राप्त कर सकें।

ड्रॉपआउट रेट कम करना - राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक प्रमुख उद्देश्य ड्रॉपआउट रेट में कमी करना है। इस योजना के माध्यम से शिक्षा प्रणाली को लचीला बनाया जाएगा। जिससे कि बच्चे आसानी से शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम हो सकें। बच्चे उन विषयों का चयन कर सकें जो वह पढ़ना चाहते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत विषय चुनाव के विकल्प को लचीला बनाया गया है। जिससे कि ड्रॉपआउट रेट में कमी आएगी।

मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन : राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत विद्यार्थियों की प्रतिभाओं को पहचाना जाएगा एवं उसे बढ़ावा दिया जाएगा।विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा एवं रुचि की पहचान करने में भी सहायता प्रदान की जाएगी। बच्चों को शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन भी प्रदान किया जाएगा। पॉलिसी के माध्यम से बच्चे अपनी प्रतिभा को पहचानने में सक्षम बन सकेंगे।

स्कूली शिक्षा के लिए मानक निर्धारण : स्कूली शिक्षा नियामक प्रणाली बनाई जाएगी, जिसका लक्ष्य शैक्षिक परिमाण में सुधार करना होगा। इस प्रणाली द्वारा समय समय पर शोध किया जाएगा। इस प्रणाली द्वारा- राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने के तरीके पर भी अध्ययन किया जाएगा। पॉलिसी लागू होने के बाद मूल्यांकन किया जाएगा।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी -

भज गोविन्दं भज गोविन्दं,गोविन्दं भज मूढ़मते।
संप्राप्ते सन्निहिते काले,न हि न हि रक्षति डुकृञ् करणे॥

श्रीमद्भगवतगीता

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥

देवता, ब्राह्मण,गुरु और ज्ञानीजनों का पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा-यह शरीर-सम्बन्धी तप कहा जाता है॥

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥

जो उद्वेग न करने वाला, प्रिय और हितकारक एवं यथार्थ भाषण है तथा जो वेद-शास्त्रों के पठन का एवं परमेश्वर के नाम-जप का अभ्यास है- वही वाणी-सम्बन्धी तप कहा जाता है॥

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते॥

मन की प्रसन्नता, शान्तभाव, भगवच्चिन्तन करने का स्वभाव, मन का निग्रह और अन्तःकरण के भावों की भलीभाँति पवित्रता, इस प्रकार यह मन सम्बन्धी तप कहा जाता है॥

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते॥

फल को न चाहने वाले योगी पुरुषों द्वारा परम श्रद्धा से किए हुए पूर्वोक्त तीन प्रकार के तप को सात्त्विक कहते हैं॥

सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत् ।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥

जो तप सत्कार, मान और पूजा के लिए तथा अन्य किसी स्वार्थ के लिए भी स्वभाव से या पाखण्ड से किया जाता है, वह अनिश्चित एवं क्षणिक फलवाला तप यहाँ राजस कहा गया है ॥

रामचरितमानस

प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ॥
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥

हे प्रभु! समुद्र आपके कुल में बड़े (पूर्वज) हैं, वे विचार कर उपाय बतला देंगे। तब रीछ और वानरों की सारी सेना बिना ही परिश्रम के समुद्र के पार उतर जाएगी ॥

सखा कही तुम्ह नीति उपाई । करिअ दैव जौं होइ सहाई ।
मंत्र न यह लछिमन मन भावा । राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥

हे सखा! तुमने अच्छा उपाय बताया । यही किया जाए, यदि दैव सहायक हों । यह सलाह लक्ष्मणजी के मन को अच्छी नहीं लगी । श्री रामजी के वचन सुनकर तो उन्होंने बहुत ही दुःख पाया ॥

नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥
कादर मन कहुँ एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा ॥

लक्ष्मणजी ने कहा, हे नाथ! दैव का कौन भरोसा ! मन में क्रोध कीजिए (ले आइए) और समुद्र को सुखा डालिए। दैव का सहारा लेना तो कायरों के मन का एक आधार है । आलसी लोग ही दैव-दैव पुकारा करते हैं ॥

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥

इधर तीन दिन बीत गए, किंतु जड़ समुद्र विनय नहीं मानता । तब श्री रामजी क्रोध सहित बोले- बिना भय के प्रीति नहीं होती!॥

लछिमन बान सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिख कृसानु ॥
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीति। सहज कृपन सन सुंदर नीति ॥

हे लक्ष्मण! धनुष-बाण लाओ, मैं अग्निबाण से समुद्र को सोख डालूँ । मूर्ख से विनय, कुटिल के साथ प्रीति, स्वाभाविक ही कंजूस से सुंदर नीति नहीं कहानी चाहिए ॥

ममता रत सन ग्यान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी ॥
क्रोधिहि सम कामिहि हरिकथा। ऊसर बीज बएँ फल जथा ॥

ममता में फँसे हुए मनुष्य से ज्ञान की कथा, अत्यंत लोभी से वैराग्य का वर्णन, क्रोधी से शम (शांति) की बात और कामी से भगवान् की कथा, इनका वैसा ही फल होता है जैसा ऊसर में बीज बोने से होता है ॥

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा ॥
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥

ऐसा कहकर श्री रघुनाथजी ने धनुष चढ़ाया । यह मत लक्ष्मणजी के मन को बहुत अच्छा लगा। प्रभु ने भयानक (अग्नि) बाण संधान किया, जिससे समुद्र के हृदय के अंदर अग्नि की ज्वाला उठी ॥

मकर उरग झष गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
कनक थार भरि मनि गन नाना । बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥

मगर, साँप तथा मछलियों के समूह व्याकुल हो गए । जब समुद्र ने जीवों को जलते जाना, तब सोने के थाल में अनेक मणियों (रत्नों) को भरकर अभिमान छोड़कर वह ब्राह्मण के रूप में आया ॥

काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच ॥

काकभुशुण्डिजी कहते हैं, हे गरुड़जी ! सुनिए, चाहे कोई करोड़ों उपाय करके सींचे, पर केला तो काटने पर ही फलता है। नीच विनय से नहीं मानता, वह डाँटने पर ही झुकता है॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥

समुद्र ने भयभीत होकर प्रभु के चरण पकड़कर कहा- हे नाथ! मेरे सब अवगुण क्षमा कीजिए। हे नाथ ! आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी- इन सबकी करनी स्वभाव से ही जड़ है॥

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई। करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई ॥

प्रभु के प्रताप से मैं सूख जाऊँगा और सेना पार उतर जाएगी, इसमें मेरी बड़ाई नहीं है। तथापि प्रभु की आज्ञा अपेल है ऐसा वेद गाते हैं। अब आपको जो अच्छा लगे, मैं तुरंत वही करूँ॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाईं रिषि आसिष पाई ॥
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥

हे नाथ! नील और नल दो वानर भाई हैं। उन्होंने लड़कपन में ऋषि से आशीर्वाद पाया था। उनके स्पर्श कर लेने से ही भारी-भारी पहाड़ भी आपके प्रताप से समुद्र पर तैर जाएँगे॥

बोध वाक्य: 'भारत में प्रश्रय पाने वाले अनेक धर्म हैं , अनेक जातियां हैं, किन्तु इनमें से प्रत्येक भारत से विलीन हो जायें, तब भी भारत, भारत ही रहेगा। किन्तु यदि हिंदुत्व विलीन हो गया तो शेष क्या रहेगा। तब शायद, इतना याद रह जायेगा की भारत नामक कभी कोई भौगोलिक देश था।'-एनी बीसेंट

बोध कथा:

सजगता का महत्व

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में रहते हुए श्री गुरुजी (एम् एस गोलवलकर)अपने कमरे का ताला बंद कर बाहर जाते थे। उनके मित्रों ने कहा यहाँ कोई अपने कमरे में ताला नहीं लगाता, तो आप ऐसा क्यों करते हैं ? तो उन्होंने कहा मेरे कमरे में कोई ऐसी कीमती वस्तु नहीं है, जिसके चुराए जाने का खतरा हो। फिर आप सब मित्रों पर भी मुझे पूरा विश्वास है। लेकिन यदि कमरा खुला रहे, तो अच्छे व्यक्ति के मन भी कभी-कभी बुरे विचार आ जाते हैं। इसीलिए मैं ऐसा करता हूं। ताला चोरों के लिए नहीं है , वह तो इसलिए है कि कोई सज्जन ही चोर ना बन जाए।

मासिक गीत / गान :

पीके फूटे आज प्यार के, पानी बरसा री।
हरियाली छा गई, हमारे सावन सरसा री॥

बादल छाए आसमान में, धरती फूली री।
भरी सुहागन, आज माँग में भूली-भूली री॥
बिजली चमकी भाग सरीखी, दादुर बोले री।
अन्ध प्रान- सी बही, उड़े पंछी अनमोले री॥
छिन-छिन उठी हिलोर, मगन मन पागल दरसा री।
पीके फूटे आज प्यार के, पानी बरसा री॥

फिसली सी पगडण्डी, खिसकी आँख सजीली री।
इन्द्रधनुष रंग - रंगी, आज मैं सहज रंगीली री ॥
रुन झुन बिछिया आज, हिला डुल मेरी बेनी री।
ऊँचें - ऊँचे पेंग, हिण्डोला सरग - नसेनी री ॥
और सखी, सुन मोर ! विजन वन दीखे घर सा री।

फुर-फुर उड़ी फुहार, अलक दल मोती छाए री।
खड़ी खेत के बीच, किसानिन कजली गाए री ॥
झर - झर झरना झरे, आज मन प्रान सिहाए री।
कौन जनम के पुन्न कि ऐसे शुभ दिन आए री ॥
रात सुहागिन गात, मुदित मन साजन परसा री।

---------------------------------------00-------------------------------------

अगस्त

श्रवण - भाद्र : वेदव्यास जी श्रीकृष्ण के मुख से गीता में कहलाते हैं, 'पवित्राय साधुनाम विनाशय च दुष्कृताम।' और भ्रमित अर्जुन से गीता के अठारवें अध्याय के बहत्तरहवें श्लोक में केवल एक ही प्रश्न क्यों पूछते हैं, 'कच्चिदेतच्छुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा। कच्चिदज्ञानसम्मोह: प्रनष्टस्ते धनञ्जय।।' अर्थात् हे पार्थ ! क्या इस गीताशास्त्र को तूने एकाग्रचित्त से श्रवण किया? और हे धनंजय! क्या तेरा अज्ञान जनित मोह नष्ट हो गया ? आज शिक्षा जगत में आवश्यकता है उस अर्जुन की जो शिक्षा / उपाधि ग्रहण करने के पश्चात पूरे विश्वास के साथ कह सके 'नष्टो मोह: स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत। स्थितोऽस्मि गतसन्देह: करिष्ये वचनं तव।।' वह स्मृति बोध अर्जुन को आ सकता है, वह स्मृति बोध स्वयं क्षणिक शिष्यमोह से क्षुभित व्यास को आ सकता है, तो फिर वह वैदिक, पुरातन, सनातन स्वबोध और स्वत्व से भरी स्मृति भला हमें क्यों नहीं हो सकती ?

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: अगस्त महत्वपूर्ण तिथि -13 तृतीया ,हरियाली तीज -15 स्वतंत्रता दिवस,15 नाग पंचमी ,17 गोस्वामी तुलसी दास जयंती ,20अक्षय दशमी श्री महाकालेश्वर सवारी,गायत्री जयंती , रक्षा बंधन 26 (i) 15 अगस्त के अवसर पर झंडा दिवस- हर घर झंडा का आयोजन कराया जाए। (ii) प्रवेशित विद्यार्थियों की ऑनलाइन/ऑफलाइन कॅरियर काउंसलिंग के साथ कॅरियर मार्गदर्शन दिया जाये। (iii) प्रत्येक विद्यार्थी को जल संरक्षण तथा कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करने हेतु प्रेरित किया जाए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

कंप्यूटर कौशल मॉड्यूल : एम.एस. वर्ड प्रोसेसिंग

अध्ययन के दौरान तथा भविष्य में अपने रोजगार सम्बन्धी क्रिया-कलापों के लिए विभिन्न वर्ड दस्तावेज़ जैसे प्रोजेक्ट रिपोर्ट, असाइनमेंट, आवेदन पत्र, बायो-डाटा इत्यादि कंप्यूटर की मदद से तैयार करना होता है, जिसके लिए हमारी निर्भरता कम्प्यूटर ऑपरेटर अथवा कैफे पर होती है। इस प्रक्रिया में जहाँ एक तरफ़ अधिक समय लगता है, वहीं पैसे भी हमें अधिक खर्च करने होते हैं। कभी-कभी टाइप कराये गए दस्तावेजों में एकाधिक बार परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है या कोई टाइपिंग त्रुटि प्रिंटआउट लेने के बाद परिलक्षित होती है तो इसे ठीक कराने पर पुन: समय और पैसे का अपव्यय निश्चित है।

कई बार हमारी अपेक्षानुरूप वैसा कार्य भी नहीं हो पाता है। तब, कितना अच्छा हो कि हम स्वयं ही वर्ड प्रोसेसिंग की इस प्रक्रिया को सीख कर अपनी मर्जी के अनुसार अपने दस्तावेज़ टाइप कर अपने समय और पैसे की बचत कर लें। जहाँ तक वर्ड फ़ाइल

में टाइपिंग का प्रश्न है तो हम सभी मोबाइल में अपने टाइपिंग हुनर का उपयोग बहुत आसानी से कर रहे हैं, जैसे विभिन्न सोशल मीडिया के उपयोग के दौरान या फिर एसएमएस इत्यादि के लिए किया गया टाइपिंग का अभ्यास।

एम.एस.वर्ड प्रोसेसिंग प्रक्रिया को सीख कर हम अपने कम्प्यूटर कौशल को विकसित कर सकते हैं तथा इससे हम Document को Open करना, उसे Create कर Edit, Formatting तथा Print करने का काम कर सकते हैं। एम.एस. वर्ड से हम लैटर, आवेदन, Resume इत्यादि तैयार कर सकते हैं, साथ ही अगर हम चाहें तो ब्रोशर, पोस्टर, प्रमाण-पत्र, रिपोर्ट इत्यादि भी उपलब्ध टेम्पलेट की मदद से तैयार कर सकते हैं। एम.एस. वर्ड प्रोसेसिंग का उपयोग अपने पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन बनाने के दौरान भी कर सकते हैं। इसके सीखने से हम औरों की मदद भी कर सकते हैं।

एम.एस.वर्ड प्रोसेसिंग प्रक्रिया: एम.एस. वर्ड प्रोसेसिंग प्रक्रिया का आशय है कि हम कम्प्यूटर पर एम.एस. वर्ड डॉक्यूमेंट क्रिएट कर अपना दस्तावेज़ तैयार करना चाहते हैं। इसके लिए कम्प्यूटर स्क्रीन पर माउस से राइट क्लिक कर न्यू ऑप्शन के अंतर्गत माइक्रोसॉफ्ट वर्ड डॉक्यूमेंट पर क्लिक करने से डेस्कटॉप पर न्यू माइक्रोसॉफ्ट वर्ड डॉक्यूमेंट डॉक्स फ़ाइल क्रिएट हो जाती है। इस फ़ाइल पर डबल क्लिक कर खोला जाता है। फ़ाइल खुलने पर एक सफ़ेद पेज जैसा हमको स्क्रीन पर दिखाई देता है जिसपर आप टाइप कर सकते हैं।

एम.एस.वर्ड प्रोसेसिंग मैन्यु, कमांड्स तथा ले-आउट: नई फ़ाइल ओपन कर उस पर वांछित मैटर की बोर्ड की सहायता से टाइप करना होता है। फार्मेटिंग के अभ्यास के लिए हमें '=rand()+इंटर की' प्रेस करने पर मैटर अपने आप पेज पर टाइप किया हुआ मिल जाता है। सबसे पहले हम विभिन्न विकल्प अर्थात मैन्यु तथा कमांड को जानते हैं, जैसे पेज के सबसे ऊपर हमें फ़ाइल का नाम दिखेगा, जिसे हम टाइटल बार कहते हैं। टाइटल बार के नीचे मैन्युबार है जिसमें होम, इन्सर्ट, डिज़ाइन, लेआउट, रेफरेन्सेस, मैलिंग, रिव्यु, व्यू, हेल्प जैसे विकल्प दिखाई देते हैं।

प्रत्येक मैन्यु पर क्लिक करने पर हम उसमें उपलब्ध फ़ॉर्मेटिंग विकल्प यानि कमांड को देख कर उनका उपयोग अपने डॉक्यूमेंट के लिए कर सकते हैं। पेज के राईट साइड में वर्टीकल स्क्रोल बार तथा नीचे की ओर हॉरिज़ॉन्टल स्क्रोल बार होता है जिससे पेज को उपर-नीचे या दायें-बाएं कर सकते हैं। पेज पर रूलर तथा मार्जिन सेट करने की सुविधा भी है जिससे उपर-नीचे या दायें-बाएं पेज का मार्जिन सेट कर सकते हैं। पेज के नीच बाएं कॉर्नर में स्टेटस बार है जो फ़ाइल के वर्तमान पेज तथा कुल पेज की संख्या, और कुल शब्दों की संख्या दर्शाता है। पेज के नीच दाएं कॉर्नर में पेज व्यू मोड तथा ज़ूम इन/आउट की सुविधा उपलब्ध है। पेज के ऊपर दाएं कॉर्नर में पेज को मिनिमाइज करने, रीस्टोर डाउन करने तथा क्लोज करने के विकल्प दिए गए हैं।

चलिए, अब हम विभिन्न मैन्यु की विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। सर्वप्रथम, होम मैन्यु में कट, कॉपी, पेस्ट की सुविधा है, वही फॉर्मेट पेंटर के द्वारा हम किसी भी लाईन, पैराग्राफ अथवा शब्द की फ़ॉर्मेटिंग पर जाकर फॉर्मेट पेंटर पर क्लिक कर, जहाँ उस फ़ॉर्मेटिंग को उपयोग करना हो उसे सिलेक्ट करके कर सकते हैं। यही पर फोन्ट के विभिन्न प्रकार जैसे टाइम्स न्यू रोमन, एरियल, कैलिब्री, थोमा, डेवलिस, कृतिदेव इत्यादि फोन्ट का साइज़, कलर,अंडरलाइन कलर, हाईलाइट, बुलेट, नंबरिंग, लेफ्ट, सेंटर, राईट अलायनमेंट अथवा टेक्स्ट को जस्टिफाई कर सकते हैं।

इन सभी फ़ॉर्मेटिंग विकल्प के उपयोग के लिए हम बस अपने माउस के पॉइंटर को उस स्थान पर रखते हैं तो स्क्रीन पर उस विकल्प के बारे में लिखा हुआ भी आ जाता है। इसी प्रकार हम लाईन स्पेसिंग अर्थात दो लाइनों के बीच की दूरी तथा स्टाइल्स का भी उपयोग अपने दस्तावेज़ की आवश्यकतानुसार कर सकते हैं। अगला मैन्यु जो कि इन्सर्ट मैन्यु है, इसमें टेबल, हेडर, फुटर, पेज नंबर, विभिन्न सिम्बोल, गणितीय समीकरण इन्सर्ट करने के विकल्प मौजूद हैं।

इसके साथ ही कवर पेज, ब्लेंक पेज तथा पेज ब्रेक की सुविधा भी है। बस, पहले की ही तरह, माउस के एरो को वहाँ ले जाइये, पता भी चल जायेगा कि इससे क्या होगा तथा लेफ़्ट क्लिक कर उसका उपयोग भी कर सकेंगे। टेबल विकल्प से डॉक्युमेंट में टेबल इन्सर्ट करना बहुत ही आसन है। अपनी आवश्यकतानुसार लाईन तथा कॉलम बना सकते हैं, जैसे ही हम टेबल इन्सर्ट करते हैं, वैसे ही टेबल डिजाईन के विकल्प, कलर, बार्डर इत्यादि ओपन हो जाते हैं जिनका उपयोग हम कर सकते हैं। टेबल के अन्दर राइट क्लिक कर नई लाईन अथवा कॉलम जोड़ना या कम करना, सेल मर्ज या स्प्लिट करने का कार्य किया जाता है। डिजाइन इन्सर्ट मैन्यु में वाटर मार्क, पेज कलर तथा पेज बार्डर की सुविधा है, जिससे डॉक्युमेंट पेज पर कलरफुल या अन्य प्रकार की बार्डर बनाना बहुत ही आसन है।

वर्ड डॉक्युमेंट फ़ाइल को सेव तथा प्रिंट करना: टाइप करने के दौरान बीच-बीच में डॉक्युमेंट को सेव करने हेतु की-बोर्ड से कंट्रोल+एस 'की' को प्रेस कर सेव करना है। अपनी डॉक्युमेंट फ़ाइल को सेव करने तथा डॉक्युमेंट को प्रिंट करने के लिए फ़ाइल ऑप्शन पर क्लिक कर सेव या सेव एज विकल्प से फ़ाइल सेव कर सकते हैं, सेव अर्थात् जिस भी फ़ाइल में आपने काम किया है, वह सेव हो जायेगा। लेकिन सेव एज का प्रयोग कर हम अपनी फ़ाइल को कोई नाम देकर डेस्कटॉप अथवा किसी अन्य लोकेशन पर सेव कर सकते हैं। डॉक्युमेंट को प्रिंट करने के लिए फ़ाइल टैब में प्रिंट ऑप्शन पर क्लिक करना है जिससे प्रिंट हेतु उपलब्ध विभिन्न प्रिंट विकल्प आपके स्क्रीन पर दिखाई देंगे, जिनका चयन कर, प्रिंटर का चयन कर प्रिंट बटन पर क्लिक कर डॉक्युमेंट प्रिंट किया जाता है। यहाँ से भी पहले से बनाई गई फ़ाइल अथवा नई फ़ाइल खोल सकते हैं।

एम.एस. वर्ड हेतु कुछ महत्वपूर्ण 'शॉर्टकट-की': यह निम्नानुसार हैं –

1. Ctrl + A डॉक्यूमेंट को पूरा सिलेक्ट करने के लिए (सिलेक्ट ऑल)
2. Ctrl + B टेक्स्ट को बोल्ड करने के लिए (बोल्ड)
3. Ctrl + C टेक्स्ट को कॉपी करने के लिए (कॉपी)
4. Ctrl + F टेक्स्ट को खोजने के लिए (फोन्ट)
5. Ctrl + J पैराग्राफ को पेज पर दोनों ओर पूरा फ़ैलाने के लिए (जस्टीफाई)
6. Ctrl + P पेज को प्रिंट करने के लिए (प्रिंट)
7. Ctrl + S डॉक्युमेंट को सेव करने के लिए (सेव)
8. Ctrl + V कॉपी तथा कट किये गए टेक्स्ट को पेस्ट करने के लिए (पेस्ट)
9. Ctrl + X टेक्स्ट को कट करने के लिए (कट)
10. Ctrl + Y अनडू को रिपीट करने के लिए (रीडू)
11. Ctrl + Z गलती से डिलीट हुए टेक्स्ट या पेराग्राफ या शब्द को वापस लाने के लिए (अंडू)।

वर्ड प्रोसेसिंग सीखने हेतु पूर्व आवश्यकताएं : (i) कंप्यूटर पर कार्य करने का सामान्य अभ्यास(ii)की-बोर्ड का सामान्य परिचय (iii) माउस प्रचालन का ज्ञान।

वर्ड प्रोसेसिंग सीखने के लाभ - (i) डॉक्युमेंट टाइप करने में आत्मनिर्भरता (ii) स्वयं के वांछित दस्तावेज़ तैयार करने में सक्षम (iii)समय की बचत(iv)आत्म-विश्वास में वृद्धि (v) भाषा कौशल का विकास।

कंप्यूटर कौशल उन्नयन हेतु प्रयास -(i) अभ्यास महत्वपूर्ण है; अत: अधिकाधिक अभ्यास करें। (ii) जहाँ कहीं भी अवसर मिले, कंप्यूटर पर डॉक्युमेंट टाइप कर फार्मेटिंग करें। (iii) विभिन्न मैन्यु को एक्स्प्लोर करें। (iv) कुछ भी कठिनाई होने पर नि:संकोच पूछें। (v) जो कुछ सीखा है, उसका उपयोग करें।

कंप्यूटर कौशल उन्नयन में आकलन किए जाने वाले कौशल: (i) आप कितनी शुद्धता और आसानी से हिंदी तथा अंग्रेजी में टाइप कर सकते हैं ? (ii) आपको विभिन्न मैन्यु तथा फार्मेटिंग विकल्पों की कितनी जानकारी है ? (iii) आप कितनी आसानी से फार्मेटिंग विकल्पों का उपयोग करते हैं ? (iv) आप अपने डॉक्युमेंट की फार्मेटिंग कितने अच्छे से कर सकते हैं ? (v) आप उपलब्ध टेम्पलेट्स का उपयोग कितनी कुशलता से कर सकते हैं ? (vi) आप कितनी कुशलता से अपने वर्ड डॉक्युमेंट को बना सकते हैं ?

भारतीय ज्ञान परम्परा :

आचार्य शंकर - वाणी

मूढ़ जहीहि धनागमतृष्णाम्,कुरु सद्बुद्धिमं मनसि वितृष्णाम्।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तम्,वित्तं तेन विनोदय चित्तं ॥

श्रीमद्भगवतगीता :

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्॥

जो तप मूढ़ता पूर्वक हठ से, मन, वाणी और शरीर की पीड़ा के सहित अथवा दूसरे का अनिष्ट करने के लिए किया जाता है- वह तप तामस कहा गया है॥

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्॥

दान देना ही कर्तव्य है, ऐसे भाव से जो दान देश तथा काल और पात्र के प्राप्त होने पर उपकार न करने वाले के प्रति दिया जाता है, वह दान सात्त्विक कहा गया है॥

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्॥

किन्तु जो दान क्लेशपूर्वक तथा प्रत्युपकार के प्रयोजन से अथवा फल को दृष्टि में रखकर दिया जाता है, वह दान राजस कहा गया है॥

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्॥

जो दान बिना सत्कार के अथवा तिरस्कार पूर्वक अयोग्य देश-काल में और कुपात्र के प्रति दिया जाता है, वह दान तामस कहा गया है॥

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा॥

ॐ, तत्, सत्-ऐसे यह तीन प्रकार का सच्चिदानन्दघन ब्रह्म का नाम कहा है, उसी से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादि रचे गए॥

रामचरितमानस

अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाइ।
आनि देहिं नल नीलहि रचहिं ते सेतु बनाइ॥

बहुत ऊँचे-ऊँचे पर्वतों और वृक्षों को खेल की तरह ही (उखाड़कर) उठा लेते हैं और ला-लाकर नल-नील को देते हैं। वे अच्छी तरह गढ़कर (सुंदर) सेतु बनाते हैं॥

परम रम्य उत्तम यह धरनी। महिमा अमित जाइ नहिं बरनी॥
करिहउँ इहाँ संभु थापना। मोरे हृदयँ परम कलपना॥

यह (यहाँ की) भूमि परम रमणीय और उत्तम है। इसकी असीम महिमा वर्णन नहीं की जा सकती। मैं यहाँ शिवजी की स्थापना करूँगा। मेरे हृदय में यह महान् संकल्प है॥

लिंग थापि बिधिवत करि पूजा। सिव समान प्रिय मोहि न दूजा॥
सिव द्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा॥
संकर बिमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति थोरी॥

शिवलिंग की स्थापना करके विधिपूर्वक उसका पूजन किया शिवजी के समान मुझको दूसरा कोई प्रिय नहीं है। जो शिव से द्रोह रखता है और मेरा भक्त कहलाता है, वह मनुष्य स्वप्न में भी मुझे नहीं पाता। शंकरजी से विमुख होकर जो मेरी भक्ति चाहता है, वह नरकगामी, मूर्ख और अल्पबुद्धि है॥

संकरप्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुँ बास॥

जिनको शंकर जी प्रिय हैं, परन्तु जो मेरे द्रोही हैं एवं जो शिवजी के द्रोही हैं और मेरे दास (बनना चाहते) हैं, वे मनुष्य कल्प भर घोर नरक में निवास करते हैं॥

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं॥
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि। सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि॥

जो मनुष्य रामेश्वरजी का दर्शन करेंगे, वे शरीर छोड़कर मेरे लोक को जाएँगे और जो गंगाजल लाकर इन पर चढ़ावेगा, वह मनुष्य सायुज्य मुक्ति पावेग॥

होइ अकाम जो छल तजि सेइहि। भगति मोरि तेहि संकर देइहि॥
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही। सो बिनु श्रम भवसागर तरिही॥

जो छल छोड़कर और निष्काम होकर श्री रामेश्वरजी की सेवा करेंगे, उन्हें शंकरजी मेरी भक्ति देंगे और जो मेरे बनाए सेतु का दर्शन करेगा, वह बिना ही परिश्रम संसार रूपी समुद्र से तर जाएगा॥

बोध वाक्य : " प्रशंसा और निंदा एक दूसरे को संतुलित करते हैं और दोनों का ही बिना किसी दुःख -सुख के अनुभव का आधार पर सहन करते रहना चाहिए।" -योगिनी लल्लेश्वरी

बोध कथा:

प्रभु की रोटी

एक महात्मा जी प्रवचन कर रहे थे। प्रवचन सुन कर एक युवक को उनकी यह बात अच्छी लगी कि प्रभु सबको रोटी देते हैं। उसने दूसरे दिन से काम पर जाना बंद कर दिया। जो भी उससे पूछता कि वह काम पर क्यों नहीं जा रहा है, तो वह कहता कि भगवान जब रोटी देने ही वाले हैं तो परिश्रम क्यों करुं? एक रोज महात्मा उसी गांव से निकले,जहाँ उस युवक का घर था। गांव-नगर वालों से उसके बारे में सुनकर महात्मा उसकी हालत को समझ गए। उन्होंने उसे दूसरे दिन बुलाया और कहा कि वह उसे कोई उपहार देंगे। युवक यह सुनकर खुश हुआ। वह सेवेरे ही पहुंच गया। ज्ञानी ने पूछा कैसे आऐ भाई ? युवक ने कहा पैरों से चलकर। ज्ञानी ने उसे मिठाई उपहार में दी और कहा, तुम पैरो से चलकर मेरे पास आए तो मिठाई पा सके। ईश्वर रोटी अवश्य देता है, पर वह देता उसी को है, जो कमाने या कुछ पाने के लिए प्रयास करता है। जब मेरा उपहार तुम बिना पैरों से चले प्राप्त नहीं कर सके, तो भगवान द्वारा दी जाने वाली रोटी कैसे पा सकोगे। युवक को बात समझ में आ गई और अगले दिन से वह फिर काम पर जाने लगा।

मासिक गीत / गान :

भारत माँ का मान बढ़ाने बढ़ते माँ के मस्ताने।
कदम-कदम पर मिल-जुल गाते वीरों के व्रत के गाने॥
ऋषियों के मन्त्रों की वाणी भरती साहस नस-नस में।
चक्रवर्तियों की गाथा सुन, नहीं जवानी है बस में।
हर-हर महादेव के स्वर से विश्व-गगन को थर्राने॥
हम पर्वत को हाथ लगाकर संजीवन कर सकते हैं,
मर्यादा बनकर असुरों का बलमर्दन कर सकते हैं;
रामेश्वर की पूजा करके जल पर पत्थर तैराने॥
जरासंध छल-बल दिखला ले, अंतिम विजय हमारी है;
भीम-पराक्रम प्रकटित होगा, योगेश्वर गिरधारी है।
अर्जुन का रथ हाँक रहा जो, उसके हम हैं दीवाने॥

--00--

सितम्बर

भाद्रपद – गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर की चिंता है कि आसुरी विचारों की छाया को नष्ट करना है तो उसके आसुरी देह को नष्ट करना होगा। भारतीय ज्ञान परम्परा के अनेकों धर्मसाधक विश्वभर में घूम-घूम कर भारतीय वैश्विक चेतना का स्मरण करा रहे हैं, लोग भारत की ओर आशा और विश्वास भरी नजरों से समाधान के लिए देख रहे हैं, तब शिक्षण - सुकदेवों को अपना कर्तव्य निर्धारित करना ही होगा। भारत के अन्दर दैवी सम्पदा का परिचय जन-जन को कराना होगा। बिना उसके केवल दण्डनीति से इसे पालन नहीं कराया जा सकता। यही आज का युगधर्म है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : (i)भारत संघ की राजभाषा हिन्दी पर संवाद का आयोजन (ii) भाषा कौशल की लिए हिंदी–अंग्रेजी शब्द सामर्थ्य बढ़ाना के जीवन पर उद्बोधन। (iii) ईश्वरचंद्र विद्यासागर (iv) शिक्षक दिवस का आयोजन (v) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे।

भारतीय ज्ञान परम्परा

राष्ट्रीय तत्वज्ञान और वेदव्यास

महाभारत हमारा राष्ट्रीय ग्रन्थ है। यह मात्र कौरवों-पाण्डवों का इतिहास नहीं अपितु इस भारत भूमि में जन्मा कोई भी व्यक्ति और समूह न होगा जिस पर इस ग्रंथ में प्रतिपादित विचार, तत्वज्ञान धार्मिक मत एवं कथाओं के संस्कार न हुए हों। यह अद्वितीय राष्ट्रीय ग्रंथ है। महाभारत के शान्ति एवं भीष्म पर्व सहस्त्रों वर्षों से मानव जीवन की समस्याओं का समाधान करते आये हैं। इस ग्रंथ का धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्व है। भारतीय संस्कृति का विशुद्ध रूप इसी ग्रंथ में उपलब्ध है। भारतीय तत्वज्ञान को आचरण में उतारे बिना संस्कृति की रक्षा सम्भव नहीं। श्रीकृष्ण इस पूरे ग्रंथ के प्राण श्रीमद्भगद्गीता में इसी विषय का प्रतिपादन करते हैं। वेदव्यास महाभारत के न केवल प्रणेता हैं, बल्कि पूरे काल के साक्षी भी है। त्रिकालदर्शी हैं। इस पूरे ग्रंथ में दो ही ऐसे पात्र हैं, श्रीकृष्ण और वेदव्यास जो भूत और भविष्य को जानने का सामर्थ्य रखते हैं। उन्हीं के सामर्थ्य से आर्विभूत यह ग्रंथ अपने कलेवर और ऐतिहासिकता के लिए लाख विवादों, तर्कों के उपरांत भी न केवल भारतीय जीवन और राष्ट्र का अपितु विश्व का मार्गदर्शक ग्रंथ कहा जायेगा।

भारत की विचारधारा प्रारंभ से ही चराचर के कल्याण पर केन्द्रित रही है। अर्थात् जीवन के प्रत्येक अनुष्ठान का मध्यवर्ती बिन्दु मनुष्य के साथ प्राणी रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो- 'साधारण मनुष्य' और साहित्य की भाषा में कहें तो 'लोक'। इसको प्रभावित करनेवाला यदि कोई रहा है तो वह है, मनुष्य। विश्व के प्रत्येक राष्ट्र की महानता और उसका भविष्य इस सामान्य जन के चरित्र और उसकी सक्रियता पर ही निर्भर होता है। भारत की सम्पूर्ण आवादी का 65 प्रतिशत हिस्सा दुनिया के सबसे युवा की श्रेणी में माना जाता है। अर्थात् आगे आने वाले दुनिया का भविष्य भारत के इन्हीं युवाओं पर निर्भर है। अत: आवश्यक है कि इन्हें भारतीय तत्वज्ञान का बोध हो और वह उसके सहारे दुनिया की चुनौती का न केवल सामना करें बल्कि एक सनातन राष्ट्र के नाते उनका मार्गदर्शन करते हुए अपने ऋषियों के उस बोधवाक्य को चरितार्थ करें, जिसमें कहा गया है- ' स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरण पृथव्या: सर्व मानवा:।' महाभारत इस बोध की कुंजी है।

महाभारत तथ्य और कथ्य: महाभारत इतिहास भी है और काव्य भी। इस ग्रंथ पर कुछ भी लिखने के पहले मैं रामधारी सिंह दिनकर की दृष्टि यहाँ रखना चाहता हूँ-"अनुसंन्धानी विद्वान सत्य को तर्क से पकड़ता है और समझता है कि सत्य सचमुच उसकी गिरफ्त में है। मगर इतिहास का सत्य क्या है ? घटनाएं मरने के साथ फ़ोसिल बनने लगती हैं, पत्थर बनने लगती हैं, दन्तकथा और पुराण बनने लगती हैं। बीती घटनाओं पर इतिहास अपनी झिलमिली डाल देता है, जिससे वे साफ-साफ दिखायी न पड़ें, जिससे बुद्धि की ऊँगली उन्हें छूने से दूर रहे। यह झिलमिली बुद्धि को कुंठित और कल्पना को तीव्र बनाती है, उत्सुकता में प्रेरणा भरती और स्वप्नों की गाँठ खोलती है। घटनाओं के स्थूल रूप को कोई भी देख सकता है, लेकिन उनका अर्थ वही पकड़ता है, जिसकी कल्पना सजीव है। इसीलिए, इतिहासकार का सत्य नये अनुसंधानों से खंडित हो जाता है, लेकिन, कल्पना से प्रस्तुत चित्र कभी भी खंडित नहीं होते।" महाभारत को दिनकर जी की इसी दृष्टि से समझा जा सकता है, जिसका आधार आस्था और विश्वास है।

मानव जीवन का मूलाधार है, संस्कृति। यदि संस्कृति नहीं तो जीवन का अर्थ ही व्यर्थ है। भारतीय संस्कृति के चार नियामक अंग हैं- अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। भारतीय संस्कृति को व्याख्या देने वाले दो विशाल ग्रंथ हुए- एक रामायण और दूसरा महाभारत। महाभारत में आया है-

"धर्मेह्यर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित॥"

अर्थात् महाभारत में सब कुछ है। ध्यान रखने की बात है कि यह श्लोक इसकी विशालता के कारण आया है साथ ही इससे भारतीय संस्कृति के उन चारो अंगों का सम्बन्ध है, जिसे हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कहते हैं। महाभारत में रामायण की भाँति एक भी व्यक्ति का संबद्ध चरित नहीं है। उसमें कौरवों और पांडवों का संघर्ष तो मुख्य है, किन्तु उसके सहारे अनेक आख्यान, उपाख्यान (जैसे शकुंतलोपाख्यान, सावित्री-उपाख्यान, नलोपाख्यान आदि) और नीतियाँ (जैसे विदुर नीति), उपदेशात्मक प्रवचन (जैसे- भीष्म पितामह द्वारा धर्म की व्याख्या) आ गए हैं- प्रसिद्ध दार्शनिक और नैतिक ग्रंथ श्रीमद्भगद्गीता इसी का एक अंग है। महाभारत की रचना रामायण के बाद हुई। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का द्योतक है।

महाभारत का आदर्श व्यवहारिक है- 'आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत।' अर्थात् जो अपने लिए प्रतिकूल है, उसको दूसरे के प्रति भी नहीं करना चाहिए। महाभारत विरोधाभाषी ग्रंथ दिखता है किन्तु उसका लक्ष्य स्पष्ट है। महाभारत में घोर युद्ध अवश्य है किन्तु अन्त में शांति का वातावरण उपस्थित है। श्रीमद्भगवत्गीता इसी भीष्मपर्व का अंग है, मनुष्य के सात्विक आदर्शों का ग्रंथ है।

निष्काम कर्म मनुष्य को बंधन में नहीं डालता और समाज भी उसके लोकोपकारी कार्यों से वंचित नहीं होता। भगवान ने कर्म के जिस फल का त्याग बताया वह त्याग केवल गीता का कथन नहीं रह गया बल्कि वह रवीन्द्रनाथ और राष्ट्रकवि मैथिलीशरण से होता हुआ समाज और साहित्य जगत तक पहुँचा। 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' को रवीन्द्र नाथ कहते हैं-'वैराग्य साधने जे मुक्ति से आमार नय। असंख्य बंधन हे मांझेहे आनंदमय ! लभिवमुक्तिस्वाद ॥' मैथिलीशरण गुप्त साकेत में कहते हैं,
(सीता-राम संवाद)-

"सीता- देखो कैसा स्वच्छंद यहाँ लघु नद है, इसको भी पुर में लोग बाँध लेते हैं।
राम- हाँ ! वे इसका उपयोग बढ़ा देते हैं।
सीता- पर इससे नद का नहीं, उन्हीं का हित है, पर बंधन भी क्या स्वार्थ हेतु समुचित है ?
राम- मैं तो नद का परमार्थ उसे मानूँगा ?
हित उसका उससे अधिक कौन जानूँगा ?

कविवर सुमित्रानन्दन पंत ने भी कहा है- 'तेरी मधुर मुक्ति ही बंधन।' महाभारत में श्रीमद्भावतगीता के अतिरिक्त और जिन्हें इसका रत्न माना जाता है, वे हैं- मनुस्मृति, गजेन्द्रमोक्ष, भीष्म स्तपराज और विष्णु सहस्रनाम। महाभारत लेखन की प्रसिद्ध कथा है कि - "गणेश जी ने व्यासदेव से कहा, विद्वन ! मैं लेखन का कार्य अपने ऊपर लेने को तैयार हूँ पर एक शर्त है, यदि आप इस शर्त को पूरा करें, तो मैं कार्य-भार संभाल सकता हूँ।" व्यासदेव ने पूछा, "आपकी शर्त क्या है ?" गणेश जी बोले, "मेरी लेखनी कहीं पर रुकनी नहीं चाहिए। आप मुझे इस प्रकार लिखाते रहें कि तनिक देर के लिए भी मेरी लेखनी को विराम न प्राप्त हो। यदि यह शर्त स्वीकार हो तो मैं यह कार्य संपादित करूँगा।" और कहा जाता है कि व्यासदेव ने उनकी बात इस शर्त के साथ मान ली कि बिना अर्थ या भाव समझे आप भी नहीं लिखेंगे। और कुछ ऐसे कठिन श्लोक बीच-बीच में डाले, जिसे समझने में गणेश जी को समय लगता। इन्हीं श्लोकों को महाभारत में कूट श्लोक कहा जाता है। यह बात अलग है कि आज तक कोई बता नहीं सका कि ये कूट श्लोक कौन से हैं, क्योंकि व्यास जी स्वयं कहते हैं-" ये जो महाभारत के कूट श्लोक हैं उन्हें मैं जानता हूँ, और मेरा पुत्र शुकदेव जानता है। संजय जानता है या नहीं इसमें सन्देह है। "

महाभारत का युद्ध ईसा से 3101 वर्ष पूर्व हुआ था। उस समय भगवान वेदव्यास ने 'जय' नामक ग्रंथ का प्रणयन किया। इस ग्रंथ में केवल भारतीय युद्ध का ही वर्णन है। तदुपरान्त उनके शिष्य वैशम्पायन ने सम्भवत: उनके मार्गदर्शन में उस 'जय' नामक ग्रन्थ में समूचे भारत-कुल का इतिहास समाविष्ट कर उसकी श्लोक संख्या 24000 तक वृद्धिगत की तथा उसे 'भारत' नाम से विभूषित कया। पश्चात लगभग 2500 वर्षों के उपरान्त अर्थात् ईसा के 250 वर्ष पूर्व श्री लोमहर्षण नामक महापण्डित ने तत्कालीन तत्वज्ञान से प्रभावित अनेक पंथ, धर्म पंथ, नीति, तत्व तथा महापुरुषों की कथाओं के रूप में लगभग 75000 श्लोक उसमें और जोड़ कर उसका वर्तमान स्वरूप 'महाभारत' नामकरण किया। यह आज भी शोध का विषय है।

महाभारत की वर्तमान में संख्या एक लाख श्लोक की मानी जाने के कारण इसे 'शत साहस्त्री संहिता नाम प्राप्त है। 445 ई. के एक शिलालेख में उल्लेख है: 'शत साहस्त्र्यां संहितायां वेदव्यासेनोक्तम्' जिससे स्पष्ट है कि इससे कम से कम 200 वर्ष पूर्व इस ग्रंथ का अस्तित्व अवश्य होगा। इस प्रकार ग्रंथ के विकास क्रम के तीन सोपान हैं- जय, भारत तथा महाभारत। महाभारत में अठारह खण्ड या पर्व हैं- आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासी, मौसल, महाप्रस्थानिक एवं स्वर्गारोहण।

महाभारत का (राष्ट्रीय) तत्वज्ञान: राष्ट्र एक जीवमान संज्ञा है। सम्बन्धित राष्ट्र के अमूलाग्र चिन्तकों द्वारा निर्धारित सिद्धांत, उनका समर्थन और उनकी मीमांसा को उस राष्ट्र का तत्वज्ञान कहा जाता है। उदाहरण के लिए हिटलरकालीन जर्मनी में मानवी पराक्रम का आधार 'रक्त' था और नार्डिक रक्त को वे सर्वश्रेष्ठ मानते थे। अत: रक्त मिश्रण के विवाह उस काल में वर्जित थे। वे लोकतंत्रीय प्रणाली को राष्ट्रहित में नहीं मानते थे। यही उनका तत्वज्ञान था। रूस का आधार भिन्न है, वहाँ अर्थ निर्मित के साधन ही समाज की संस्कृति का नियमन करते हैं। वे वर्ग हीन समाज की स्थापना में मानव की प्रगति मानते हैं। रूस कहता था विश्व में मानव के दो ही वर्ग हैं-एक पूँजीपतियों का दूसरा मजदूरों का। इसीलिए वहाँ फ्रांस या जर्मनी की तरह रक्त के आधार पर राष्ट्रीयता का विचार नहीं होता। रूस का यही तत्वज्ञान है। फ्रांस में राज्यक्रान्ति के पूर्व राजाशाही और जन्म से प्राप्त ऊँच-नीच समाजिक स्थिति का विचार था किन्तु राज्यक्रान्ति में स्थिति बदल गई। समता, बन्धुता और स्वतंत्रता को सिद्धांतों का घोष हुआ और तब से वही फ्रांस का तत्वज्ञान है।

समझना होगा कि प्रत्येक राष्ट्र के तत्वज्ञान की एक निश्चित दिशा हुआ करती है। तदानुसार वह समाज में आचरणशील हुआ करता है। बोध यह कि बिना आचरण के तत्वज्ञान व्यर्थ होता है। तत्वज्ञान के इस गंभीर महत्व को समझ कर हम अपने राष्ट्र का विचार करें कि इस भारत भूमि का तत्वज्ञान क्या है। क्या विगत हजार वर्षों की दुरावस्था का कारण तत्वज्ञान का आचरण में न उतरना ही था ? क्या महाभारत का तत्वज्ञान समाजोन्नति का सर्वथा पोशक, उदार, पराक्रमी और विजिगीषुवृत्ति का वर्द्धक था। क्या वह सचमुच देश को यश, वैभव, कीर्ति प्रदान करने वाला था ?

महाभारत के शांति और अनुशासन पर्व इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्रथम में भीष्म का युधिष्ठिर के प्रति मोक्ष धर्म का उपदेश है तो दूसरे पर्व में धर्म तथा नीति की कथाएं हैं, जो भारत राष्ट्र के धर्म, संस्कृति और तत्वज्ञान को प्रकाशित करती हैं। किन्तु अन्तत: तत्वज्ञान की दृष्टि से वे ही मत मान्य होते हैं जो भारतीय कहलाने लायक हैं, जिनमें श्रीकृष्ण की राजमुद्रा अंकित है। महाभारत में इसके कर्ता वेदव्यास स्वयं इसके प्रमुख पात्र रहे हैं। युद्ध वर्णन के माध्यम से वे भौतिक जीवन की निस्सारता दिखा कर मोक्ष का द्वार खोलते हैं। महाभारत का मुख्य रस शांत है। वीर उसका अंगीभूत है। इसमें एक साथ अर्थ, धर्म और काम शास्त्र है। आचार्य बलदेव उपाध्याय लिखते हैं- " महर्षि वेदव्यास ने भारतीय अर्थ नीति, राजनीति तथा अध्यात्म शास्त्र के सिद्धान्तों का सारांश इतनी सुन्दरता से इस ग्रंथ रत्न में प्रस्तुत किया है कि यह वास्तव में भारत के धर्म तथा तत्व ज्ञान का विश्वकोष है।"

वनवास के कठिन कष्ट को झेलते युधिष्ठिर के चारों भाइयों और पत्नी के मन में शंका पैदा होती है कि सत्यनिष्ठ, पुण्यशील, सदाचारी, धर्मराज को अरण्यवास और कहाँ कपटी, अधर्मी दुर्योधन को सुखपूर्ण राज्यलक्ष्मी ! भयंकर विरोधाभास ! वे सबके सब चाहते हैं कि इस वनवासी जीवन को छोड़कर अपना राज्य प्राप्त करना चाहिए। किन्तु धर्मराज को यह मत किंचित भी नहीं भाता। वे कहते हैं, " मैं अपनी प्रतिज्ञा से कभी विचलित नहीं होऊँगा, यह निश्चित है। मोक्ष अथवा प्रत्यक्ष जीवन का भी त्याग करना पड़े तो भी मैं सत्यरूप-धर्म ही स्वीकार करूँगा। कारण, राज्य, पुत्र, कीर्ति अथवा द्रव्य का स्थान सत्य के एक षोडस अल्पांश की तुलना में भी कुछ नहीं।"

पाण्डवों की यह स्थिति देखकर बलराम श्रीकृष्ण से कहते हैं, " हे कृष्ण आज यही कहना पड़ रहा है कि प्राणिमात्र के अभ्युदय का कारण धर्माचरण और अपकर्ष का कारण अधर्माचरण नहीं है। क्योंकि धर्म के अनुसार चलने वाले महात्मा युधिष्ठिर को जटाजूटधरी बनकर, वल्कल पहिनकर, वन में निवास करते हुए अनेक कष्ट भोगना पड़ रहा है और दुर्योधन पृथ्वी का राज्य कर रहा है। तब भी इसके अधर्माचरण के कारण पृथ्वी फटकर उसे निगल नहीं ले रही। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि मंदबुद्धि वाले मनुष्य को धर्म के बजाय अधर्म आचरण करना ही श्रेयस्कर प्रतीत होता है। दुर्योधन को सच भोगते हुए और धर्मी धर्मराज को दु:ख झेलते देखकर लोगों के मन में यह शंका निर्माण हुई है कि धर्म और अधर्म में से आखिर आचरण किसका करना चाहिए?" बलराम के इस शंका का उत्तर गीता को गहराई से पढने पर मिलता है।

तात्पर्य यह कि भारतीय राष्ट्र सनातन है। इसका निर्माण कोई अमरीका, चीन, या यूरोपीय देशों की तरह न होकर निरन्तर ऋषियों के चिन्तन स्वरूप हुआ है। बाल्मीकि और वेदव्यास इसके आधार हैं। इस देश में संतों की अपनी एक परंपरा है। जिनके खोजी सिद्धांत व्यवहारिक प्रयोगों पर आधारित हैं।'नित्यनूतन चिर पुरातन' यह राष्ट्र अपने नश-नश में अपने संतों के दार्शनिक चिन्तन और ज्ञान परंपरा को अपने रक्त में लेकर निरन्तर विकासशील है।

आचार्य शंकर वाणी -

नारीस्तनभरनाभीदेशम्,दृष्ट्वा मागा मोहावेशम्।
एतन्मान्सवसादिविकारम्,मनसि विचिन्तय वारं वारम्॥

श्रीमद्भगवतगीता

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्तः सततं ब्रह्मवादिनाम्॥

इसलिए वेद-मन्त्रों का उच्चारण करने वाले श्रेष्ठ पुरुषों की शास्त्र विधि से नियत यज्ञ, दान और तपरूप क्रियाएँ सदा 'ॐ' इस परमात्मा के नाम को उच्चारण करके ही आरम्भ होती हैं॥

तदित्यनभिसन्दाय फलं यज्ञतपःक्रियाः।
दानक्रियाश्चविविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः॥

तत् अर्थात् 'तत्' नाम से कहे जाने वाले परमात्मा का ही यह सब है- इस भाव से फल को न चाहकर नाना प्रकार के यज्ञ, तपरूप क्रियाएँ तथा दानरूप क्रियाएँ कल्याण की इच्छा वाले पुरुषों द्वारा की जाती हैं॥

सद्भावे साधुभावे च सदित्यतत्प्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते॥

'सत्'- इस प्रकार यह परमात्मा का नाम सत्यभाव में और श्रेष्ठभाव में प्रयोग किया जाता है तथा हे पार्थ! उत्तम कर्म में भी 'सत्' शब्द का प्रयोग किया जाता है॥

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्यवाभिधीयते॥

तथा यज्ञ, तप और दान में जो स्थिति है, वह भी 'सत्' इस प्रकार कही जाती है और उस परमात्मा के लिए किया हुआ कर्म निश्चयपूर्वक सत्-ऐसे कहा जाता है॥

काम्यानां कर्मणा न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः॥

श्री भगवान बोले- कितने ही पण्डितजन तो काम्य कर्मों के त्याग को संन्यास समझते हैं तथा दूसरे विचारकुशल पुरुष सब कर्मों के फल के त्याग को खान-पान इत्यादि जितने कर्तव्यकर्म हैं, उन सबमें इस लोक और परलोक की सम्पूर्ण कामनाओं के त्याग का नाम सब कर्मों के फल का त्याग है) त्याग कहते हैं|

रामचरितमानस

सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा। सकल कपिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा॥
खाहु जाइ फल मूल सुहाए। सुनत भालू कपि जहँ तहँ धाए॥

प्रभु ने समुद्र के पार डेरा डाला और सब वानरों को आज्ञा दी कि तुम जाकर सुंदर फल-मूल खाओ। यह सुनते ही रीछ-वानर जहाँ-तहाँ दौड़ पड़े॥

सब तरु फरे राम हित लागी। रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी॥
खाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं। लंका सन्मुख सिखर चलावहिं॥

श्री रामजी के हित (सेवा) के लिए सब वृक्ष ऋतु-कुऋतु- समय की गति को छोड़कर फल उठे। वानर-भालू मीठे फल खा रहे हैं, वृक्षों को हिला रहे हैं और पर्वतों के शिखरों को लंका की ओर फेंक रहे हैं॥

बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ॥

वननिधि, नीरनिधि, जलधि, सिंधु, वारीश, तोयनिधि, कंपति, उदधि, पयोधि, नदीश को क्या सचमुच ही बाँध लिया?॥

नाथ बयरु कीजे ताही सों । बुधि बल सकिअ जीति जाही सों ॥
तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ॥

मंदोदरी ने कहा, हे नाथ! वैर उसी के साथ करना चाहिए, जिससे बुद्धि और बल के द्वारा जीत सकें । आप में और श्री रघुनाथजी में निश्चय ही कैसा अंतर है, जैसा जुगनू और सूर्य में! ॥

रामहि सौंपि जानकी नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥

श्री रामजी के चरण कमलों में सिर नवाकर उनको जानकी जी सौंप दीजिए और आप पुत्र को राज्य देकर वन में जाकर श्री रघुनाथ जी का भजन कीजिए ॥

संत कहहिं असि नीति दसानन । चौथेंपन जाइहि नृप कानन ॥
तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥

हे दशमुख! संतजन ऐसी नीति कहते हैं कि चौथेपन (बुढ़ापे) में राजा को वन में चला जाना चाहिए । हे स्वामी ! वहाँ (वन में) आप उनका भजन कीजिए जो सृष्टि के रचने वाले, पालने वाले और संहार करने वाले हैं ॥

सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करब कवन बिधि रिपु सैं जूझा ॥
कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥

सभा में आकर उसने मंत्रियों से पूछा कि शत्रु के साथ किस प्रकार से युद्ध करना होगा ? मंत्री कहने लगे- हे राक्षसों के नाथ! हे प्रभु! सुनिए, आप बार-बार क्या पूछते हैं ? ॥

सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।
नीति बिरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥

कानों से सबके वचन सुनकर प्रहस्त हाथ जोड़कर कहने लगा- हे प्रभु! नीति के विरुद्ध कुछ भी नहीं करना चाहिए, मन्त्रियों में बहुत ही थोड़ी बुद्धि है ॥

बोध वाक्य: “ हिंदी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है ।“मैथिलीशरण गुप्त”

बोध कथा :

पराजित का तत्वज्ञान

कोई बात कितने भी ठीक हो, पर यदि उसे कहने वाला दुर्बल है, तो उसकी बात सुनी नहीं जाती । जापान का यह प्रसंग-भारत के प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार रविंद्रनाथ ठाकुर एक बार जापान के प्रवास पर गये । वहां उन्हें एक विश्वविद्यालय के छात्रों के सम्मुख भारतीय विचार एवं तत्वज्ञान की श्रेष्ठता पर भाषण देना था ।

विश्वविद्यालय के प्रबंधकों ने सभी छात्रों को कार्यक्रम में आने की सूचना दी थी । छात्रावास भी वही आस पास ही थे, पर आश्चर्य कि एक भी छात्र भाषण सुनने के लिए वहां नहीं आया । कार्यक्रम स्थल पर केवल रविंद्रनाथ ठाकुर और आयोजक भी उपस्थित थे । बाद में जब छात्रों से न आने का कारण पूछा तो उत्तर मिला की गुलाम देश के नागरिक से हम उनके कौन से श्रेष्ठ विचार सुन सकते हैं , यदि उनका तत्वज्ञान श्रेष्ठ है, तो वह अपने देश को स्वतंत्र क्यों नहीं करा लेते ?

मासिक गीत / गान :

आया समय जवानों जागो भारत भूमि पुकारती।
उठो शत्रु की सेना देखो सीमा पर ललकारती।
बैरी भारत की धरती पर करता कितनी मनमानी।
आज दिखा दो उन दुष्टों को कितना है हममें पानी।
कैसे चुप बैठे हो भाई जननी बाट निहारती॥

उठो शत्रु की सेना देखो सीमा पर ललकारती।
मत भूलो राणा प्रताप को और न झाँसी की रानी।
मत भूलो शमशेर शिवा की तात्या टोपे सेनानी।
बतला दो कैसे भारत की सेना है हुंकारती॥

उठो शत्रु की सेना देखो सीमा पर ललकारती।
शपत तुम्हे तुम्हें है मातृभूमि की अरिदल को जो संघारो।
निश्चित विजय तुम्हारी होगी, हिम्मत को तुम मत हारो।

वह तलवार उठाओ वीरों रिपु का शीश उतारती॥
उठो शत्रु की सेना देखो सीमा पर ललकारती।
भगत सिंह सुखदेव राजगुरु शेखर भी बलिदानी हुए।
मातृभूमि के खातिर ये सब अमर शहीद महान हुए।
भारत के जीवन की ताकत दुश्मन का मद झारती॥

उठो शत्रु की सेना देखो सीमा पर ललकारती।
आओ मिलकर सब करें प्रतिज्ञा माँ का कष्ट मिटायेंगे।
जैसे भी होगा रिपुदल को हम सब मार भगाएंगे।
समय आ गया अब बढ़ने का, बोलो जय जय भारती।

---00---

अक्टूबर

अश्विन: भारतीय ज्ञान परपंरा के अनुसार जीवन के चार उद्देश्य हैं जिन्हें चार पुरुषार्थ कहते हैं। ये पुरुषार्थ हैं धर्म , अर्थ, काम और मोक्ष हैं। धर्म साधन और साध्य दोनों हैं। साधन के रूप में यह अर्थ और काम को संयमित करता है। साध्य के रूप में यह व्यक्तिगत गुणों और कर्तव्यों से जुड़ा है। समस्त प्राणियों को धारण करने वाला धर्म है। अर्थ सांसारिक समृद्धि का द्योतक है। मानवीय कल्पनाएं , इच्छाएं , इंद्रिय सुख काम का संकेत करती हैं। इस तरह से धर्म , अर्थ और काम मानव जीवन के क्रमश: नैतिक , भौतिक और शारीरिक पक्ष के परिचायक हैं। मोक्ष व्यक्ति के जन्म मरण के चक्र से छुटकारा दिलाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मोक्ष का पर्याय मृत्यु है , बल्कि काम और अर्थ को धर्म के माध्यम से नियंत्रित कर अनासक्त भाव संसार में समष्टि के लिए जीना भी मोक्ष है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : (i) दो अक्टूबर-गाँधी जयंती (विश्व अहिंसा दिवस) (ii) लालबहादुर शास्त्री जयन्ती (ii) बीस अक्टूबर वाल्मीकि जयंती (iv) 31 अक्टूबर सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्मतिथि, पर भाषण, वाद-विवाद का आजोजन हो।(v) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

टेलीमेडिसिन क्या है ?

भारत में नगरीय क्षेत्र में प्रति 1457 नागरिकों के लिए एक चिकित्सक तथा गांवों में आस-पास चिकित्सालय तथा चिकित्सक न होने से टेली-मेडिसिन अब एक विकल्प नहीं बल्कि एक आवश्यकता है। लगभग 65 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या में चिकित्सक - रोगी का अनुपात प्रति 25,000 नागरिकों पर एक चिकित्सक (डॉक्टर) है। ऐसे में टेली मेडिसिन की उपयोगिता को समझा जा सकता है। टेली मेडिसिन चिकित्सकों और चिकित्सा संस्थानों द्वारा विभिन्न संचार सुविधाओं इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल माध्यम से अपने रोगियों के स्वास्थ्य की देखभाल प्रदान करते हैं। टेलीमेडिसिन रोगियों के घरों में या अन्य दूरदराज के क्षेत्रों में उनकी देखभाल के लिए हेल्थ केयर प्रदाता के रूप में सामने आता है। दरअसल एक ग्रीक भाषा शब्द है 'टेली', इस शब्द का मतलब होता है 'दूरी' जबकि 'मेडेरी' एक लैटिन शब्द है, जिसका अर्थ 'ठीक करना' होता है। टेलीमेडिसिन को हम हिंदी में दूर चिकित्सा सेवा कहते हैं। दूसरे शब्दों में टेली मेडिसिन का मतलब किसी भी तरह के संचार माध्यम जैसे-फोन या वीडियो कॉल पर चिकित्सक से संपर्क कर अपना इलाज करना है। टेलीमेडिसिन मुख्य रूप से ऐसे पेशेंट के लिए बहुत ही लाभकारी है, जो हास्पिटल में भर्ती न होकर अपनें घरो में आइसोलेट है। इस सुविधा के माध्यम से लॉकडाउन के दौरान घर बैठे संचार माध्यम से सामान्य बीमारियों के संबंध में डॉक्टरों से परामर्श ले कर अपना इलाज हुए हैं।

टेलीमेडिसिन उपयोग की विधियाँ: सामान्य टेलीफोन-मोबाईल, इंटरनेट और उपग्रह आदि का उपयोग किया जाता है। टेली मेडिसिन का उपयोग विभिन्न चिकित्सा क्षेत्रों में किया जाता है, जैसे-कार्डियोलॉजी, रेडियोलॉजी, मनोरोग और ऑन्कोलॉजी आदि। इसके अंतर्गत निदान, उपचार जिसमें चिकित्सक और रोगी शिक्षा शामिल हैं। स्वास्थ्य सेवा प्रदाता रोगियों के बीच वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भी टेलीमेडिसिन का उपयोग करते हैं। टेलीमेडिसिन का उपयोग आर्थिक दृष्टि से भी रोगियों और चिकित्सकों के लिए लाभदायक है। रिमोट मॉनिटरिंग के माध्यम से, टेलीमेडिसिन अनगिनत लोगों को नर्सिंग होम और अस्पतालों में जाने से बचाता है। यह दवा पद्धति रोगी को विशेष सलाह देने की कुंजी है। रोगी अपने घर से काम करते, ऑनलाइन टेलीमेडिसिन सेवा के माध्यम से चिकित्सक से परामर्श कर सकते हैं। इन विशेषताओं का परामर्श दूर से किया जा सकता है।

टेली मेडिसिन का इतिहास: यह परामर्श औषधि पद्धति टेलीफोन के आगमन के साथ प्रारम्भ हुई। 1906 में, एंथोवेन ने पहली बार टेलीफोन लाइनों पर इलेक्ट्रो कार्डियोग्राम (ईकेजी) संचरण के उपयोग की जांच की। 1920 के दशक में, समुद्र में चिकित्सा आपात स्थिति के दौरान सहायता के लिए चिकित्सकों को नाविकों से जोड़ने के लिए जहाज रेडियो का उपयोग किया जाता था। वहीं, 1955 में, नेब्रास्का मनोरोग संस्थान स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए क्लोज-सर्किट टेलीविज़न का उपयोग करने वाली पहली सुविधाओं में से एक था। 1970 के दशक में, सुदूर अलास्का और कनाडाई गाँवों में पैरामेडिक्स उपग्रह के माध्यम से दूर के शहरों के अस्पतालों से जुड़े रहते हुए, आजीवन तकनीक का प्रदर्शन करने में सक्षम थे। आज टेलीमेडिसिन प्रौद्योगिकी प्रगति के साथ तेजी से परिपक्व होने लगी है।

टेलीमेडिसिन लाभ- यह परियोजना एक मापन योग्य (स्केलेबल) प्रायोगिक प्लग और प्ले मॉडल है जो दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाली स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित महिलाओं और बच्चों को सस्ती कीमत पर गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा देखभाल प्रदान करने के लिए तैयार किया गया है। प्रौद्योगिकी और इंटरनेट कनेक्शन के माध्यम से रोगी और परामार्श दाता चिकित्सक अधिकतम दूरी से भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं। परामर्श लेने के लिए यात्रा करना आवश्यक नहीं है। टेलीमेडिसिन व्यक्तिगत देखभाल का यह एक अच्छा उदहारण है जो सबसे महत्वपूर्ण चीज को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। महामारियों में यह पद्धति काफी उपयोगी है। दवा कंपनियों, छोटे दवा दुकानदारों और व्यापारियों के लिए यह एक महत्वपूर्ण डिजिटल प्लेटफार्म सिद्ध हुआ है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी डिजिटलाइजेशन प्रारंभ हुआ है। यही कारण है कि टेलीमेडिसिन के लाभों की खोज निरंतर जारी है। वीडियो कांफ्रेंसिंग चिकित्सक और रोगी के बीच सीधा संचार स्थापित करने में सहायक है। डिजिटल स्वास्थ्य डेटा रोगी और चिकित्सा के बीच गोपनीय रहता है। इस सर्विस के माध्यम से आपको अस्पताल के घंटों लाइन में चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है। टेलीमेडिसिन के माध्यम से आपको

अपना इलाज कराने में लगभग 30 फीसदी खर्च की बचत होगी। डिजिटल स्वास्थ्य मिशन विशेष रूप से ग्रामीण और दुर्गम इलाकों में रहने वाले गरीबों के लिए सुलभ, उपलब्ध और सस्ती है ।

केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल योजनाओं, जैसे- प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन,आयुष्मान भारत जन आरोग्य योजना, आयुष्मान स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र, प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना और आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन-टेलीमेडिसिन एप देश के करोड़ों गरीब लोगों के लिए सस्ती स्वास्थ्य सुविधाओं को सुलभ बनायेगा।

टेलीमेडिसिन से हानियाँ - हालांकि परामर्श के इस रूप का अनुभव कई लोगों के लिए बहुत सकारात्मक है, लेकिन कुछ हानियाँ भी हैं। उनमें से एक है अज्ञात वास्तविकता द्वारा निर्मित अविश्वास। सभी रोगी और चिकित्सकों का इस तकनीक से गहरा परिचय न होना। यह पद्धति डिजिटल डिवाइस के प्रभाव के प्रति उत्तरदाई है। अकुशल और अद्यतन न रहने वाले चिकित्सक इस पद्धति का उपयोग करते समय कई बड़ी गलतियाँ कर सकते हैं। पर्याप्त दूरी रोगी और चिकित्सक के बीच संवेदनात्मक सम्बन्ध नहीं स्थापित कर पाते। हालाँकि टेलीमेडिसिन दिल कादौरा या स्ट्रोक, कट या घाव, या टूटी हुई हड्डियों जैसी आपातकालीन स्थितियों के लिए उपयुक्त नहीं है,क्योंकि इसके लिए एक्स रे-स्प्लिंट्स या कास्ट की आवश्यकता होती है।

भारत में टेली-मेडिसिन प्रौद्योगिकी का भविष्य- केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय एवं प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष विभाग के अनुसार टेली-मेडिसिन प्रौद्योगिकी भारत में भविष्य की स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का मुख्य स्तंभ बनने जा रही है। इसके लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे संस्थान सामने आ रहे हैं। आकस्मिक परिस्थिति में देशभर में लोगों को अस्पतालों में बैड्स, आक्सीजन के साथ- साथ दवाइयों की किल्लत का सामना करना पड़ता है जिसे हम कोरोना काल में देख चुके हैं। ऐसे में टेलीमेडिसिन सेवा घर बैठे ही सामान्य समस्याओं का निदान देती है। टेलीमेडिसिन को लेकर स्वास्थ्य मंत्रालय ने नीति आयोग के साथ मिलकर एक गाइडलाइन जारी की है। इस गाइडलाइन के अनुसार, टेलीमेडिसिन में सिर्फ रजिस्टर्ड डॉक्टर्स ही ऑडियो या वीडियो कॉल, टेक्स्ट मैसेज, ई मेल-के माध्यम से लोगों का इलाज कर सकते हैं।

इसकी प्रमुख गतिविधियों में पहनने योग्य उपकरणों के साथ महिलाओं/बाल-रोगियों की जांच, ई-संजीवनी क्लाउड के माध्यम से स्वास्थ्य डेटा रिकॉर्ड को विश्लेषण के लिए डॉक्टरों के एक पूल में स्थानांतरित करना और समवर्ती रूप से ईएचआर के विकास के लिए कार्य शामिल है। जिन मापदंडों का विश्लेषण किया जाएगा उनमें शामिल हैं: ईसीजी, हृदय गति, रक्तचाप, लिपिड प्रोफाइल, हीमोग्लोबिन आदि।

भारत में उपलब्ध फ्री टेलीमेडिसिन एप - (i) 1mg इस एप को अभी तक 1 करोड़ से अधिक लोगों द्वारा डाउनलोड किया जा चुका है। इस एप के माध्यम से डॉक्टर से ऑनलाइन परामर्श के साथ ही दवाइयों की होम डिलिवरी होती है। **(ii) Aayu -** इस एप को अभी तक लगभग 5 लाख से अधिक लोगो द्वारा डाउनलोड किया जा चुका है। सबसे खास बात यह है, कि इस एप पर 1 हजार से अधिक डॉक्टर हर समय उपलब्ध रहते है। जिसे संपर्क कर आप किसी बीमारी के बारे में परामर्श प्राप्त कर सकते है। **(iii) Mfine -**इस एप की सहायता से आप ऑडियो या वीडियो कॉलिंग के साथ- साथ चैटिंग की सुविधा उपलब्ध है। आपको बता दें, कि यह एप लगभग 10 लाख से अधिक बार डाउनलोड किया जा चुका है। **(iv) Practo** – गूगल प्ले स्टोर से इस एप को-50 लाख से अधिक बार डाउनलोड किया गया है। इस एप परआप 24×7 डॉक्टर्स से अपॉइंटमेंट ले कर उनसे अपना ईलाज करवा सकते हैं। **(v) DocsApp -**इस एप को लगभग 50 लाख से अधिक लोगो द्वारा डाउनलोड किया जा चुका है। इस एप पर आप चिकित्सक की परामर्श शुल्क का भुगतान कर उनसे बात कर सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर-वाणी -

नलिनीदलगतजलमतितरलम्, तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्।
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं, लोक शोकहतं च समस्तम्॥

श्रीमद्भगवतगीता

काम्यानां कर्मणा न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः ।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥

श्री भगवान बोले- कितने ही पण्डित जन तो काम्य कर्मों के त्याग को संन्यास समझते हैं तथा दूसरे विचार कुशल पुरुष सब कर्मों के फल के त्याग को त्याग कहते हैं

त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः ।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥

कई एक विद्वान ऐसा कहते हैं कि कर्ममात्र दोषयुक्त हैं, इसलिए त्यागने के योग्य हैं और दूसरे विद्वान यह कहते हैं कि यज्ञ, दान और तपरूप कर्म त्यागने योग्य नहीं हैं ॥

निश्चयं श्रृणु में तत्र त्यागे भरतसत्तम ।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः ॥

हे पुरुषश्रेष्ठ अर्जुन! संन्यास और त्याग, इन दोनों में से पहले त्याग के विषय में तू मेरा निश्चय सुन । क्योंकि त्याग सात्विक, राजस और तामस भेद से तीन प्रकार का कहा गया है ॥

ज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥

यज्ञ,दान और तपरूप कर्म त्याग करने के योग्य नहीं है, बल्कि वह तो अवश्य कर्तव्य है, क्योंकि यज्ञ, दान और तप -ये तीनों ही कर्म बुद्धिमान पुरुषों को (वह मनुष्य बुद्धिमान है, जो फल और आसक्ति को त्याग कर केवल भगवदर्थ कर्म करता है।) पवित्र करने वाले हैं ॥

एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च ।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥

इसलिए हे पार्थ! इन यज्ञ, दान और तपरूप कर्मों को तथा और भी सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को आसक्ति और फलों का त्याग करके अवश्य करना चाहिए, यह मेरा निश्चय किया हुआ उत्तम मत है ॥

रामचरितमानस

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा। उतरे सेन सहित अति भीरा ॥
सिखर एक उतंग अति देखी। परम रम्य सम सुभ्र बिसेषी ॥

यहाँ श्री रघुवीर सुबेल पर्वत पर सेना की बड़ी भीड़ (बड़े समूह) के साथ उतरे । पर्वत का एक बहुत ऊँचा, परम रमणीय, समतल और विशेष रूप से उज्ज्वल शिखर देखकर-

तहँ तरु किसलय सुमन सुहाए। लछिमन रचि निज हाथ डसाए ॥
ता पर रुचिर मृदुल मृगछाला। तेहिं आसन आसीन कृपाला ॥

वहाँ लक्ष्मणजी ने वृक्षों के कोमल पत्ते और सुंदर फूल अपने हाथों से सजाकर बिछा दिए । उस पर सुंदर और कोमल मृग छाला बिछा दी । उसी आसन पर कृपालु श्री रामजी विराजमान थे ॥

पूरब दिसा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ।
कहत सबहि देखहु ससिहि मृगपति सरिस असंक ॥

पूर्व दिशा की ओर देखकर प्रभु श्री रामजी ने चंद्रमा को उदय हुआ देखा । तब वे सबसे कहने लगे- चंद्रमा को तो देखो । कैसा सिंह के समान निडर है! ॥

पूरब दिसि गिरिगुहा निवासी। परम प्रताप तेज बल रासी ॥
मत्त नाग तम कुंभ बिदारी। ससि केसरी गगन बन चारी ॥

पूर्व दिशा रूपी पर्वत की गुफा में रहने वाला, अत्यंत प्रताप, तेज और बल की राशि यह चंद्रमा रूपी सिंह अंधकार रूपी मतवाले हाथी के मस्तक को विदीर्ण करके आकाश रूपी वन में निर्भय विचर रहा है ॥

बिथुरे नभ मुकुताहल तारा। निसि सुंदरी केर सिंगारा ॥
कह प्रभु ससि महुँ मेचकताई। कहहु काह निज निज मति भाई ॥

आकाश में बिखरे हुए तारे मोतियों के समान हैं, जो रात्रि रूपी सुंदर स्त्री के श्रृंगार हैं। प्रभु ने कहा- भाइयो! चंद्रमा में जो कालापन है, वह क्या है ? अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार कहो ॥

कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । ससि महुँ प्रगट भूमि कै झाँई ॥
मारेउ राहु ससिहि कह कोई । उर महँ परी स्यामता सोई ॥

सुग्रीव ने कहा- हे रघुनाथजी! सुनिए! चंद्रमा में पृथ्वी की छाया दिखाई दे रही है। किसी ने कहा- चंद्रमा को राहु ने मारा था। वही (चोट का) काला दाग हृदय पर पड़ा हुआ है ॥

कोउ कह जब बिधि रति मुख कीन्हा। सार भाग ससि कर हरि लीन्हा ॥
छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं। तेहि मग देखिअ नभ परिछाहीं ॥

कोई कहता है- जब ब्रह्मा ने रति का मुख बनाया, तब उसने चंद्रमा का सार भाग निकाल लिया (जिससे रति का मुख तो परम सुंदर बन गया, परन्तु चंद्रमा के हृदय में छेद हो गया)। वही छेद चंद्रमा के हृदय में वर्तमान है, जिसकी राह से आकाश की काली छाया उसमें दिखाई पड़ती है ॥

प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा। अति प्रिय निज उर दीन्ह बसेरा ॥
बिष संजुत कर निकर पसारी। जारत बिरहवंत नर नारी ॥

प्रभु श्री रामजी ने कहा- विष चंद्रमा का बहुत प्यारा भाई है, इसी से उसने विष को अपने हृदय में स्थान दे रखा है। विषयुक्त अपने किरण समूह को फैलाकर वह वियोगी नर-नारियों को जलाता रहता है ॥

कह हनुमंत सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रिय दास।
तव मूरति बिधु उर बसति सोइ स्यामता अभास ॥

हनुमान्जी ने कहा- हे प्रभो! सुनिए, चंद्रमा आपका प्रिय दास है। आपकी सुंदर श्याम मूर्ति चंद्रमा के हृदय में बसती है, वही श्यामता की झलक चंद्रमा में है ॥

बोध वाक्य: भारत जगत गुरु हैं। विश्व का भावी संगठन भारत पर निर्भर है। भारत एक जीवंत आत्मा है। भारत आध्यात्मिक ज्ञान को विश्व मूर्तिमान कर रहा है। - श्री मां

बोध कथा :

अपने देश को ना भूलें

खगोलशास्त्र के एक प्रसिद्ध विद्वान थे। प्रायः रात में वह चंद्रमा, तारों आदि का अध्ययन करते रहते थे। एक बार वे आकाश की ओर देखते हुए चल रहे थे और साथ में नक्षत्रों का अध्ययन भी कर रहे थे। अचानक चलते-चलते वह एक सूखे कुएं में गिर गये। चोट और दर्द से कराहते हुए वे सहायता की पुकार करने लगे।

कुछ देर बाद वहां से गुजर रहे लोगों ने उनकी आवाज सुनी, तो उन्हें निकाला। दुर्घटना का कारण पूछने पर वह बोले आकाश की ओर देखने में इतना तल्लीन था कि धरती का ध्यान ही नहीं था।

ऐसे ही जो लोग दुनिया भर की चिंता करने में व्यस्त रहते हैं, यदि वे अपने देश की समस्याओं की ओर ध्यान देंगे तो उनका हाल उस विद्वान की तरह नहीं होगा।

मासिक गीत / गान :

अटल चुनौती अखिल विश्व को, भला-बुरा चाहे जो माने,
डटे हुए हैं राष्ट्रधर्म पर विपदाओं में सीना ताने ॥

लाख-लाख पीढ़ियाँ लगीं तब हमने यह संस्कृति उपजाई,
कोटि-कोटि सिर चढ़े तभी इसकी रक्षा संभव हो पाई।
हैं असंख्य तैयार स्वयं मिट इसका जीवन अमर बनाने,
डटे हुए हैं राष्ट्रधर्म पर विपदाओं में सीना ताने ॥

देवों की है स्फूर्ति हृदय में आदरयुक्त पुरखों का चिंतन,
परम्परा अनुपम वीरों की चरम साधकों के चिर साधन।
पीड़ित शोषित दुखित बान्धवों के हमको हैं कष्ट मिटाने,
डटे हुए हैं राष्ट्रधर्म पर विपदाओं में सीना ताने ॥

विश्व विधाता नई सृष्टि की सीधी सच्ची स्पष्ट कहानी,
प्रेम कवच है त्याग अस्त्र है लगन धार आहुति है वाणी।
सभी सुखी हों यही स्वप्न है मरकर भी यह सत्य बनाने,
डटे हुए हैं राष्ट्रधर्म पर विपदाओं में सीना ताने ॥

नहीं विरोधक रोक सकेंगे निंदक होवेंगे अनुगामी,
जन-जन इसकी वृद्धि करेगा इसकी गति न थमेगी थामी।
बस इसकी हुंकार मात्र से दुष्ट लगेंगे आप ठिकाने,
जुटे हुए हैं इसीलिए हम राष्ट्रधर्म को अमर बनाने ॥

---00---

नवंबर

कार्तिक: भारतीय समाज के सारभूत मूल्यों में धर्म सबसे महत्वपूर्ण है और शायद सबसे अधिक गलत भी समझा गया है। यह किसी जाति या धर्म तक सीमित नहीं है, यह अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। इसका प्रयोग धार्मिक कृत्यों , औचित्य , न्याय , नियमबद्धता , रीति रिवाजों का पालन , सामाजिक व्यवस्था को मानना आदि अर्थो में हुआ है। इस तरह धर्म का स्वभाव धार्मिक , नैतिक एवं जीवन मूल्यों से संबंधित है। यह उन सब उद्देश्यों , आदर्शों और नैतिक नियमों की समष्टि है जो व्यक्तित्व के विकास और मनुष्य के सामाजिक चरित्र के निर्माण में सहायक है। धर्म के चार प्रमाण है- श्रुति, स्मृति , सदाचार एवं अपनी आत्मा। श्रुति के अंतर्गत वेद (ब्राह्मण ,आरण्यक और उपनिषद) आते हैं। जो आपौरुषेय माने गए हैं। नैतिक नियमों से संबंधित ग्रन्थ स्मृति कहलाते हैं। सदाचार से तात्पर्य विज्ञान तथा विरक्त व्यक्तियों के आरचरण से होता है। धर्म के दो पक्ष है सामाजिक और व्यैक्तिक ।धर्म को ठीक से समझने के लिए चार वर्ण, चार अवस्था और चार पुरुषार्थ को ठीक से समझना होगा।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : (i) एक नवम्बर-मध्यप्रदेश स्थापना दिवस (ii) 24 नवम्बर गुरु तेगबहादुर शहीदी दिवस (iii) 30 नवम्बर जगदीशचंद्र बोस जन्मतिथि (iv) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

पी.एम.एम.एस.वाई. योजना

केंद्र सरकार द्वारा समय-समय पर किसानों की आय को बढाने का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। उसका कारण है कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि का अहम् योगदान है। इसके लिए सरकार द्वारा किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न प्रकार की योजनाओं का संचालन किया जाता है। वर्तमान में सरकार द्वारा मछली पालन अर्थात जलीय कृषि करने वाले किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। भारत में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकार द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना की शुरुआत की गई है। भारत सरकार ने इस योजना को 'नीली क्रांति' का नाम दिया है। इस योजना के अंतर्गत जलीय कृषि करने वाले किसानो को बैंक ऋण, बीमा आदि अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की जाएँगी। इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए 'प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना', में जाकर ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही एक ऐसी योजना है, जिसके माध्यम से मछली पालन व्यवसाय से जुड़े हुए लोगों की आय में वृद्धि करने के साथ ही उनके जीवन स्तर में सुधार करना है। दरअसल सरकार इस स्कीम के अंतर्गत जलीय कृषि को बढ़ावा देना चाहती है, जिससे जलीय क्षेत्रों में व्यवसाय को एक बड़े पैमानें तक बढ़ाया जा सके। वर्तमान समय में मछलियों का विदेशों में निर्यात से भारत सरकार लगभग 46,589 करोड़ रुपये की आय हो रही है और अब सरकार नें मत्स्य निर्यात पर 1 लाख करोड़ की आय प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

पी.एम.एम.एस.वाई.योजना के अंतर्गत सरकार द्वारा मछली पालन के क्षेत्र में कार्य करनें वाले लोगो को 3 लाख रुपये का ऋण प्रदान किया जायेगा। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के लिए इस बजट में 20,050 करोड़ रुपये का फंड बनाया गया है। इस धनराशि का उपयोग इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के लिए किया जायेगा, जिससे इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

पीएम मत्स्य संपदा योजना का उद्देश्य- केंद्र सरकार द्वारा संचालित पीएमएमएसवाई योजना मछली पालन के क्षेत्र में अब तक की चलायी जाने वाली योजनाओं में सबसे बड़ी योजना है। केंद्र सरकार द्वारा इस योजना को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य देश में मछली पालन की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना है। मत्स्य पालन करने वाले लोगों को जिले स्तर पर विभाग द्वारा निशुल्क प्रशिक्षण दिया जायेगा।

मध्यप्रदेश भी एक ऐसा राज्य है जहां मछलियों की मांग काफी अधिक है। सरकार इस क्षेत्र को और अधिक विकसित करने के साथ ही उन्नत बनाने पर ध्यान दे रही है। ऐसे विद्यार्थी जिनके क्षेत्र में जल स्रोत के व्यवस्था है वे इससे जुड़कर अच्छा रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

मात्स्यिकीय शिक्षा के लिए सर्टिफिकेट कोर्स - देश में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए केंद्र और राज्य सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलायी जा रही है।इसके लिए सरकार द्वारा मत्स्य पालन से सम्बन्धित शिक्षा प्रदान करने के लिए महाविद्यालयों में प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम शुरू करनें पर विचार किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के लाभार्थी-(i) फिशर (ii) मछली किसान (iii) मछली श्रमिक और मछली विक्रेता (iv) मत्स्य विकास निगम(v) स्वयं सहायता समूह (SHG)/संयुक्त देयता समूह (JLGs) में (vi) मछली पालन क्षेत्र (vii) मत्स्य सहकारी समितियाँ (viii) मत्स्य पालन संघ (ix) उद्यमी और निजी फर्म (x) मछली किसान उत्पादक संगठन / कंपनियाँ (xi) एससी / एसटी / महिला / अलग-अलग विकलांग व्यक्ति।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना का लाभ - इस योजना के माध्यम से भारत में मछली पालन करने वाले समुदाय पर पड़ने वाले प्रभाव -(i) इस स्कीम के माध्यम से वर्ष 2018-19 में होने वाले मत्स्य उत्पादन 137.58 लाख मीट्रिक टन को बढाकर 2024-25 तक 220 लाख मीट्रिक टन करने में सहायता मिलेगी। (ii) पीएमएमएसवाई मत्स्य उत्पादन में लगभग 9 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि को बनाए रखनें में मदद मिलेगी। (iii) पीएम मत्स्य संपदा स्कीम के अंतर्गत मछली पालन क्षेत्र के जीवीए के कृषि जीवीए में योगदान को 2018-19 की अपेक्षा 7.28% से बढ़कर वर्ष 2024-25 तक लगभग 9 प्रतिशत करने में मदद मिलेगी। (iv) वर्ष 2018-19 में मत्स्य निर्यात आय 46,589 करोड़ रुपये से बढ़ाकर वर्ष 2024-25 तक लगभग 1 लाख करोड़ रुपये करनें में मदद मिलेगी। (v)

वर्तमान समय में जलीय कृषि में उत्पादकता औसत 3 टन से बढ़ाकर लगभग 5 टन प्रति हेक्टेयर कर देगी। (vi) इस योजना के माध्यम से फसलों के नुकसान को रिपोर्ट किए गए 20-25 प्रतिशत से घटाकर लगभग 10 प्रतिशत कर देगी। (vii) इस स्कीम द्वारा घरेलू मछली की खपत लगभग 5 से 6 किलोग्राम से बढ़ाकर लगभग 12 किलोग्राम प्रति व्यक्ति करने में मदद मिलेगी।

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना हेतु पात्रता - (i) आवेदक को भारत का स्थाई नागरिक होना आवश्यक है। (ii) इस योजना के अंतर्गत देश के सभी मत्स्य पालक और किसान आवेदन कर सकते है। (iii) प्राक्रतिक अपदाओ से पीड़ित लोगो को इस योजना के अंतर्गत लाभ प्रदान किया जायेगा।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना हेतु आवश्यक दस्तावेज -(i) आधार कार्ड (ii) मछली पालन कार्ड (iii) निवास प्रमाण पत्र (iv) मोबाइल नंबर(v) बैंक खाते का विवरण (vi) आवेदक का जाति प्रमाण पत्र।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी:

यावद्वित्तोपार्जनसक्तः,तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे,वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे॥

श्रीमद्भगवतगीता

नियतस्य तु सन्न्यासः कर्मणो नोपपद्यते।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः॥

परन्तु नियत कर्म का स्वरूप से त्याग करना उचित नहीं है। इसलिए मोह के कारण उसका त्याग कर देना तामस त्याग कहा गया है॥

दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत्।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत्॥

जो कुछ कर्म है, वह सब दुःखरूप ही है, ऐसा समझकर यदि कोई शारीरिक क्लेश के भय से कर्तव्य-कर्मों का त्याग कर दे, तो वह ऐसा राजस त्याग करके त्याग के फल को किसी प्रकार भी नहीं पाता॥

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः॥

हे अर्जुन! जो शास्त्रविहित कर्म करना कर्तव्य है, इसी भाव से आसक्ति और फल का त्याग करके किया जाता है, वही सात्त्विक त्याग माना गया है॥

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः॥

जो मनुष्य अकुशल कर्म से तो द्वेष नहीं करता और कुशल कर्म में आसक्त नहीं होता, वह शुद्ध सत्त्वगुण से युक्त पुरुष संशयरहित, बुद्धिमान और सच्चा त्यागी है॥

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते॥

क्योंकि शरीरधारी किसी भी मनुष्य द्वारा सम्पूर्णता से सब कर्मों का त्याग किया जाना शक्य नहीं है, इसलिए जो कर्मफल त्यागी है, वही त्यागी है, यह कहा जाता है॥

रामचरितमानस

पवन तनय के बचन सुनि बिहँसे रामु सुजान।
दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु बोले कृपा निधान॥

पवनपुत्र हनुमान्‌जी के वचन सुनकर सुजान श्री रामजी हँसे , फिर दक्षिण की ओर देखकर कृपानिधान प्रभु बोले-॥

देखु बिभीषन दच्छिन आसा। घन घमंड दामिनी बिलासा॥

मधुर मधुर गरजइ घन घोरा। होइ बृष्टि जनि उपल कठोरा॥

हे विभीषण ! दक्षिण दिशा की ओर देखो, बादल कैसा घुमड़ रहा है और बिजली चमक रही है। भयानक बादल मीठे-मीठे स्वर से गरज रहा है। कहीं कठोर ओलों की वर्षा न हो!

कहत बिभीषन सुनहू कृपाला। होइ न तड़ित न बारिद माला॥

लंका सिखर उपर आगारा। तहँ दसकंधर देख अखारा॥

विभीषण बोले- हे कृपालु ! सुनिए, यह न तो बिजली है, न बादलों की घटा। लंका की चोटी पर एक महल है। दशग्रीव रावण वहाँ (नाच-गान का) अखाड़ा देख रहा है॥

छत्र मेघडंबर सिर धारी। सोइ जनु जलद घटा अति कारी॥

मंदोदरी श्रवन ताटंका। सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका॥

रावण ने सिर पर मेघ डंबर (बादलों के डंबर जैसा विशाल और काला) छत्र धारण कर रखा है। वही मानो बादलों की काली घटा है। मंदोदरी के कानों में जो कर्णफूल हिल रहे हैं, हे प्रभो! वही मानो बिजली चमक रही है॥

बाजहिं ताल मृदंग अनूपा। सोइ रव मधुर सुनहू सुरभूपा।

प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना। चाप चढ़ाव बान संधाना॥

हे देवताओं के सम्राट! सुनिए, अनुपम ताल मृदंग बज रहे हैं। वही मधुर (गर्जन) ध्वनि है। रावण का अभिमान समझकर प्रभु मुस्कुराए। उन्होंने धनुष चढ़ाकर उस पर बाण का सन्धान किया॥

छत्र मुकुट तांटक तब हते एकहीं बान।

सब कें देखत महि परे मरमु न कोऊ जान॥

और एक ही बाण से (रावण के) छत्र-मुकुट और (मंदोदरी के) कर्णफूल काट गिराए। सबके देखते-देखते वे जमीन पर आ पड़े, पर इसका भेद (कारण) किसी ने नहीं जाना॥

कंप न भूमि न मरुत बिसेषा। अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा।

सोचहिं सब निज हृदय मझारी। असगुन भयउ भयंकर भारी॥

न भूकम्प हुआ, न बहुत जोर की हवा (आँधी) चली। न कोई अस्त्र-शस्त्र ही नेत्रों से देखे। (फिर ये छत्र, मुकुट और कर्णफूल जैसे कटकर गिर पड़े?) सभी अपने-अपने हृदय में सोच रहे हैं कि यह बड़ा भयंकर अपशकुन हुआ !॥

अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान।

मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान॥

शिव जिनका अहंकार हैं, ब्रह्मा बुद्धि हैं, चंद्रमा मन हैं और महान (विष्णु) ही चित्त हैं। उन्हीं चराचर रूप भगवान श्री रामजी ने मनुष्य रूप में निवास किया है॥

अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ।

प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ॥

हे प्राणपति सुनिए, ऐसा विचार कर प्रभु से वैर छोड़कर श्री रघुवीर के चरणों में प्रेम कीजिए, जिससे मेरा सुहाग न जाए॥

फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद।

मूरुख हृदयँ न चेत जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम॥

यद्यपि बादल अमृत सा जल बरसाते हैं तो भी बेत फूलता-फलता नहीं। इसी प्रकार चाहे ब्रह्मा के समान भी ज्ञानी गुरु मिलें, तो भी मूर्ख के हृदय में चेत (ज्ञान) नहीं होता॥

बोधवाक्य: "जिंदगी लम्बी नहीं होनी चाहिए। आखिर बूढ़ा होकर मौत का इन्तजार क्यों किया जाए? अच्छा यही है कि जवानी में ही मातृभूमि के लिए कुछ करते हुए बलिदान हो जाया जाए।"- शहीद ऊधम सिंह

बोध कथा:

बालपन के संस्कारों का महत्व

एक राजा के दरबार में पक्षी बेचने वाला व्यापारी आया। उसके पास देश-विदेश के बहुमूल्य पक्षी थे। उनमें से दो तोते बहुत बुद्धिमान थे। व्यापारी ने बताया कि यह दोनों जो भी सुनते हैं उसे शीघ्र ही याद कर लेते हैं। राजा ने दोनों तोते खरीद लिए। एक उसने अपने द्वारपाल को तथा दूसरा अपने पुरोहित को दे दिया।

कुछ समय बाद राजा को उन दोनों तोतों की याद आयी। उसने उन्हें मंगवाया तो बहुत आश्चर्य हुआ। एक तोता सुंदर श्लोक और हरीनाम बोल रहा था, जबकि दूसरा तोता गंदी गालियां बक रहा था।

राजा ने पहले तोते से इसका कारण पूछा। उसने बताया कि मैं पुरोहित जी के घर पर रहा, वे अपने पास आने वालों को अच्छे श्लोक और भगवान की कथा सुनाते थे। इस कारण में भी वही सब सीख गया। मेरे साथी को आपने द्वारपाल को दिया था। वहां आने वालों से सदा गाली गलौज से बात करता था, इसलिए उसे वही चीजें याद हो गयी। यह दोष मेरे साथी तोते का नहीं, अपितु उस द्वारपाल का है, जिसके पास उसे रखा गया था।

स्पष्ट है कि संस्कारों का बहुत महत्व होता है जो बात बचपन में मन मस्तिष्क में बैठा दी जाए वह लंबे समय तक याद रहती है। इसीलिए बच्चों को सही इतिहास ही पढ़ाया जाना चाहिए।

मासिक गीत / गान :

आओ फिर से दिया जलाएँ
भरी दुपहरी में अँधियारा सूरज परछाई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें-बुझी हुई बाती सुलगाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ

हम पड़ाव को समझे मंज़िल लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्त्तमान के मोह जाल में-आने वाला कल न भुलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा अपनों को विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने-नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

--00--

दिसंबर

अगहन : आश्रम व्यवस्था धर्म के व्यैक्तिक पक्ष से जुड़ी है। यह व्यक्ति की आवश्यकताओं और अकांक्षाओं पर आधारित है। आश्रम का शाब्दिक अर्थ है रुकने का स्थान या करने की स्थिति। आश्रम जीवन यात्रा में वे विश्राम स्थल हैं जहां रुककर व्यक्ति अगली यात्रा के लिए अपने को तैयार करता है। यह आश्रम चार हैं। ब्रह्मचर्य , गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम। ब्रह्मचर्य आश्रम व्यक्ति के जीवन का पहला आश्रम है। इसमें अनुशासन और बौद्धिक आवश्यकता पर जोर दिया जाता है। इसके अंतर्गत तपस्या के साथ अर्जित विद्या ,विद्यार्थी के बौद्धिक तथा नैतिक उन्नयन में सहायक होती है। गृहस्थ आश्रम विवाह संस्कार के बाद प्रारंभ होता है। इसका उद्देश्य मानव जाति का संरक्षण हैं। इसी आश्रम में संतान उत्पन्न कर पितृ ऋण से उऋण होता है। धर्म, अर्थ, काम ये तीन पुरुषार्थ इसी से जुड़े हैं। वानप्रस्थ आश्रम जीवन की तीसरी अवस्था है। प्राय: यह माना जाता है कि इस आश्रम में व्यक्ति जंगल को

चला जाता है किंतु आज यह वह सत्य नहीं है जो कभी माना जाता था। आज मनुष्य जीवन की आसक्तियों से क्रमश: निवृत्त होते हुए जीवन को समाज के लिए अर्पित करना ही वानप्रस्थ आश्रम है। संन्यास आश्रम जीवन के अंतिम चतुर्थांश को कहा जाता है। इसे संन्यास अवस्था भी कहते हैं। जिसमें मनुष्य अपनी समस्त एष् णाओं को जीतकर बृहम् के चिंतन में मगन रहता है। इसे ही जीवन की उच्च्तर अवस्था यानी आध्यात्मिक अवस्था कहते हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : (i) औपचारिक पहनावा एवं हमारा व्यक्तित्व (ii) 25 दिसम्बर-सुशासन दिवस (ii) 22 दिसम्बर 1887 गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम (iv) टंट्या भील, चार दिसंबर-बलिदान दिवस। (v) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

अनुवाद

अनुवाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत अनुवाद पर पृथक से विचार कर उसके लिए अलग संस्थान बनाया जा रहा है। किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है। संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का उपयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात के दुहराए जाने, पुन: कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, आवृति जैसे कई संदर्भों में भाष्य के रूप में किया गया है। संस्कृत के 'वद्' धातु से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वद्' का अर्थ है बोलना। 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका अर्थ है- 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। 'वाद' में 'अनु' शब्द उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' बना है, जिसका अर्थ है, प्राप्त कथन को पुन: कहना।

अनुवाद का अपना इतिहास है। अनुवाद असाधारण रूप से कठिन और आह्वानात्मक कार्य माना जाता है। यह एक जटिल, कृत्रिम, आवश्यकता-जनित और एक दृष्टि से पुन: सर्जनात्मक की प्रक्रिया है, जिसमें असाधारण और विशिष्ट कोटि की प्रतिभा की आवश्यकता होती है। यह इसकी अपनी प्रकृति है। अनुवाद इसीलिए कठिन है कि वह मौलिक लेखन नहीं-पहले कही गई बात को ही दुबारा कहना होता है, जिसमें अनेक नियन्त्रणों और बन्धनों का पालन करना आवश्यक हो जाता है। अनुवाद के बारे में कई नकारात्मक विचार हैं-(क)सम्पूर्ण अनुवाद कार्य केवल एक असमाधेय समस्या का समाधान खोजने के लिए किया गया प्रयास मात्र है। (ख) किसी कृति का अनुवाद उसके दोषों को बढ़ा देता है और उसके गुणों को विद्रूप कर देता है। (ग) कला की एक विधा के रूप में अनुवाद कभी सफल नहीं हो सकते। (घ) अनुवादक वंचक होते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि अनुवाद का महत्व कम है। अनुवाद बहुलांश साहित्यिक रचनाएँ होती थीं, जिनका अनुवाद रचनाओं की साहित्यिक प्रकृति की सीमाओं के कारण पाठक की आशा के अनुरूप नहीं हो पाता था। साथ ही यह भी धारणा थी कि रचना की भाषा के प्रत्येक अंश का अनुवाद अपेक्षित है, जिससे मूल संवेदना का कोई अंश छूट न पाए। प्राचीन युग में मुख्यत: तीन प्रकार की रचनाओँ के अनुवाद प्राप्त होते हैं। क्योंकि इन तीन क्षेत्रों में ही प्राय: ग्रन्थों की रचना होती थी। वे क्षेत्र हैं - साहित्य, दर्शन और धर्म। साहित्यिक रचनाओं में ग्रीक के इलियड और ओडिसी के रामायण और महाभारत ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनका व्यापक स्तर अनुवाद हुआ। दार्शनिक रचनाओं में प्लेटो के संवाद, अनुवाद की दृष्टि से लोकप्रिय हुए। धार्मिक रचनाओं में बाइबिल के सबसे अधिक अनुवाद पाए जाते हैं।

यह स्थिति स्थूल रूप से उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक रही है जिसमें अनुवाद मुख्य रूप से व्यक्तिगत रुचि से प्रेरित अधिक था, सामाजिक आवश्यकता से प्रेरित कम। दूसरे विश्वयुद्ध के पश्चात् साम्राज्यवाद के खण्डित होने के फलस्वरूप अनेक छोटे-बड़े राष्ट्र स्वतन्त्र हुए। संघीय गणराज्यों के घटक भी अपनी अस्मिता के विषय में सचेत होने लगे। इस संपर्क -स्थापना तथा अस्मिता-विकास की स्थिति में भाषा का स्थान केन्द्र में आया, जो बहुभाषिकता की स्थिति के रूप में दिखाई पड़ता है। इसमें अनुवाद अवश्यम्भावी हुआ और अनुवाद एक सामाजिक एवं राजनीतिक आवश्यकता बन गया है। विविध प्रकार के लेखनों / वार्ताओं / भाषाणों के अनुवाद होने लगे। यहाँ से अनुवाद कार्य एक व्यवसाय के रूप में सामने आया। अनुवाद पाठ्यसामग्री सामने आई। अनुवादकों को प्रशिक्षित करने के संस्थान बनें, जिनमें अल्पकालीन और पूर्ण सत्रीय पाठ्यक्रमों और कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया जाने लगा। इसका यह भी परिणाम हुआ कि एक ओर तो अनुवाद के प्रति दृष्टिकोण बदला तथा दूसरी ओर ज्ञानात्मक दृष्टि से अनुवाद सिद्धान्त के विकास को बल मिला तथा अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए अनुवाद सिद्धान्त की आवश्यकता को स्वीकार किया गया। फलस्वरूप, अनुवाद सिद्धान्त एक अपेक्षाकृत स्वतन्त्र ज्ञान शाखा बन गया, जिसकी जानकारी अनुवादक, अनुवाद शिक्षक, और अनुवाद समीक्षक, तीनों के लिए उपादेय हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 ने इसे विशेष महत्व दिया है।

वास्तव में अनुवाद भाषा के सप्तरंगी रूप की पहचान होती है। अनुवाद के लिए हिंदी में 'उल्था' का प्रचलन भी है। अँग्रेजी में TRANSLATION के साथ ही TRANSCRIPTION का प्रचलन भी है, जिसे हिन्दी में लिप्यान्तरण कहा जाता है। अनुवाद और लिप्यन्तरण का अन्तर इस उदाहरण से स्पष्ट है। 'अनुवाद' में हिन्दी वाक्य को अँग्रेजी में प्रस्तुत किया जाता है जबकि लिप्यन्तरण में नागरी लिपि में लिखी गयी बात को रोमन लिपि में लिख दिया गया है। अनुवाद के लिए 'भाषान्तर' और 'रूपान्तर' का प्रयोग भी किया जाता रहा है। लेकिन अब इन दोनों ही शङ्घ दों के नए अर्थ और उपयोग प्रचलित हैं। 'भाषान्तर' और 'रूपान्तर' का प्रयोग 'भाषान्तर' और 'रूपान्तर' का प्रयोग अँग्रेजी के INTERPRETATION शब्द के पर्याय-स्वरूप होता है, जिसका अर्थ है दो व्यक्तियों के बीच भाषिक सम्पर्क स्थापित करना। असमिया और गुजराती के बीच की भाषिक दूरी को भाषान्तरण के द्वारा ही दूर किया जाता है। 'रूपान्तर' शब्द इन दिनों प्रायः किसी एक विधा की रचना की अन्य विधा में प्रस्तुति के लिए प्रयुक्त है।

किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत् प्रस्तुत करना अनुवाद है। इस विशेष अर्थ में ही 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय सुनिश्चित है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है, वह मूलभाषा या स्रोतभाषा है। उससे जिस नई भाषा में अनुवाद करना है, वह 'प्रस्तुत भाषा' या 'लक्ष्य भाषा' है। इस तरह, स्रोत भाषा में प्रस्तुत भाव या विचार को बिना किसी परिवर्तन के लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करना ही 'अनुवाद' है। 'अनुवाद' का कार्य स्रोतभाषा के पाठ को अर्थपूर्ण रूप से लक्ष्यभाषा में अनूदित करता है। अनुवाद का कार्य अन्ततोगत्वा एक ही व्यक्ति करता है। एकाकी अनुवाद में तो अनुवादक अकेला होता ही है, सहयोगात्मक अनुवाद में भी, अन्तिम भाग में, सम्पादन का काम अनुवादक को अकेले करना होता है। अत: अनुवादक के साथ अनेक दायित्व जुड़ जाते हैं और कार्य के सफल निष्पादन में उससे अनेक अपेक्षाएँ रहती हैं। भाषा ज्ञान, विषय ज्ञान, अभिव्यक्ति कौशल, भाव को समझने की सामथ्र्य जैसे व्यक्तिगत गुण आदि। एक अच्छा अनुवादक में आवश्यक है कि- (अ) उसे स्रोत भाषा (जिससे अनुवाद करना है) के लिखित एवं वाचिक दोनों रूपों का अच्छा ज्ञान हो। (ब) उसे लक्ष्य भाषा (जिसमें अनुवाद करना है) के लिखित रूप का अच्छा ज्ञान हो, (स) उसे जिस पाठ या विषय या काव्य अनुवाद करना है उसके शब्द सामर्थ्य , भाव और सन्दर्भ का गहराई से अध्ययन हो।

अनुवादक एवं इण्टरप्रेटर- अनुवाद एक लिखित विधा है, जिसके लिए शब्दकोश, सन्दर्भ ग्रन्थ, विषय की समझ या भावाभिव्यक्ति की क्षमता होनी चाहिए। इसकी कोई समय सीमा नहीं होती। अपनी इच्छानुसार अनुवादक इसे कई बार भाव, विचार और अर्थ की दृष्टि से परिवर्तित कर सकता है। इण्टरप्रिटेशन यानी भाषान्तरण एक भाषा का दूसरी भाषा में मौखिक रूपान्तरण है। इसे करने वाला इण्टरप्रेटर कहलाता है। इण्टरप्रेटर का काम तात्कालिक है। वह किसी भाषा को सुनकर, समझ कर दूसरी भाषा में तुरन्त उसका मौखिक तौर पर रूपान्तरण करता है। इसे मूल भाषा के साथ मौखिक तौर पर आधा मिनट पीछे रहते हुए किया जाता है। बहुत कुछ यान्त्रिक ढँग का भी होता है।

अनुवाद सिद्धान्त के आधुनिक सन्दर्भ की मूल विशेषता है, इसकी बहुपक्षीयता। यह किसी एकान्वित पृष्ठभूमि पर आधारित न होकर अनेक परन्तु परस्पर सम्बद्ध शास्त्रों की समन्वित पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिनके प्रसङ्गोचित अंशों से वह पृष्ठभूमि निर्मित है। मुख्य शास्त्र हैं-पाठ संकेत विज्ञान, सम्प्रेषण सिद्धान्त, भाषा प्रयोग सिद्धान्त, और तुलनात्मक अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान। यह स्पष्ट करना भी उचित होगा कि एक ओर मानव अनुवाद तथा यान्त्रिक अनुवाद, तथा दूसरी ओर लिखित अनुवाद और मौखिक अनुवाद के व्यावहारिक महत्व के कारण इनके सैद्धान्तिक पक्ष के विषय में भी चिन्तन आरम्भ होने लगा है। तथापि मानवकृत लिखित माध्यम के अनुवाद की ही परिणामगत तथा गुणात्मक प्रधानता मानी जाती रही है तथा इनसे सम्बंधित सैद्धान्तिक चिन्तन के मुद्दे विशेष रूप से प्रासंगिक हैं।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में अनुवाद चिन्तन की परंपरा सीमित साधन के बाद भी उत्कृष्ट थी। भाषाओं के संपर्क और मनुष्य के संबंधों के विस्तार के साथ ही अनुवाद सिद्धान्त का एक विकासमान आयाम सामने आया। और अनुसन्धान की प्रवृत्ति बढ़ी। अनुवाद सिद्धान्त की बहुविद्यापरक प्रकृति के कारण विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ-भाषा विज्ञानी, समाज शास्त्री, मनोविज्ञानी, शिक्षाविद्, नृतत्व विज्ञानी, सूचना सिद्धान्त विशेषज्ञ-परस्पर सहयोग के साथ अनुवाद के सैद्धान्तिक अंशों पर शोधकार्य में रुचि लेने लगे। अनुवाद कार्य का क्षेत्र बढ़ता गया। अलग-अलग जीवन शैली के लोगों में संपर्क बढ़ा - लोग विदेशों में शिक्षा के लिए जाते, व्यापारिक-औद्योगिक संगठन विभिन्न देशों में काम करते, विभिन्न भाषा-भाषी लोग सम्मेलनों में एक साथ बैठकर विमर्श करते, राष्ट्रों के मध्य राजनयिक अनुबन्ध होने लगे। इन सभी में अनुवाद की अनिवार्य रूप से आवश्यकता प्रतीत हुई और अनुवाद की विशिष्ट समस्याएँ उभरने लगी। इन समस्याओं का अध्ययन अनुवाद सम्बन्धी अनुसन्धान का उर्वर क्षेत्र बना। एक ओर भाषा और संस्कृति तथा दूसरी ओर भाषा और विचार के मध्य सम्बन्ध पर अनुवाद द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर नया चिन्तन सामने आया।

मशीन अनुवाद तथा मौखिक अनुवाद के क्षेत्रों में नई-नई संभावनाएं सामने आने लगी, जिसने इन क्षेत्रों में अनुवाद अनुसन्धान को गति प्रदान की। मानव अनुवाद तथा लिखित अनुवाद के परंपरागत क्षेत्रों पर भी भाषा अध्ययन की नई दृष्टियों ने विशेषज्ञों को नूतन पद्धति से विचार करने के लिए प्रेरित किया। इन सब प्रवृत्तियों से अनुवाद सिद्धान्त को प्रतिष्ठा का पद मिलने लगा और इसे सैद्धान्तिक शोध के एक उपयुक्त क्षेत्र के रूप में स्वीकृति प्राप्त होने लगी। सन् 1961 में राजभाषा विधायी आयोग की स्थापना हुई। इसका काम अखिल भारतीय मानक विधि शब्दावली तैयार करना था। 1970 में विधि शब्दावली का प्रकाशन हुआ। इसका परिवर्धन होता आ रहा। इसका नवीन संस्करण 1984 में निकला। इस आयोग ने कानून सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों का अनुवाद किया। आज कई न्यायालयों में न्यायाधीश हिन्दी में भी निर्णय देने लगे है। अभी एक न्यायाधीश ने संस्कृत में न्यायालय का निर्णय दिया।

आधुनिक युग में अनुवाद के माध्यम से प्राचीन युग के ये महान ग्रन्थ अब विभिन्न भाषा-भाषियों को उपलब्ध् होने लगे हैं। अनुवाद तकनीक की दृष्टि से इन अनुवादों की विशेषता यह है कि, प्राचीन युग में ये अनुवाद विशेष रूप से एकपक्षीय रूप में होते थे अर्थात् जिस भाषा में अनुवाद किए जाते थे (लक्ष्यभाषा) उनसे उनकी किसी रचना का मूल ग्रन्थ भाषा (मूलभाषा या स्रोत भाषा) में अनुवाद नहीं होता था। इसका कारण यह कि मूल ग्रन्थों की तुलना में लक्ष्य भाषा के ग्रन्थ प्राय: उतने उत्कृष्ट नहीं होते थे, दूसरी बात यह कि मूल ग्रथों की भाषा के प्रति अत्यन्त आदर भावना के कारण लक्ष्य भाषा के रूप में प्रयोग में लाना सम्भवत: अनुचित समझा जाता था।

आधुनिक युग में अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। उपर्युक्त तीन के अतिरिक्त विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, प्रशासन, कूटिनीति, विधि, जनसंपर्क तथा अन्य अनेक क्षेत्रों के ग्रन्थों और रचनाओं का अनवाद भी होने लगा है। प्राचीन युग के अनुवादों की तुलना में आधुनिक युग के अनुवाद द्विपक्षीय (बहुपक्षीय) रूप में होते हैं। आधुनिक युग में अनुवाद का आर्थिक और राजनीतिक महत्व भी प्रतिष्ठित हो गया है। विभिन्न राष्ट्रों के मध्य राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अनुबन्धों के प्रपत्र के द्विभाषिक पाठ तैयार किए जाते हैं। बहुराष्ट्रीय संस्थाओं को एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करना पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र में प्रत्येक कार्य पाँच या छ: भाषाओं में किया जाता है। इन सब में अनिवार्य रूप से अनुवाद की आवश्यकता होती है। आधुनिक युग में हुई औद्योगिक, प्रौद्योगिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रान्ति के फलस्वरूप विश्व के राष्ट्रों में एक-दूसरे के निकट संपर्क की आवश्यकता की चेतना का अतीव शीघ्र विकास हुआ, उसके कारण अनुवाद को यह महत्व मिलना स्वाभाविक माना जाता है। यही कारण है कि यदि प्राचीन युग की प्रेरक शक्ति अनुवादक की व्यक्तिगत रुचि अधिक थी, तो आधुनिक युग में अनुवाद की सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक आवश्यकता एक प्रबल प्रेरक शक्ति बनकर सामने आई है।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी:

यावत्पवनो निवसति देहे,तावत् पृच्छति कुशलं गेहे।
गतवति वायौ देहापाये,भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये॥६॥

श्रीमद्भगवतगीता

अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मण: फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु सन्न्यासिनां क्वचित्॥

कर्मफल का त्याग न करने वाले मनुष्यों के कर्मों का तो अच्छा, बुरा और मिला हुआ- ऐसे तीन प्रकार का फल मरने के पश्चात अवश्य होता है, किन्तु कर्मफल का त्याग कर देने वाले मनुष्यों के कर्मों का फल किसी काल में भी नहीं होता॥

पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे।
साङ्ख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम्॥

हे महाबाहो! सम्पूर्ण कर्मों की सिद्धि के ये पाँच हेतु कर्मों का अंत करने के लिए उपाय बतलाने वाले सांख्य-शास्त्र में कहे गए हैं, उनको तू मुझसे भलीभाँति जान॥

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥

इस विषय में अर्थात कर्मों की सिद्धि में अधिष्ठान (जिसके आश्रय कर्म किए जाएँ, उसका नाम अधिष्ठान है) और कर्ता तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के करण एवं नाना प्रकार की अलग-अलग चेष्टाएँ और वैसे ही पाँचवाँ हेतु दैव है ॥

शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः ।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः॥

मनुष्य मन, वाणी और शरीर से शास्त्रानुकूल अथवा विपरीत जो कुछ भी कर्म करता है- उसके ये पाँचों कारण हैं ॥

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः ।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥

परन्तु ऐसा होने पर भी जो मनुष्य अशुद्ध बुद्धि होने के कारण उस विषय में यानी कर्मों के होने में केवल शुद्ध स्वरूप आत्मा को कर्ता समझता है, वह मलीन बुद्धि वाला अज्ञानी यथार्थ नहीं समझता ॥

रामचरितमानस

इहाँ प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बोलाई ॥
कहहु बेगि का करिअ उपाई । जामवंत कह पद सिरु नाई ॥

यहाँ (सुबेल पर्वत पर) प्रातःकाल श्री रघुनाथ जी जागे और उन्होंने सब मंत्रियों को बुलाकर सलाह पूछी कि शीघ्र बताइए, अब क्या उपाय करना चाहिए? जाम्बवान् ने श्री रामजी के चरणों में सिर नवाकर कहा-॥

सुनु सर्बग्य सकल उर बासी । बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ॥
मंत्र कहउँ निज मति अनुसारा । दूत पठाइअ बालि कुमारा ॥

हे सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाले)! हे सबके हृदय में बसने वाले (अंतर्यामी)! हे बुद्धि, बल, तेज, धर्म और गुणों की राशि ! सुनिए! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार सलाह देता हूँ कि बालिकुमार अंगद को दूत बनाकर भेजा जाए!॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई ॥
प्रभु प्रताप उर सहज असंका । रन बाँकुरा बालिसुत बंका ॥

चरणों की वंदना करके और भगवान् की प्रभुता हृदय में धरकर अंगद सबको सिर नवाकर चले । प्रभु के प्रताप को हृदय में धारण किए हुए रणबाँकुरे वीर बालिपुत्र स्वाभाविक ही निर्भय हैं ॥

गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज ।
सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज ॥

श्री रामजी के चरण कमलों का स्मरण करके अंगद रावण की सभा के द्वार पर गए और वे धीर, वीर और बल की राशि अंगद सिंह की सी ऐंड़ (शान) से इधर-उधर देखने लगे ॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर। मैं रघुबीर दूत दसकंधर ॥
मम जनकहि तोहि रही मिताई। तव हित कारन आयउँ भाई ॥

रावण ने कहा- अरे बंदर! तू कौन है? (अंगद ने कहा-) हे दशग्रीव! मैं श्री रघुवीर का दूत हूँ । मेरे पिता से और तुमसे मित्रता थी, इसलिए हे भाई! मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही आया हूँ ॥

उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती । सिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती ॥
बर पायहु कीन्हेहु सब काजा । जीतेहु लोकपाल सब राजा ॥

तुम्हारा उत्तम कुल है, पुलस्त्य ऋषि के तुम पौत्र हो । शिवजी की और ब्रह्माजी की तुमने बहुत प्रकार से पूजा की है । उनसे वर पाए हैं और सब काम सिद्ध किए हैं । लोकपालों और सब राजाओं को तुमने जीत लिया है ॥

नृप अभिमान मोह बस किंबा। हरि आनिहु सीता जगदंबा॥
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा॥

राजमद से या मोहवश तुम जगज्जननी सीताजी को हर लाए हो। अब तुम मेरे शुभ वचन (मेरी हितभरी सलाह) सुनो! (उसके अनुसार चलने से) प्रभु श्री रामजी तुम्हारे सब अपराध क्षमा कर देंगे॥

दसन गहहु तृन कंठ कुठारी। परिजन सहित संग निज नारी॥
सादर जनकसुता करि आगें। एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागें॥

दाँतों में तिनका दबाओ, गले में कुल्हाड़ी डालो और कुटुम्बियों सहित अपनी स्त्रियों को साथ लेकर, आदरपूर्वक जानकीजी को आगे करके, इस प्रकार सब भय छोड़कर चलो-॥

जरहिं पतंग मोह बस भार बहहिं खर बृंद।
ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद॥

अरे मंद बुद्धि! समझकर देख। पतंगे मोहवश आग में जल मरते हैं, गदहों के झुंड बोझ लादकर चलते हैं, पर इस कारण वे शूरवीर नहीं कहलाते॥

सदा रोगबस संतत क्रोधी। बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी॥
तनु पोषक निंदक अघ खानी जीवत सव सम चौदह प्रानी॥

नित्य का रोगी, निरंतर क्रोध युक्त रहने वाला, भगवान् विष्णु से विमुख, वेद और संतों का विरोधी, अपना ही शरीर पोषण करने वाला, पराई निंदा करने वाला और पाप की खान (महान् पापी)- ये चौदह प्राणी जीते ही मुरदे के समान हैं॥

बोधवाक्य: जो स्वात्मानन्द में मगन रहता है, वह परमहंस है। अर्थात् जो नीर-क्षीर के विवेक से ऊपर हो चुका हो। जिसने नीर-क्षीर के अस्तित्व से ऊपर उठकर परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया हो जिसके अन्दर जगत्, ब्रह्म, जीव, माया सभी एकाकार हो चुके हों, वह परमहंस है। - वेद व्यास

बोध कथा :

संकटों का भी स्वागत

जीवन में कार्य करने वालों को अनेक बाधाओं और संकटों का सामना करना पड़ता है। लोग तरह-तरह से उन्हें परेशान करते हैं , पर जिसके मन में अपने लक्ष्य के प्रति अविचल श्रद्धा रहती है, वह इन सब पर विजय पाकर सफल होता है।

संत तुकाराम जी हर समय भगवान के ध्यान में डूबे रहते थे। लोग इस कारण उनकी बहुत निंदा करते थे और उनके रास्ते पर कांटे बिखेर देते थे। उनकी झगड़ालू पत्नी भी उन्हें गालियां देती रहती थी। उनकी दुकान चौपट हो गयीं; पर तुकाराम जी विचलित नहीं हुए। वे इन संकटों के लिए भी ईश्वर को धन्यवाद ही देते थे। ऐसा कहते हैं कि उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर ईश्वर ने उनके लिए विमान भेजा और वे सशरीर स्वर्ग चले गए।

मासिक गीत / गान :

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन
हम तो रमते राम हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वेतन ?
अब तक इतनी यों ही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी
कौन बनाए आज घरौंदा हाथों चुन-चुन कंकड़ माटी
ठाट फकीराना है अपना वाघांबर सोहे अपने तन?

देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मज़े के
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शोणित-उद्वेलन!

हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या खाक बनाएँगे घर
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर
हम क्यों सने ईंट-गारे में हम क्यों बने व्यर्थ में बेमन?

ठहरे अगर किसी के दर पर कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जो देखा कोई घर

--00--

जनवरी

पौष: उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक तथा पश्चिम में कांधार, कच्छ-सौराष्ट्र से लेकर पूर्व में अरुणाञ्चल, मिजोरम तथा पूर्वाञ्चल, रुक्मणी की हरित क्रीड़ाभूमि तक; राम, कृष्ण, भरत की यह कर्मभूमि 'भारत' आखिर पुण्यभूमि ऐसे ही नहीं कह दी गयी है। यह देवदुर्लभ भूमि अपने इतिहास में अवतारी पुरुषों के, ऋषियों के, संत-महात्माओं के गौरवशाली अतीत के स्वप्नों को सजोएं है। यह भारत भूमि संतों की, वीरों की, कवियों की, क्रान्तिकारियों की, कर्मयोगियों की, राजनीतिक महापुरुषों की, समाज सुधारकों की कर्मस्थली है।आज हमें भी अपने महापुरुषों के बताए रास्ते पर चलने की आवश्यकता है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम :(i) 10 जनवरी -विश्व हिंदी दिवस (ii) 12 जनवरी-स्वामी विवेकानंद जयंती (iii) 13 जनवरी 1949, राकेश शर्मा-भारत के पहले और विश्व के 138 वें अंतरिक्ष यात्री (iv) 20 जनवरी 1900-जनरल के एम करिअप्पा-भारत के पहले सेनाध्यक्ष, फील्ड मार्शल (v) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

शिक्षक और विद्यार्थी

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षक प्राय: संत, ऋषि हुआ करते थे। गुरु और शिष्य परंपरा का आधार आस्था और विश्वास होता था। जीविकोपार्जन से लेकर परा और अपरा का अध्ययन उनका विषय होता था। ऐसे में स्वाभाविक रूप से समझा जा सकता है कि गुरु की कल्पना किस तरह की रही होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 में शिक्षक प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जिसमें उसके विषय ज्ञान के अतिरिक्त जीवन व्यवहार, विद्यार्थी -शिक्षक सम्बन्ध प्रमुख है। आधुनिक युग के शिक्षक, महर्षि अरविन्द का मानना है कि शिक्षक का जीवन आध्यात्मिकता से भरपूर होना चाहिए। वातावरण में इसका प्रभाव पड़ता है। शिक्षक की चित्ति शुद्धि स्वयं के लिए ही नहीं बल्कि विद्यार्थी और समाज के कल्याण के लिए भी आवश्यक है। भौतिक जगत से भी अधिक सत्य एक सूक्ष्म मनोजगत है। विचार एक तरह के मानसिक स्पन्दन होते हैं। ये स्पन्दन हमारे अन्दर से निकलकर निरन्तर बाह्य मनोजगत् में प्रसारित हो रहते हैं। यदि विचारों का स्पन्दन शुभ है तो वे विचारों के शुभ तरंगों को उत्पन्न करते हैं। तब जो भी इन शुभ स्पन्दनों के संस्पर्श में आता है, उसे लाभ होता है।

इतना ही नहीं तो शुभ तरंगें हमारे लिए भी शुभ विचारों का पुन: चिन्तन आसान कर देती हैं परिणामत: अशुभ चिन्तन के बाद हमारे चारों ओर का दूषित वातावरण पुन: शुभ तरंगों से परिव्याप्त हो जाता है। और तब धीरे-धीरे अशुभ विचारों का उठना भी रुक जाता है। जब शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच ऐसा वातावरण एक दीर्घ काल तक बना रहता है तब शिक्षक और विद्यार्थी के मानसिक स्पन्दन सामान्यत: एक सरीखे होते जाते हैं।

शिक्षक को ध्यान रखना होता है कि यदि उसके जीवन में सामन्जस्य नहीं है तो वह विद्यार्थी को भी कष्ट पहुँचाएगा। विद्यार्थी के प्रति क्रोधित होने से पूर्व हम स्वयं पर क्रोधित होते हैं। विद्यार्थी के प्रति सहानुभूति रखें यदि कोई विद्यार्थी नाराज हो तो उसके प्रति भी सहानुभूति रखें। ऐसे भी अवसर आयेंगे जब विद्यार्थी को डाँटना पड़ेगा। उनके प्रति कड़े शङ्घ दों का प्रयोग करना पड़ेगा तब अपने आत्मसंतुलन को खोये बिना भी यह काम किया जा सकता है। यदि शिक्षक आत्मसंतुष्ट हो तो दूसरे में भी तादात्म्य और संतुलन पैदा

होगा। यदि शिक्षक चंचल और असंतुष्ट हो तो बाहरी और भीतरी दोनों प्रकार की समस्याएँ पैदा होंगी। शिक्षक को सब के साथ मिलकर काम करना चाहिए। लेकिन आसक्त भाव से नहीं। विचलित होकर नहीं। दयालु हो कर पर अंधे हो कर नहीं। दु:ख और कष्ट स्वयं महान शिक्षक होते हैं। उन्हें सहन करना शिक्षक-धर्म है। एक उत्कृष्ट शिक्षक सदा ही एक अच्छा विद्यार्थी भी होता है। दु:खों और कष्टों को भूमा की ओर मोड़कर उन्हें भी अपनी प्रगति के साधन बनाता है।

सत्य की तीव्र अभिलाषा विद्यार्थी को दु:खों और कष्टों के बावजूद लक्ष्य की ओर ले जाती है। इसलिए शिक्षक और विद्यार्थी किसी भी समाज के क्यों न हों यदि वे अपने सभी कार्यों को ईश्वराभिमुख करने का प्रयत्न करें और आपस में विश्वास अर्जित कर ले तो दोनों का जीवन प्रेरक हो जाता है। जीवन के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण का विकास करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षा जब अर्थ के लक्ष्य में धर्माधारित होती है तो उसकी कामनाएँ भी पवित्र होती हैं और वह शिक्षक-शिक्षार्थी के साथ ही समाज को भी मोक्षगामी बनाती है। शिक्षक-शिक्षार्थी अपने नित्य प्रति के जीवन में भी धर्म को उतारने का प्रयत्न करते हैं तो दोनों के अन्दर का श्रद्धावान भक्त श्रमपूर्वक दूसरो के समक्ष करुणा और प्रेम को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है।

यदि शिक्षक दूसरों की सहायता करना चाहता है तो उसका एक मात्र उपाय यह है कि ऐसा जीवन यापन करे, जो दूसरों के लिए उदाहरण स्वरूप हो। शिक्षक को यह उदाहरण अपने जीवन के द्वारा प्रदान करना होगा। लोगों के सामने विचारों की ढेर ईंटें रखने से कोई लाभ नहीं होगा। चरित्ररूपी जिस भवन का शिक्षक निर्माण करेगा, उसे लोग देखना और उसे आत्मसात करना चाहेंगे।

आवश्यक है कि शिक्षक और शिष्य के चारो ओर जो कुछ हो रहा है, उसके प्रति दोनों सजग रहें, और संतुलित दृष्टिकोण रखें तभी समाज का जीवन शांतिपूर्ण होगा। और शांति, प्रवित्रता, पंच निष्ठा, श्रद्धा आदि विभिन्न सद्गुण समाज में दोनों के कार्यों द्वारा अभिव्यक्त होंगे। जब शिक्षक स्वयं सद्गुणों को अपने जीवन में पालन करता है, तो ही उपदेश और आदेश देने का कोई लाभ होता है अन्यथा विद्यर्थियों को व्यर्थ तंग नहीं करना चाहिए। विद्यार्थियों में आध्यात्मिकता का संचार मौन रहकर किया जा सकता है। उचित रूप से आध्यात्मिकता देने पर वे उसे शीघ्र ग्रहण कर लेते हैं। हमें केवल अग्नि प्रज्वलित करना है, वे उसकी स्वभावित गर्मी के लिए उसके चारो ओर इकट्ठे हो जाएँगे।

आज आध्यात्मिक अनुभूति के लिए बहुत कम शिक्षक प्रयत्नशील होते हैं। किन्तु यदि ये कुछ लोग जो आध्यात्मिक हो गये हैं, वे ही तीव्र साधना करें, तो इस दुनिया को और अच्छा बना सकते हैं। वे दूसरों का भी आध्यात्मिक कल्याण कर सकते हैं। दूसरों की सेवा और सहायता करना प्रत्येक शिक्षक और विद्यार्थी के जीवन का एक अनिवार्य अंग बन जाना चाहिए। विभिन्न प्रकार की सहायताओं में आध्यात्मिक सहायता सर्वोत्कृष्ट है। इसकी आज विश्व में सब से अधिक आवश्यकता है। जिन्हें आवश्यकता है, उन्हें आध्यात्मिक निर्देश देना, मार्गदर्शन प्रदान करना हमें अपना कर्तव्य समझना चाहिए। यदि हम ऐसा न कर सके तो दूसरों की बौद्धिक अथवा भौतिक सहायता करनी चाहिए। यदि यह हमारी आंतरिक प्रार्थना हो तो यह किसी से कम नहीं।

सब लोग एकाएक आध्यात्मिक नहीं बन सकते। दूसरों की आध्यात्मिक सहायता करने से पहले अपने को आध्यात्मिक होना होगा। स्वामी विवेकानन्द जी ऐसे ही कुछ व्यक्ति के तलाश में थे जो उच्चतम आदर्श के लिए अपना जीवन समर्पित कर दें। तन, मन और वचन की पवित्रता के आदर्श के लिए अपना सर्वस्व न्योंछावर कर दें तथा उस आदर्श को प्राप्ति के लिए हर कठिनाई का सामना करने को प्रस्तुत हो। यह ध्यान रखें कि हम सम्पूर्ण विद्यार्थी समूह में परिवर्तन नहीं ला सकते, हम समूचे विद्यार्थी समुदाय को आध्यात्मिक भी नहीं बना सकते, किन्तु हम उन कतिपय व्यक्तियों के जीवन को अवश्य बदल सकते हैं, जो निष्ठावान् हैं तथा जिनका मानस बन गया है।

स्मरण रखना होगा कि शिक्षक और विद्यार्थी जिस समाज से आते हैं उस समाज के लोगों का भी मन भयानक रूप से चंचल है। उनके सुख का केन्द्र अपने से बाहर है और इसीलिए वे सुख की तलाश में इधर उधर भागते हैं। इतना ही नहीं उनके सुख का केन्द्र अपने अन्दर से निकल कर या तो बाजार, सिनेमाघरों, डांस थियेटरों, क्लवों में या फिर चर्च में, प्रवचनों में, भाषणों में जाते हैं, कहने का अर्थ यह कि लक्ष्य विहीन सुख की तलाश में जहां इच्छा हुई उधर ही दौड़े जाते हैं। तब एक ही सिद्धांत काम करता है- "प्रवाह के विपरीत चिंतन करने का कष्ट क्यों करें? मन को क्यों स्थिर करें ? अपनी इस मानसिक प्रवृति के कारण पूरा भटका जन अधिकाधिक बहिर्मुखी बनता जाता है और अज्ञान के पाश में उलझ जाता है।" आज के अधिकांश युवा भी सोचते हैं कि- 'जब हम ऐसे ही सुख पाते हैं तो मन को विचार करके कष्ट क्यों देना ? क्यों न प्रचलित द्रव्यों का सेवन कर निद्रा जैसी मोहक स्थिति में मन को डाल दें, रोचक दिवास्वप्न में मग्न रहें ? सोचना या विचार करना तो युवावस्था को वांछित नहीं है।' प्रौढ़ और तनिक इस मोह जाल से निकले लोग

आजकल मस्जिद, गिरिजाघर, देवालय जाते हैं, और विचारहीन अस्पष्ट निरा भौतिक रूप से दिए जानेवाले प्रवचनों को सुनते हैं, जो आध्यात्मिक दृष्टि से शून्य हैं। अर्थहीन हैं।

शिक्षक का धर्म है कि वह इस वातावरण को बदले और आध्यात्मिक जीवन का प्रवाह शिक्षा संस्थानों के परिसर में प्रवाहित करे। यही शिक्षा की नीति होनी चाहिए। शिक्षा नीति का भौतिक लक्ष्य अपने प्रवेशित विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाना तो है किन्तु उससे अधिक महत्वपूर्ण उसे स्वरोजगार और रोजगार युक्त बनाना भी है। आज इस दिशा में यदि आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश की योजना एक आकार ग्रहण कर रही है तो उसका मूलाधार हमारे शिक्षा संस्थान, शिक्षाक और शिक्षार्थी ही हैं। इन्हें ही ऊपर उठाना आज का युगधर्म है।

यदि हम कहीं तनिक भी इस पतनोन्मुख वातावरण को ऊपर उठाने में,बदलने में अपने को असमर्थ पाते हो, तो विचार कर स्वयं को ही ऊपर उठाना होगा।क्योंकि जब हम समाज को जिसमें हम स्वयं शामिल हैं तो पाते हैं कि यह मानव-पशु धन, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान को लेकर कितना दुखी है ? परिणाम ये उस समाज को भी दुखी करते दिखाई पड़ते हैं जिनको जीवन निर्वाह हेतु रोटी, कपड़ा और मकान की ही आवश्यकता है।

हमारे मटमैले विचार कम्पन पूरे परिवेश को दूषित और विषाक्त करते हैं। विकृत विचारों को परिसर पर, सड़कों पर चलने वाले चेहरों पर देखा जा सकता है। कैसी घोर सांसारिकता और विकृति दिखायी देती है। पुते चेहरेवाले हाड़माँस के पुतले और पुतलियाँ, अपने भड़कीले भाषा और भूषा से केवल यौन विकार-रस को ही तो प्रवाहित करते हैं ? यदि हम थोड़ा अन्तर मुखी हो जाएं, हमारी संवेदनशीलता तनिक प्रबल हो जाए, तो हम देखेगे कि यह सब कितना भद्रता से रहित है। इसलिए शिक्षा के परिसर अरुचिकर मालुम पड़ते हैं।

सामान्यत: आज शिक्षा परिसरों के चर्चा के तीन विषय होते हैं- एक राजनीति का दूषित पक्ष, पैसा कमाने के संसाधन-जुगाड़ और तीसरा यौन चर्चा। इसकी प्रतिछाया हमारे फिल्मों, नाटकों, उपन्यासों और गीत-संगीत में होती हुई धीरे-धीरे हमारे मस्तिष्क में ऐसी छा जाती है कि जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर पाते और जीवन के सामाजिक पक्ष में जैसे ही प्रवेश करते हैं, हमारी यह मानसिकता शरद के कोहरे की तरह हमारी सामाजिक प्रज्ञा को ढकने लगती है। स्पष्ट है वायुमण्डल बदलने के कारण शिक्षक और विद्यार्थी दोनों की सोच बदल गई है। यह उसी तरह होती है, जैसे इस कोरोना काल में प्रभावित के सम्पर्क में आते ही हमारा जीवन संकट में आ फंसता है, इपीडेमिक आता है। तब वह वायुमण्डल राष्ट्रनिर्माण के हित में न होकर या यू कहिए कि शिक्षा के लक्ष्य की पूर्ति न करके जीवनमूल्यों को निरन्तर क्षतिग्रस्त करता है।

इसलिए आवश्यक है कि मन को सतत ध्येय की ओर लक्षित कर सदा विचार का एक अखण्ड प्रवाह बनाये रखना चाहिए। किन्तु ध्येय है क्या? शिक्षा का लक्ष्य 'आत्मनो मोक्षार्थ जगत् हिताय च।' यह सबसे अधिक श्रमसाध्य है किन्तु बहुत महत्व का है। यह लक्ष्य घनीभूत होकर जब निरामय, परिपूर्ण और निरतंर अखण्ड और अबाध गति से प्रवाहित होता है, तब ही हमारा शिक्षक और विद्यार्थी न केवल अपनी चेतना को विकसित कर पाता है, बल्कि इस समाज को भी भौतिकता में आसक्ति रहित जीवन जीते हुए सुखी बनाने का वातावरण देता है। ऐसे चेतनायुक्त मानस को तैयार करने का कार्य भारतीय ऋषि परंपरा से हमें प्राप्त होता रहा है, जिसे हमने जीवन का मोक्ष कहा है।

इसीलिए व्यक्ति की चेतना का विकास हो, हर व्यक्ति अपनी अन्त:प्रेरणा के अनुसार अंतिम आनन्द का अनुभव करे, इस सुविधा के विकास के लिए हमारे विश्वविद्यालय और महाविद्यालय हैं। बस आज अन्तर इतना है कि इन्हें अपनी प्राचीन जीवन पद्धति तथा जीवनश्रेणी के अनुसार आज के युगधर्म पर आधारित बनाना होगा। जिसका सूत्र यदि बुद्ध का 'अप्प दीपो भव' है तो 'चलो जलाएं दीप वहाँ, जहाँ अभी भी अँधेरा है', आज का युगबोध है। इस युगबोध की पूर्ति हेतु मनुष्यता की महान दृष्टि 'धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे' ने लक्ष्य बताया है कि 'प्रभावायाहि भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्' इसी से 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' अर्थात्सम्पूर्ण विश्व अखण्ड सुख को प्राप्त होगा। इसलिए स्मृति कहती है – 'एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।'

हम अपनी हृदय की भावनाओं और बाह्य जगत के साथ अपने प्राणिक और सूक्ष्म-भौतिक स्पंदों के साथ अनजाने में सम्बन्ध स्थापित करते जाते हैं और कभी हम एक दम निम्रतर स्तर पर पहुँच जाते हैं, कभी एकदम से उच्चतर स्तर को छूने लगते हैं। जिसे हमारे ऋषियों ने अतिचेतन मानस भी कहा है। किन्तु स्मरण रखना होगा हमारी भावनाएं और बाह्यजगत के साथ सम्बन्ध की प्रगाढ़ता हमें दो स्तरों पर ले जाती हैं, एक या तो हम अपने वैयक्तिक देह में समा जाते हैं, अथवा वैश्विक शक्तियों के उत्ताल तरंगों में

झूमते रहते हैं। परिणाम यह होता है कि यदि हम अपने श्रेय को अपने अहं के साथ जोड़कर जीने लगते हैं, तो अनजाने ही हमारी उत्कृष्ट लौ हमारे भौतिक प्रेरणाओं, धारणाओं, भावुकताओं, संवदनाओं, सफलताओं और धारणाओं की कुहेलिकाओं की ओट में अपने आप को उस समग्र दृष्टि से ओझल कर देते हैं, जिसकी प्राथमिक खोज के लिए हमे 'अप्प दीपो भव' में स्वस्थ होने के लिए हमारे पूर्वजों ने संकेत दिए थे।

तो इससे बचने के उपाय क्या हैं ? पहला यह कि हमें सदा सजग रहते हुए यह ध्यान रखना होगा कि समुद्र के जीव जन्तुओं को समुद्र की आवश्यकता होती है न कि समुद्र को। हमें अपनी वैयक्तिक चेतना के विकास के लिए सार्वभौमिक चेतना की आवश्यकता है न कि उस चेतना को। दूसरा, समझना होगा कि आधुनिक मनोविज्ञान ने सम्बन्ध के सब स्तरों का जिस तरह से बेतरतीब, उल्टे-सीधे, एक सामूहिक अवचेतन के अन्दर मिला डाला है, जैसे वह भानुमति का कुनवा हो या मदारी का पिटारा, उससे अत्यान्तिक सूक्ष्मता के साथ सावधान रहना होगा।

संस्कृत में एक श्लोक है जिसका हिन्दी भाव इस प्रकार है-'वह कुल और वह माता धन्य है, जिसका पुत्र ईश्वर भक्त है।' यह बात ठीक है कि पहले पहल वह भक्ति आत्मघाती और परिवार को अलाभकारी लगती है किन्तु वह न केवल अन्दर के मल को दूर करती है बल्कि वह मनुष्य को पूर्ण बनाती है और प्रेम, सत्य का हृदय के अन्दर शाश्वत प्रवाह प्रवाहित कर देता है।

असंग और पवित्र व्यक्ति ही सच्चे कर्मी होते हैं,क्योंकि वे व्यक्तिगत प्रेम और घृणा के शिकार नहीं होते। वे न तो अपने लिए और न दूसरों के लिए बन्धन कारक होते हैं। प्रेम और घृणा, आकर्षण और विकर्षण के द्वन्द्वों से मुक्ति में ही सच्ची स्वतंत्रता है। पूर्ण इन्द्रिय-संयम ही स्वतंत्रता है। जब हम शरीर और मन पर पूरी तरह नियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं, तो भौतिक रूप से भी हमें यह महसूस होने लगता है कि जीवन वास्तव में जीने लायक है,क्योंकि तब हम अपनी वासना और कामना के गुलाम नहीं होते। मन तब हमें कठपुतली के सामन नचा नहीं सकता। और तब हम वास्तव में मनुष्यत्व की स्थिति को प्राप्त होने लगते हैं।

इसलिए आवश्यक है कि शिक्षक और विद्यार्थी दोनों जीवन में निरन्तर अध्यवसाय के साथ अपने भीतर दिव्यता के अस्तित्व का बोध करता रहे और अन्य दूसरी बातों को भूल जाने की कोशिश करे। ऐसे में ही वह सामान्य भौतिक जीवी मनुष्यों से अपने को अलग बना सकेगा। और उस कल्पना को प्राप्त हो सकेगा जहाँ स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि 'आज भारत-संघ के माध्यम से दुनिया को दिशा दे सकता है।' ऋषियों की इस प्रार्थना को सदा स्मरण रखना होगा- ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

हे परमात्मा हम शिक्षक और विद्यार्थी दोनों की साथ-साथ रक्षा करें। हम दोनों का साथ साथ पालन करें। हम साथ साथ विद्या-सम्बन्धी सामथ्र्य प्राप्त करे। हम दोनों का पढ़ा हुआ तेजस्वी हो। हम द्वेष न करें। त्रिविध ताप की शांति हो।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर- वाणी

बालस्तावत् क्रीडासक्तः,तरुणस्तावत् तरुणीसक्तः।
वृद्धस्तावच्चिन्तासक्तः,परे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्तः॥

श्रीमद्भगवतगीता:

यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते॥

जिस पुरुष के अन्तःकरण में 'मैं कर्ता हूँ' ऐसा भाव नहीं है तथा जिसकी बुद्धि सांसारिक पदार्थों में और कर्मों में लिपायमान नहीं होती, वह पुरुष इन सब लोकों को मारकर भी वास्तव में न तो मरता है और न पाप से बँधता है ॥

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः॥

ज्ञाता (जानने वाले का नाम 'ज्ञाता' है।), ज्ञान (जिसके द्वारा जाना जाए, उसका नाम 'ज्ञान' है।) और ज्ञेय (जानने में आने वाली वस्तु का नाम 'ज्ञेय' है।)- ये तीनों प्रकार की कर्म-प्रेरणा हैं और कर्ता (कर्म करने वाले का नाम 'कर्ता' है।), करण (जिन साधनों से कर्म किया जाए, उनका नाम 'करण' है।) तथा क्रिया (करने का नाम 'क्रिया' है।)- ये तीनों प्रकार का कर्म-संग्रह है॥

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः ।
प्रोच्यते गुणसङ्ख्याने यथावच्छणु तान्यपि ॥

गुणों की संख्या करने वाले शास्त्र में ज्ञान और कर्म तथा कर्ता गुणों के भेद से तीन-तीन प्रकार के ही कहे गए हैं, उनको भी तु मुझसे भलीभाँति सुन ॥

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ॥

जिस ज्ञान से मनुष्य पृथक-पृथक सब भूतों में एक अविनाशी परमात्मभाव को विभागरहित समभाव से स्थित देखता है, उस ज्ञान को तू सात्त्विक जान ॥

रामचरितमानस

साँचेहुँ मैं लबार भुज बीहा । जौं न उपारिउँ तव दस जीहा ॥
समुझि राम प्रताप कपि कोपा । सभा माझ पन करि पद रोपा ॥

(अंगद ने कहा-) अरे बीस भुजा वाले! यदि तेरी दसों जीभें मैंने नहीं उखाड़ लीं तो सचमुच मैं लबार ही हूँ। श्री रामचंद्रजी के प्रताप को समझकर (स्मरण करके) अंगद क्रोधित हो उठे और उन्होंने रावण की सभा में प्रण करके (दृढ़ता के साथ) पैर रोप दिया॥

जौं मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दससीसा। पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥

(और कहा-) अरे मूर्ख! यदि तू मेरा चरण हटा सके तो श्री रामजी लौट जाएँगे, मैं सीताजी को हार गया। रावण ने कहा- हे सब वीरो! सुनो, पैर पकड़कर बंदर को पृथ्वी पर पछाड़ दो ॥

कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ ।
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ ॥

करोड़ों वीर योद्धा जो बल में मेघनाद के समान थे, हर्षित होकर उठे, वे बार-बार झपटते हैं, पर वानर का चरण नहीं उठता, तब लज्जा के मारे सिर नवाकर बैठ जाते हैं ॥

भूमि न छाँड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग ।
कोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग ॥

जैसे करोड़ों विघ्न आने पर भी संत का मन नीति को नहीं छोड़ता, वैसे ही वानर (अंगद) का चरण पृथ्वी को नहीं छोड़ता। यह देखकर शत्रु (रावण) का मद दूर हो गया! ॥

कपि बल देखि सकल हियँ हारे। उठा आपु कपि कें परचारे ॥
गहत चरन कह बालिकुमारा। मम पद गहें न तोर उबारा ॥

अंगद का बल देखकर सब हृदय में हार गए। तब अंगद के ललकारने पर रावण स्वयं उठा। जब वह अंगद का चरण पकड़ने लगा, तब बालि कुमार अंगद ने कहा- मेरा चरण पकड़ने से तेरा बचाव नहीं होगा! ॥

सिंघासन बैठेउ सिर नाई । मानहुँ संपति सकल गँवाई ॥
जगदातमा प्रानपति रामा । तासु बिमुख किमि लह बिश्रामा ॥

वह सिर नीचा करके सिंहासन पर जा बैठा। मानो सारी सम्पत्ति गँवाकर बैठा हो। श्री रामचंद्रजी जगत्भर के आत्मा और प्राणों के स्वामी हैं। उनसे विमुख होकर किस प्रकार से शांति प्राप्त हो सकती है, अर्थात् नहीं।

पुनि कपि कही नीति बिधि नाना । मान न ताहि कालु निअराना ॥
रिपु मद मथि प्रभु सुजसु सुनायो । यह कहि चल्यो बालि नृप जायो ॥

फिर अंगद ने अनेकों प्रकार से नीति कही। पर रावण नहीं माना, क्योंकि उसका काल निकट आ गया था। शत्रु के गर्व को चूर करके अंगद ने उसको प्रभु श्री रामचंद्रजी का सुयश सुनाया और फिर वह राजा बालि का पुत्र यह कहकर चल दिया-

नारि बचन सुनि बिसिख समाना। सभाँ गयउ उठि होत बिहाना॥
बैठ जाइ सिंघासन फूली। अति अभिमान त्रास सब भूली॥

मंदोदरी के बाण के समान वचन सुनकर वह सबेरा होते ही उठकर सभा में चला गया और सारा भय भुलाकर अत्यंत अभिमान में फूलकर सिंहासन पर जा बैठा॥

बोध वाक्य:" मैं मानव जाती की एकता में विस्वास करता होगा। मेरा विश्वास है की सभी महिला श्रेष्ट जीवन निर्वाह का सामान अधिकार रखती हैं। जिन लोगों को परमात्मा अथवा समाज द्वारा श्रेठ बुद्धि अथवा महान गुण प्राप्त हुए हैं, उनसे आशा की जाती है कि वे मानवता की अधिकाधिक सेवा करेंगे।"- महाराजा महेंद्र प्रताप

बोध कथा:

सबल शरीर आवश्यक है

एक बार स्वामी विवेकानंद रेल से कहीं जा रहे थे। उन्हें एक भक्त ने अपने प्रथम श्रेणी का टिकट खरीद कर दिया था। उन दिनों प्राय: प्रथम श्रेणी में अंग्रेज या अंग्रेजों के चाटुकार सेठ आदि ही सफर करते थे। उस समय डिब्बे में दो अंग्रेज भी थे।अंग्रेजों ने जब भगवा कपड़े पहने एक संन्यासी को देखा, तो अंग्रेजी में उनके बारे में आपस में गंदी-गंदी बातें करने लगे। स्वामी जी को अच्छी अंग्रेजी आती थी वह सब समझ रहे थे, पर उन्होंने चुप रहना ही उचित समझा।

कुछ देर बाद जब एक स्टेशन पर गाड़ी रुकी, तो स्वामी जी ने पास से गुजर रहे स्टेशन मास्टर से अंग्रेजी में बात करते हुए अपने लिए पानी मंगवाया। यह देखकर दोनों अंग्रेज हैरान रह गए। जब गाड़ी चली, तो वे स्वामी जी बात करने लगे।आपको अंग्रेजी आती है ? हाँ कुछ-कुछ आती है, तब तो हम जो बोल रहे ,वह आप सब समझ रहे होंगे ?हां, अच्छी तरह से समझ रहा था।फिर आपने उसका विरोध क्यों नहीं किया ?स्वामी जी ने हंसकर जवाब दिया, मेरा मूर्खों से मिलने का यह पहला अवसर नहीं है।

यह सुनकर वे आग बबूला होकर झगड़ने लगे। स्वामी जी ने अपने कुर्ते कि बांह चढ़ाई और उनकी गर्दन पकड़ कर बोले चुपचाप बैठ जाओ, अन्यथा गाड़ी से बाहर फेंक दूंगा, तुम दोनों के लिए मैं अकेला ही काफी हूं। स्वामी जी की मजबूत भुजाओं को देखकर दोनों का गुस्सा ठंडा हो गया, अगला स्टेशन आने पर वह डिब्बा छोड़कर दूसरे डिब्बे में जा बैठे।

मासिक गीत / गान :

भारत माता तेरा आँचल,हरा – भरा धानी– धानी।
मीठा– मीठा चम् -चम करता , तेरी नदियों का पानी।

हरी हो गयी बंजर धरती, नाचे झरनों में बिजली।
सोना चांदी उगल रहा है, तेरी नदियों का पानी।

भारत माता तेरा आँचल, हरा– भरा धानी– धानी।
मीठा – मीठा चम् -चम करता, तेरी नदियों का पानी।

मस्त हवा जब लहराती है , दूर – दूर तक पहुंचाती है।
तेरे ऊँचे ऊँचे पर्वत , निडर बहादुर सेनानी

भारत माता तेरा आँचल , हरा – भरा धानी – धानी।
मीठा – मीठा चम् -चम करता , तेरी नदियों का पानी।

---00---

फरवरी

माघ - यह हिंदी साल का ग्यारहवां महीना होता है जो, जनवरी और फरवरी महीने में पड़ता है। यह महीना साधना का माह होता है। गंगा स्नान का विशेष महत्व माना गया है। यहाँ साधक आते हैं और गुफाओं में साधान कर रहे संतों के भी दर्शन लाभ करते हैं। महाराष्ट्र में संत 'पंचायतन' के नाम से प्रसिद्ध ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, तुकारम और समर्थ गुरु रामदास कौन नहीं जानत है। आठवीं सती के संत ज्ञानेश्वर से प्रारंभ होकर संतों की जीवंत परंपरा रही है। संत ज्ञानेश्वर, मुक्तावाई, ज्ञानदेव, सोपानदेव, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, गोराकुम्हार, जनाबाई और श्री समर्थ रामदास जी के नाम प्रमुखता से लिये जा सकते हैं। ऐसे ही आज भी अनेक संत भारत को परोक्ष अपरोक्ष रूप से दिशा दे रहे हैं। प्राणिमात्र के सद्भाव की चिंता कारने वाले ऋषि तत्वों का भी निरंतर चिंतन कर हमारा मार्गदर्शन करते है जैसा गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हुए हिंसा और अहिंसा की धरना को स्पस्ट कहते हैं - जैसे अग्नि, वायु और जल द्वारा प्रारब्धवश किसी प्राणी की हिंसा होती देखने में आए तो भी वह वास्तव में हिंसा नहीं है, वैसे ही जिस पुरुष का देह में अभिमान नहीं है और स्वार्थरहित केवल संसार के हित के लिए ही जिसकी सम्पूर्ण क्रियाएँ होती हैं, उस पुरुष के शरीर और इन्द्रियों द्वारा यदि किसी प्राणी की हिंसा होती हुई लोकदृष्टि में देखी जाए, तो भी वह वास्तव में हिंसा नहीं है क्योंकि आसक्ति, स्वार्थ और अहंकार के न होने से किसी प्राणी की हिंसा हो ही नहीं सकती तथा बिना कर्तृत्वाभिमान के किया हुआ कर्म वास्तव में अकर्म ही है, इसलिए वह पुरुष 'पाप से नहीं बँधता'।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: (i)18 फरवरी 1836 स्वामी रामकृष्ण परमहंस का **जन्म** के (ii) 18 फरवरी चैतन्य महाप्रभु (iii) 13 फरवरी 1879, सरोजिनी नायडू (iv) 12 फरवरी,1708 को छत्रपति शाहू जी को मराठा शासक का ताज पहनाया गया (v) माघी पूर्णिमा संत रविदासजी जयंती (vi) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

कबड्डी खेल की जानकारी

ऐसे कहा जाता है कि भारत गावों में बसता है। यहाँ की धरती में लोटने वाला एक किसान पुत्र रहा तो दूसरा स्वामी विवेकानंद जैसा संन्यासी भी। इसी धरती में लोटने और सांस पर नियंत्रण की अद्भुत कला को अपने अन्दर समेटे हुए है कब्बडी। हर खेल की तरह कब्बडी की भी अपनी पहचान है। इस खेल को खेलना और देखना दोनों रोमांचकारी होता है ।वैसे तो यह खेल अधिकतर गाँवों में खेला जाता था, लेकिन वर्तमान समय यह खेल इतना प्रचलित हो गया कि आप इसे अपनी कमाई का जरिया बना सकते हैं ।अपना भविष्य भी संवार सकते हैं। मुख्य रूप से कबड्डी खेल की शुरुआत भारत से ही की गई हैं, लेकिन अब इस खेल को और भी कई देश के लोग खेलने की शुरुआत कर चुके हैं। यदि आप भी कबड्डी में अपना कॅरियर बनाना चाहते हैं और कबड्डी खेल के नियम के बारे में जानना चाहते है तो कुछ बातों को समझना होगा।

(i) कबड्डी में कॅरियर कैसे बनायें :भारत सरकार ने जब से 'खेलो इण्डिया योजना' का आरम्भ किया है, इसके बाद से इस खेल के प्रति लोगों की रुचि बढ़ती जा रही है। इस खेल में कॅरियर बनाने के लिए इस खेल को खेलने में रुचि बनाकर रखनी पड़ेगी। क्योंकि किसी भी फील्ड में कॅरियर बनाने के लिए हमें उसके प्रति इंट्रेस्ट रखना जरूरी होता है।कबड्डी का खेल अधिकतर स्कूलों में खेला जाता है। भारत ही इस खेल का जन्मदाता है ।हमारे भारतीय परिवेश में यह खेल देश के विभिन्न प्रान्तों में खेला जा रहा है, कबड्डीनाम का प्रयोग प्राय: उत्तर भारत में किया जाता है, इस खेल को दक्षिण में चेडुगुडु और पूर्व में हु तू तू के नाम से भी जानते हैं। यह एक ऐसा खेल है जिसमें रेसलिंग, राग्बी दोनों खेलों का मिश्रण है, आज के युवा वर्ग में यह खेल तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। एशियाई स्तर पर पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, चीन, जापान, कोरिया आदि देशों में इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। इसकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण यह है कि बिना किसी उपकरणों यानी इसके लिए कोई साधन की आवश्यकता नहीं होती है। खिलाड़ी ही इस खेल के साधन भी है और खेलने वाले भी। (अ) खेल की पूरी जानकारी समझ कर ही आप इस खेल को समझ सकते हैं। किसी भी खेल में शरीरिक और मानसिक फिटनेस होनी बहुत जरुरी है, स्कूल में इस खेल को सही ढंग से खेलने के बाद पहले तहसील स्तर पर, अपने आपको साबित करना ,फिर जिले स्तर पर खेल के स्तर को बढ़ाना उसके बाद राज्य स्तर पर खेल कर एक कबड्डी खिलाड़ी प्रो कबड्डी टीम को नजर आता है, यहाँ तक का सफ़र आसान नहीं है, खुद की योग्यता के साथ अच्छे कोच का

मिलना भी जरुरी है, जो अपने सीखने वाले खिलाड़ी को सही मार्गदर्शन दे सके। हर स्कूल में इस खेल की शुरुआत होती है।आप यदि इस खेल में रूचि रखते हैं तो यही से इस करियर की शुरुआत होगी फिर यहीं से आपको प्रो कबड्डी लीग में स्थान मिल सकता है। (ब) प्रो कबड्डी में भविष्य में आने वाले खिलाड़ियों के लिए 'फ्यूचर कबड्डी हीरोज'नामक एक कार्यक्रम शुरू हुआ है जिसमें प्रो कबड्डी में आने वाले खिलाड़ियों को तराशने का काम किया जाता है। भारतीय कबड्डी फेडरेशन (AKFI)और मशाल स्पोर्ट्स ने 2017 में इसकी शुरुआत की। इसमें राज्य कब्बडी फेडरेशन भी जोड़े गए, ताकि भविष्य में 18 से 22 साल तक के आने वाली कई युवाओं को आगे आने का मौका दिया जाए। चयनित खिलाड़ियों को उचित मापदंड और प्रो कबड्डी की उम्मीदों के अनुरूप ट्रेनिंग देने का कार्य किया जाता है। इसमें सभी तरह के प्रोफेशनल दाव-पेंच सिखाए जाते हैं।

(ii) **पूर्ण अभ्यास और लगन :**वह समय बीत चुका जब कहा जाता था कि खेलने में समय व्यर्थ जाता है, और सिर्फ पढ़ने से ही कोई कॅरियर बन सकता है। आज के समय में खेल के क्षेत्र में मिलने वाले धन और सम्मान के कारण प्रत्येक खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेना चाहता है।परन्तु उस स्तर तक पहुंचने के लिए बहुत मेहनत और लगन की जरुरत है। हर खेल पूर्ण अभ्यास और लगन मांगता है।अभी तक क्रिकेट, फ़ुटबाल, हॉकी, बेडमिन्टन आदि के ही नाम दिमाग और ज़ुबान पर आते छाए रहते थे। पर आज कब्बडी में जाने का सपना हर एक युवा का है। किसी भी खेल में सबसे पहले फिटनेस और खेल का ज्ञान अति आवश्यक है। कब्बडी के साथ फिटनेश के साथ साँस को रोकना और समय को साधाना बहुत महत्वपूर्ण कला है। स्कूल प्रतियोगिताओं में कबड्डी का अच्छा अभ्यास कराया जाता है । वहां से फिट होकर खिलाड़ी आगे का सफर तय करने के लिए प्रो कब्बडी लीग तक पहुंचते हैं।

(iii) भारत सरकार की खेलो इण्डिया योजना :इस योजना के माध्यम से लोगों की रुचि खेल की तरफ बढ़ी है, खेल के क्षेत्र में सिर्फखिलाड़ी के रूप में ही नहीं, बल्कि इससे सम्बंधित अन्य क्षेत्रो में अपना बेहतर कॅरियर बनाया जा सकता है। इसी तरहके खेलों में ''कबड्डी''का नाम भी खेल में इज्जत के साथ लिया जाता है। कबड्डी लीग आने से इसकी लोकप्रियता बढ़ी और ख़ास बात यह रही कि ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाली प्रतिभाओं को भी इससे लाभ हुआ। आज भारत में इस खेल के करोड़ों फैन्स हैं और 'प्रो कबड्डी लीग' की वजह से ऐसा हुआ है।

(iv) **कब्बडी में खिलाड़ी चयन और खेल प्रक्रिया :(अ)** कठोर शॉर्ट लिस्ट प्रक्रिया के बाद फैज-2 के लिए 200 से 220 खिलाड़ियों को चुना जाता है। इसके बाद फैज 3 के लिए 80 से 100 खिलाड़ियों को एक महीने की कड़ी ट्रेनिंग के लिए चुना जाता है और नीलामी में ड्राफ्ट का हिस्सा बनाया जाता है। नीलामी के दौरान स्पोर्ट्स के विशेषज्ञ और विभिन्न कोच और मालिक मौजूद रहते हैं। तकनीक और अनुभव के साथ फुर्ती और फिटनेस देखकर खिलाड़ियों की बोली लगती है और उन्हें खरीदा जाता है। **(ब)** टूर्नामेंट शुरू होने से पहले भी ट्रेनिंग के लिए समय रहता है। उसमें प्रोफेशनल एक्सपर्ट और कोच की मौजूदगी में अभ्यास कराया जाता है तथा सभी तरह की तैयारियों के बाद खिलाड़ियों को प्रो कबड्डी के मैदान में उतारा जाता है। कोई युवा प्रो कबड्डी में जाने की इच्छा रखता है तो बताई गई प्रक्रिया का पालन कर एक कबड्डी खिलाड़ी बन सकता है। **(स)** कबड्डी के इस खेल में हर टीम में 12 खिलाड़ी होते हैं, लेकिन पाले में 7 खिलाड़ी खेलते हैं, 5 खिलाड़ी सुरक्षित होते हैं, जिन्हें विशेष परिस्थितियों में इस्तेमाल किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के दलों में प्रत्येक दल में 7 खिलाड़ी होते हैं।यह खेल का मैदान दो हिस्सों में बंटा होता है और यह खेल बीस बीस मिनट के अंतराल पर खेला जाता है,जिसके बीच खिलाड़ियों को पांच मिनट का हाफ- टाइम मिलता है। इस हाफ टाइम के दौरान दोनों दल अपना पाला बदल लेते हैं। खेल में मैदान से बाहर जाने वाला खिलाड़ी आउट माना जाता है तथा मैच शुरू होने के बाद लॉबी को भी मैदान का हिस्सा ही माना जाता है। मैच में यदि 1 या 2 खिलाड़ी शेष हैं तो कप्तान को अधिकार होता है कि वह सभी खिलाड़ियों को बुला ले, लेकिन उतने अंक और 2 अंक अतिरिक्त विपक्षी टीम को मिलते हैं। विपक्षी क्षेत्र में सांस तोड़ने पर रेडर को आउट करार दिया जाता है। इस खेल में लगातार कबड्डी कबड्डी बोलते रहने होता है , सांस टूटने पर इस शब्द के रुकने पर खिलाड़ी आउट मान लिया जाता है। इस तरह और भी कई रोचक नियम है जिसे खेलते हुए पालन किया जाता है और इस खेल को रोचक बनाया जाता है।

(द)कबड्डी खेलने के लिए प्रत्येक खिलाड़ी बनियान व निक्कर पहनता है।इसकी ड्रेस के साथ में जुराब व कपड़े के जूते भी पहने जाते है।प्रत्येक खिलाड़ी की बनियान पर नंबर अंकित होता है। इसके अलावा किसी भी खिलाड़ी को ऐसी वस्तु पहनने की अनुमति नहीं होती, जो किसी अन्य खिलाड़ी को चोट पहुंचा सके। इस खेल को खेलने के लिए अच्छी प्रोटीन युक्त डाईट का होना भी जरुरी है और अभ्यास का भी लगातार बने रहना जरुरी।

(v) **प्रमुख कोचिंग स्थान:**आज प्रत्येक खेल की तरह कब्बडी की भी जगह जगह कोचिंग होती है। दिल्ली, जयपुर, हरियाणा सीमा पर बसा गांव "निज़ामपुर "जहां के जंगलीराम स्टेडियम, में पीढ़ियों से कबड्डी खेलने के गुण सिखाये जाते हैं। अकेले निज़ामपुर में दो एशियाड स्वर्ण पदक विजेता हैं और कम से कम सात खिलाड़ी पीकेएल में खेल रहे हैं। इनके अलावा यहाँ तीन जूनियर और तीन सीनियर एशियाई चैंपियन हैं। पूरे गांव में तक़रीबन सौ युवा और बच्चे कब्बडी की प्रैक्टिस के लिए इस मैदान पर आते हैं।

इसी तरह मध्यप्रदेश के गाँवों, प्राथमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भी कबड्डी की कोचिंग देकर विद्यार्थियों को नाम, पैसा दिलाया जा सकता है। विद्यार्थी अपना भविष्य बना सकते हैं और प्रदेश और देश का नाम भी ऊँचा होगा।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर - वाणी

का ते कांता कस्ते पुत्रः,संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं वा कुत अयातः,तत्त्वं चिन्तय तदिह भ्रातः॥

श्रीमद्भगवतगीता

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्॥

किन्तु जो ज्ञान अर्थात जिस ज्ञान के द्वारा मनुष्य सम्पूर्ण भूतों में भिन्न-भिन्न प्रकार के नाना भावों को अलग-अलग जानता है, उस ज्ञान को तू राजस जान॥

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम्।
अतत्त्वार्थवदल्पंच तत्तामसमुदाहृतम्॥

परन्तु जो ज्ञान एक कार्यरूप शरीर में ही सम्पूर्ण के सदृश आसक्त है तथा जो बिना युक्तिवाला, तात्त्विक अर्थ से रहित और तुच्छ है- वह तामस कहा गया है॥

नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते॥

जो कर्म शास्त्रविधि से नियत किया हुआ और कर्तापन के अभिमान से रहित हो तथा फल न चाहने वाले पुरुष द्वारा बिना राग-द्वेष के किया गया हो- वह सात्त्विक कहा जाता है॥

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहङ्कारेण वा पुनः।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम्॥

परन्तु जो कर्म बहुत परिश्रम से युक्त होता है तथा भोगों को चाहने वाले पुरुष द्वारा या अहंकारयुक्त पुरुष द्वारा किया जाता है, वह कर्म राजस कहा गया है॥

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम्।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते॥

जो कर्म परिणाम, हानि, हिंसा और सामर्थ्य को न विचारकर केवल अज्ञान से आरंभ किया जाता है, वह तामस कहा जाता है॥

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते॥

जो कर्ता संगरहित, अहंकार के वचन न बोलने वाला, धैर्य और उत्साह से युक्त तथा कार्य के सिद्ध होने और न होने में हर्ष -शोकादि विकारों से रहित है- वह सात्त्विक कहा जाता है॥

रामचरितमानस

इहाँ राम अंगदहि बोलावा। आइ चरन पंकज सिरु नावा॥
अति आदर समीप बैठारी। बोले बिहँसि कृपाल खरारी॥

यहाँ (सुबेल पर्वत पर) श्री रामजी ने अंगद को बुलाया। उन्होंने आकर चरण कमलों में सिर नवाया। बड़े आदर से उन्हें पास बैठाकर खर के शत्रु कृपालु श्री रामजी हँसकर बोले॥

बालितनय कौतुक अति मोही। तात सत्य कहुँ पूछउँ तोही॥
रावनु जातुधान कुल टीका। भुज बल अतुल जासु जग लीका॥

हे बालि के पुत्र! मुझे बड़ा कौतूहल है। हे तात! इसी से मैं तुमसे पूछता हूँ, सत्य कहना। जो रावण राक्षसों के कुल का तिलक है और जिसके अतुलनीय बाहुबल की जगत्‌भर में धाक है॥

तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए। कहहु तात कवनी बिधि पाए॥
सुनु सर्बग्य प्रनत सुखकारी। मुकुट न होहिं भूप न गुन चारी॥

उसके चार मुकुट तुमने फेंके। हे तात! बताओ, तुमने उनको किस प्रकार से पाया! (अंगद ने कहा-) हे सर्वज्ञ ! हे शरणागत को सुख देने वाले ! सुनिए। वे मुकुट नहीं हैं। वे तो राजा के चार गुण हैं॥

साम दान अरु दंड बिभेदा। नृप उर बसहिं नाथ कह बेदा॥
नीति धर्म के चरन सुहाए। अस जियँ जानि पहिं आए॥

हे नाथ! वेद कहते हैं कि साम, दान, दण्ड और भेद- ये चारों राजा के हृदय में बसते हैं। ये नीति-धर्म के चार सुंदर चरण हैं, ऐसा जी में जानकर ये नाथ के पास आ गए हैं॥

धर्महीन प्रभु पद बिमुख काल बिबस दससीस।
तेहि परिहरि गुन आए सुनहु कोसलाधीस॥

दशशीश रावण धर्महीन, प्रभु के पद से विमुख और काल के वश में है, इसलिए हे कोसलराज! सुनिए, वे गुण रावण को छोड़कर आपके पास आ गए हैं॥

परम चतुरता श्रवन सुनि बिहँसे रामु उदार।
समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार॥

अंगद की परम चतुरता (पूर्ण उक्ति) कानों से सुनकर उदार श्री रामचंद्रजी हँसने लगे। फिर बालि पुत्र ने किले के (लंका के) सब समाचार कहे॥

बोध वाक्य: “सागर वाड़वाग्नि की गर्मी से संतप्त नहीं होता और न हिमालय के जल के प्रवेश से शीतल होता है। इसी प्रकार निरंतर गंभीर मन वाले लोग हर्ष व विषाद के समय सामान रहते हैं। ”- कल्हण

बोध कथा:

प्रश्न एक उत्तर अनेक

आज भारत में जाति, भाषा, प्रांत भेद जैसी अनेक समस्याएं हैं, जिनके कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त रहता है। इनके कारण से भारत तथा विश्व में भी अपमान सहना पड़ता है। इसके कारण को समझाने के लिए इस कहानी को समझना होगा - एक राजा ने अपने दरबार में एक पहेली पूछते हुए कहा कि प्रश्न तीन है, पर इनका उत्तर एक ही है। प्रश्न है -‘घोड़ा अडा क्यों, पान सड़ा क्यों और रोटी जली क्यों ?’

जब कोई इसका उत्तर न दे सका, तो राजा ने सबसे बुद्धिमान दरबारी की ओर देखा। उसने कहा महाराज इसका उत्तर है,‘फेरा न था।’ अर्थात घोड़े के पैरों की मालिश जरूरी है। ऐसे ही पान और रोटी को यदि उलट-पुलट नहीं करेंगे तो वह सड़ और जल जायेंगे। भारत की सभी समस्याओं का एकमात्र निदान हमारी एकात्मकता और पुरातन राष्ट्रबोध है उसको निरंतर जीवन में धारण करते चलना होगा ।

मासिक गीत / गान :

आ रही हिमालय से पुकार है उदधि गरजता बार बार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार; सब पूछ रहें हैं दिग-दिगन्त
वीरों का कैसा हो वसंत

फूली सरसों ने दिया रंग मधु लेकर आ पहुंचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग अंग;है वीर देश में किन्तु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भर रही कोकिला इधर तान मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान; मिलने को आए आदि अंत
वीरों का कैसा हो वसंत

गलबाहें हों या कृपाण चल चितवन हो या धनुष बाण
हो रस विलास या दलित त्राण; अब यही समस्या है दुरंत
वीरों का कैसा हो वसंत
कह दे अतीत अब मौन त्याग लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग; बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसंत

हल्दीघाटी के शिला खण्ड, दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचंड
राणा ताना का कर घमंड; दो जगा आज स्मृतियां ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भूषण अथवा कवि चंद नहीं बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं; फिर हमें बताए कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत ॥

--00--

मार्च

फाल्गुन: विवेक चूड़ामणि में आता है कि ‘इस भूतल पर शांत और विशालहृदयी संत वसंत ऋतु के समान केवल लोक कल्याण के हेतु से विचरण करते हैं। वे स्वयं के प्रयत्नों से इस भयकारी भवसागर से पार हो चुके होते हैं और बिना किसी स्वार्थ के अन्यों को भी उसे पार करने में सहायता करते हैं।’ मनुष्य को चाहिए कि वह अपना स्वयं का उत्थान करे और अपने को गिरने न दे; क्योंकि वह स्वयं अपना मित्र और शत्रु भी है। इस प्रकार कर्म संस्कार उसको लिप्त न कर सकें। मनुष्य यह कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जिये -हम सौ वर्ष तक जीते रहें, हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ सौ वर्ष तक काम करती रहें।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: (i) 03 मार्च, 1839 जमशेद जी टाटा, टाटा समूह के संस्थापक (ii) डॉ. राममनोहर लोहिया (iii) 01 मार्च 1983– मैरी कॉम – भारतीय महिला मुक्केबाज़ (iv) विश्व जल दिवस का आयोजन। (v) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

वस्त्र का उद्गम एवं इतिहास

सामान्यतया टेक्सटाइल का हिंदी में अर्थ "बुना हुआ" होता है। टेक्सटाइल की सबसे सूक्ष्म इकाई रेशा (फाइबर) है। लेकिन आज के परिदृश्य में "शब्द "टेक्सटाइल के अंतरगत उन सभी उत्पादों को शामिल किया जाता है जो टेक्सटाइल की मूल इकाई रेशेअर्थात फाइबर से बने होते हैं। यह विशाल उद्योग है जो कई खंडों से बना है।उत्पादन प्रक्रिया के आधार परसंपूर्णवस्त्र उद्योग को निम्नानुसार विभाजित किया जाता है

रेशा (Fiber) - यह वस्त्र की सबसे छोटी और बुनियादी इकाई है। इन्हे प्राप्ति स्त्रोतों के आधार पर दो भागों मेंवर्गीकृत किया गया है -प्राकृतिक रेशेएवं मानव निर्मित रेशे। प्राकृतिक रेशे जैसा कि नाम से ही ज्ञात है, कि येप्रकृति से प्राप्त किये जाते हैं,जैसे कपास, रेशम, ऊन इत्यादि। जबकि मानव निर्मित रेशे रसायनों से बनाए जाते हैं , जैसे -पॉलिएस्टर, नाइलॉन आदि। मानव निर्मित रेशों का उत्पादन मिल्स (mills) में किया जाता है और इन रेशों को बनाने वाली इकाइयों को फिलामेंट उद्योग(Filament Industry) कहते हैं।

सूत (Yarn)- रेशों को जब आपस में मिला कर घुमाया (twist) जाता है तब अविरल धागा बनता है, जिसे सूत या धागाकहते हैं। कपड़ा बनाने के लिए, रेशों को सूत में परिवर्तित किया जाता है। रेशों को सूत में बदलने वाली इकाई कताई उद्योग (Spinning Industry)कहलाती है।

वस्त्र (Fabric)- सूत या धागों के दो जोड़े (sets)ताना और बाना (warp & weft) के अंतरगथन (interlaced or interloped) से वस्त्र का निर्माणकिया जाता है। यह प्रक्रिया बुनाई (weaving)कहलाती है।वस्त्र निर्माण की अनेक तकनीक हैं ,बुनाई - गनिटिं ,फेल्टिंग ,क्रोचेटिंग, इत्यादि। कपड़े बुननेके उद्योग को हथकरघा, पावरलूम और मिल-मेड सेक्टर (Handloom, Powerloom & Mill-made Sector) में वर्गीकृत किया गया है।

रंगाई और छपाई (Dyeing & Printing) -अर्थात वस्त्र पर रंगों का प्रयोग। वस्त्र निर्माण के विभिन्न चरणों में वस्त्रों को रंगाजाता है। रंगाई की यह प्रक्रियारेशे, धागे या वस्त्र किसी भी अवस्था में की जा सकती है। साथ ही इन रंगे हुये वस्त्रों पर हाथों या मशीन द्वाराछपाई की जाती है। जिस इकाई में रंगाई और छपाईवेट प्रोसेस का कार्य किया जाता है उसे वेट प्रोसेसिंग यूनिट (Wet Processing Unit) कहा जाता है।

परिष्करण (Finishing)- यह वस्त्र निर्माण की अंतिम प्रक्रिया है जिसमें वस्त्रों के स्वरूप को उन्नत और आकर्षक बनाया जाता है। ये प्रक्रियायें अंतिम उत्पाद के गुणों को बढ़ाने के लिए रासायनिक या यांत्रिक रूप से दी जाती हैं। ऐसी इकाइयों को परिष्करण इकाइयों (Finishing Unit) के रूप में जाना जाता है।

वस्त्र का उद्गम एवं इतिहास -वस्त्र का इतिहास लगभग उतना ही पुराना है जितना कि मानव सभ्यता का और समय के साथ वस्त्र के इतिहास ने खुद को समृद्ध किया है। वैदिक काल 1500 और 500 ईसा पूर्व के बीच की अवधि थी। वेद-पुराणों में उल्लेख है कि ऋषि-मुनि शरीरआवरण केरूप में पशुओं की खालों का प्रयोगकरते थे। वस्त्रों के उपयोग का सबसे पहला प्रमाण ऋग्वेद में मिलता है। इस समय में पहना जाने वाला वस्त्र मुख्य रूप से पूरे शरीर के चारों ओर लपेटा हुआ रहता था। ऐतिहासिक तथ्यों से सिद्ध हो चुका है कि भारत ही कपास की जन्मभूमि है। मोहन जोदड़ो की खुदाई में मिट्टी के पात्रों और मूर्तियों के चारों ओर कपास लिपटी हुई प्राप्त हुई थी। ढाका के वस्त्र शबनम,आबे-रवां तथा मलमल के वस्त्र इतने सूक्ष्म और बारीक़ होते थे, कि आठ से दस तह के बाद भी पारदर्शी रहते थे। तथा वस्त्र के पूरे थान को अंगूठी में से निकाला जा सकता था। आठ से दस हज़ार वर्ष पूर्व पाषाण युग में स्विस लेक के निवासी (Swiss-Lake-dwellers) जो यूरोप के न्योलिथिक (Neolithic) जाति के थे, लिनन का प्रयोग मछली फसाने की (Fish-Line) तथा जाल (Fishnets) बनाने में करते थे। मिस्र में लिनन की कताई और बुनाई की कला 3400 ईसा पूर्व में विकसित हुई। मिस्र में फराह (Faroah) के मकबरे में लिनन निर्माण की कला चित्रों से दर्शाई गयी है। ये चित्र ईसा से 2500 वर्ष पूर्व के हैं। भारत में, बौद्धकाल में बौद्ध-भिक्षु भी लिनन वस्त्र के बने लबादे पहनते थे। चीन में ढाई हज़ार वर्ष पूर्व सबसे पहले सिल्क का रेशा प्रयोग में लाया गया। विश्व में एशिया महाद्वीप में सिल्क का उत्पादन सर्वाधिक होता है। भारत में रेशम के उत्पादन के लिए मैसूर और जम्मू-कश्मीर प्रसिद्द हैं। बनारस

की सिल्क साड़ियों का शादी-विवाह में विशेष रूप से महत्व है। बिहार, बंगाल एवं छत्तीसगढ़ कोसा (Tussar) का उत्पादन होता है। छत्तीसगढ़ का कोसा बहुत प्रसिद्द और प्रचलन में है। ओडिसा, चेन्नई, कर्नाटक और हैदराबाद में भी सिल्क का निर्माण होता है।

18वीं और 19वीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति एवं मशीनों की खोज ने विभिन्न सिंथेटिक फाइबर जैसे- नायलॉन इत्यादि की खोजों ने कपड़ा उत्पादों के लिए एक व्यापक बाजार विकसित किया और धीरे-धीरे नए संश्लेषित रेशों का आविष्कार हुआ। वर्तमान में गुजरात का पटोला, बनारस एवं हैदराबाद के ब्रोकेड वस्त्र, तमिलनाडु की पोचमपल्ली साडी, ओडिसा काइकट, बंगाल की बालूचरी, महाराष्ट्र की पैठनी साड़ी मध्यप्रदेश के चंदेरी एवं माहेश्वरी वस्त्र एवं साड़ियाँ अत्यंत प्रचलन में हैं। भैरवगढ़ छपाई (बाटिक कला), राजस्थान में शिफॉन वस्त्रों पर की जाने वाली बांधनी कला (Tie & Dye) राजघरानों के वस्त्रों का वैभव का प्रतीक था। विभिन्न राज्यों में होने वाली ठप्पा छपाई (Block printing) सदा ही प्रचलन में रही हैं ओर वर्तमान में भी इन वस्त्रों की बेहद मांग है। भोपाल के ज़रदोजी कढ़ाई के बने बटुए ओर वस्त्र देश-विदेश में अत्यंत प्रचलित हैं और इनकी बेहद मांग है।

वस्त्र की परिभाषा (Definition of Textile)-(i) टेक्सटाइल यह शब्द लैटिन भाषा के “टेक्सटाइलिस” और फ्रेंच भाषा के “टेक्सर” से लिया गया है, जिसका अर्थ है "बुना हुआ" ,“बुनने योग्य”,“बुनाई करना", (“Woven”, “capable of being woven”, “to weave”) और यह मूल रूप से केवल बुने हुए कपड़ों को व्यक्त करता है। (ii) टेक्सटाइलको हम इस तरह से भी परिभाषित कर सकते हैं कि कोई भी फिलामेंट, रेशेया धागे जिनसे कपड़ा बनाया जा सकता है। (iii) कोई भी कपड़ा या वस्त्र उत्पाद जो बुनाई, निटिंग या फेल्टिंग द्वारा उत्पादित किया गया हो।

वस्त्र शब्दावली(Textile Terminology)-(i)Abrasion(घिसाव)-घर्षण के कारण कपड़े की सतह का घिस जाना।(ii)Absorbency (अवशोषण) - रेशों (फाइबर) के नमी ग्रहण करनेकी क्षमता।(i)Bleaching(विरंजन) - कपड़े में प्राकृतिक और कृत्रिम अशुद्धियों को दूर करने की प्रक्रिया ताकि रंगाई और छपाई के पूर्व वस्त्र को श्वेत एवं उज्जवल बनाया जा सके।(iii)Blending(सम्मिश्रण)- कताई प्रक्रिया में दो या दो से अधिक तंतुओं का संयोजन।(iv)Bonded Fabric (बोनडेडवस्त्र)- रेशों की परतों का एक दूसरे से चिपकने वाली सामग्री के द्वाराबंधे होना। या थर्मोप्लास्टिक फाइबर की क्रिया द्वारा बंधना।(v)Carding(कार्डिंग)- रेशों को एक दूसरे से अलग करने की प्रक्रिया, उन्हें एक पतली परत में समानांतर बिछाना।(vi)Combing(कॉम्बिंग)-छोटे रेशों को अलग कर समान, सघन, महीन और चिकने धागों का उत्पादित करने की प्रक्रिया।(vii)Crocking(क्रॉकिंग)-वस्त्र सेरंजक के निघर्षण (मिटने) की प्रवृत्ति।(viii)Dyeing(रंगाई)- रेशों, धागों या कपड़ों को प्राकृतिक या संश्लेषित रंगों से रंगने की प्रक्रिया।(ix)Elasticity (प्रत्यास्था) रेशो, धागों और कपड़ों की विशेषता जिसमे उन्हें खींचे जाने के बाद वे पुनः अपने मूल आकार में लौट आये।(x)Embossing) एम्बॉसिंग) - गर्म उभरे डिज़ाइन वाले रोलर्स के बीच से कपड़े को पास करके कपड़े में उभरी हुई डिज़ाइन को बनाने की प्रक्रिया।(xi)Felting(फेल्टिंग)- ऊन के रेशों का स्वभाविक गुण जिसमे घर्षण, गर्मी, नमी, दबाव के अधीन ऊनी रेशेचटाई या फेल्ट में परिवर्रतित हो जाते है।(xii)Filament(फिलामेंट)- रेशम या संश्लेषित रेशों का इकहरा रेशा (single strand),जो कि रेशम के कीड़े द्वारा या स्पिनरनेट से निकाला जाता है(xiii)Grain- (ग्रेन) ताने और बाने के धागे एक बुने हुए कपड़े की दिशा रेखा (grain) बनाते हैं।सीधी लंबवत् ग्रेन का अर्थ है कि ताने के धागे कपड़े की किनारी, या सेल्वेज के समानांतर होते हैं।(xiv)Jacquard(जैक्वार्ड)- एक जटिल पैटर्न और डिज़ाइन वाला बनावटी वस्त्र जिसे जेक्वार्ड करघे पर बुना जाता हैं।(xv)Knitting- (निटिंग) सुइयों द्वारा फंदों की एक श्रृंखलाको निर्मित कर,एक या एक से अधिक धागों के फंदों में अंतरगथन (interlocking) केद्वारा कपड़ा बनाना।(xvi)Mercerization(मर्सराइजेशन)- इस प्रक्रिया से सूती वस्त्रों की शक्ति, चमक, अवशोषकता और रंग ग्रहण करने की क्षमता बढ़ जाती है।(xvii)Pile fabric(रोयेंदार वस्त्र)-ऐसे वस्त्र जिनकी सीधी तरफ कटे या बिना कटे फंदे होते हैं। मखमल कटे हुए फंदे तथा टरकिश तौलिया (Turkish towel)बिना कटे हुए फंदे के उदाहरण है।(xviii)Pilling(पिलिंग)- अनेक बार परिधान पहनने के बाद धागे या वस्त्र की सतह पर छोटे-छोटे गोले या रेशों के गुच्छे बनने की प्रवृत्ति।(xix)Printing(छपाई)-कपड़े पर एक निश्चित डिजाइन या पैटर्न में रंग लगाने की विधि।(xx)Resiliency(लचीलापन)- रेशों कोदबाने या कुचलने के बाद रेशों का स्वयं अपने आप अपनी मूल स्थिति में वापस आने की प्रवृति।(xxi)Silk Cocoon (रेशम का कोकून)- रेशम के कीड़ों द्वारा बनाया गया आवरण जो रेशम के फिलामेंट का स्रोत होता है।(xxii)Staple(स्टेपल)- किसी भी रेशे की लंबाई को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द जोधागा बनाने के लिए घुमाव (twist) और कताई हेतु आवश्यक होता है।(xxiii)Tensile Strength (तन्यतासामर्थ्य)- एक धागे या कपड़े द्वारा भार या तनाव कोसहने की क्षमता। उच्च तन्यता सामर्थ्यका

अर्थ है मजबूत धागे या कपड़े।(xxiv)Thermoplastic(थर्मोप्लास्टिक)- गर्म ताप के कारण मुलायम होने का गुण तथा सामान्य तापमान पर कठोर।(xxv)Warp (ताना)- बुने हुये वस्त्रों के लंबवत् धागे।(xxvi)Weft (बाना) - बुने हुये वस्त्रों के आड़े।

सारांश - आज के परिदृश्य में 'टेक्सटाइल' शब्द के अंतरगत उन सभी उत्पादों को शामिल किया जाता है जो वस्त्र की मूल इकाई रेशे अर्थात फाइबर से बने होते हैं। रेशा (फाइबर) वस्त्र की सूक्ष्मतम इकाई हैं, कोई भी फिलामेंट, रेशे या धागे जिनसे कपड़ा बनाया जा सकता है। कोई भी कपड़ा या वस्त्र उत्पाद जो बुनाई, निटिंग या फेल्टिंग द्वारा उत्पादित किया गया हो 'टेक्सटाइल' मना जाता है . रेशा (Fiber)- यह वस्त्र की सबसे छोटी और बुनियादी इकाई है। इन्हे प्राप्ति स्त्रोतों के आधार पर दो भागों मेंवर्गीकृत किया गया है - प्राकृतिक रेशे एवं मानव निर्मित रेशे।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी -

सत्संगत्वे निस्संगत्वं,निस्संगत्वे निर्मोहत्वं।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वंनिश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तिः॥

श्रीमद्भगवतगीताः

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः॥

जो कर्ता आसक्ति से युक्त कर्मों के फल को चाहने वाला और लोभी है तथा दूसरों को कष्ट देने के स्वभाववाला, अशुद्धाचारी और हर्ष-शोक से लिप्त है वह राजस कहा गया है॥

आयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठोनैष्कृतिकोऽलसः।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते॥

जो कर्ता अयुक्त, शिक्षा से रहित घमंडी, धूर्त और दूसरों की जीविका का नाश करने वाला तथा शोक करने वाला, आलसी और दीर्घसूत्री है वह तामस कहा जाता है॥

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं श्रृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय॥

हे धनंजय ! अब तू बुद्धि का और धृति का भी गुणों के अनुसार तीन प्रकार का भेद मेरे द्वारा सम्पूर्णता से विभागपूर्वक कहा जाने वाला सुन॥

प्रवत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी॥

हे पार्थ ! जो बुद्धि प्रवृत्तिमार्गऔर निवृत्ति मार्ग को कर्तव्य और अकर्तव्य को, भय और अभय को तथा बंधन और मोक्ष को यथार्थ जानती है- वह बुद्धि सात्त्विकी है॥

रामचरितमानस

माल्यवंत अति जरठ निसाचर। रावन मातु पिता मंत्री बर॥
बोला बचन नीति अति पावन। सुनहु तात कछु मोर सिखावन॥

माल्यवंत अत्यंत बूढ़ा राक्षस था। वह रावण की माता का पिता (अर्थात् उसका नाना) और श्रेष्ठ मंत्री था। वह अत्यंत पवित्र नीति के वचन बोला- हे तात! कुछ मेरी सीख भी सुनो-

जब ते तुम्ह सीता हरि आनी। असगुन होहिं न जाहिं बखानी॥
बेद पुरान जासु जसु गायो। राम बिमुख काहुँ न सुख पायो॥

जब से तुम सीता को हर लाए हो, तब से इतने अपशकुन हो रहे हैं कि जो वर्णन नहीं किए जा सकते। वेद-पुराणों ने जिनका यश गाया है, उन श्री राम से विमुख होकर किसी ने सुख नहीं पाया॥

हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान।
जेहिं मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान॥

भाई हिरण्यकशिपु सहित हिरण्याक्ष को बलवान् मधु-कैटभ को जिन्होंने मारा था, वे ही कृपा के समुद्र भगवान् (रामरूप से) अवतरित हुए हैं॥

आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ॥

श्री रामजी से आज्ञा माँगकर, अंगद आदि वानरों के साथ हाथों में धनुष-बाण लिए हुए श्री लक्ष्मणजी क्रुद्ध होकर चले॥

छतज नयन उर बाहु बिसाला। हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला॥
इहाँ दसानन सुभट पठाए। नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए॥

उनके लाल नेत्र हैं, चौड़ी छाती और विशाल भुजाएँ हैं। हिमाचल पर्वत के समान उज्ज्वल (गौरवर्ण) शरीर कुछ ललाई लिए हुए है। इधर रावण ने भी बड़े-बड़े योद्धा भेजे, जो अनेकों अस्त्र-शस्त्र लेकर दौड़े॥

लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा। भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा॥
बीरघातिनी छाड़िसि साँगी। तेजपुंज लछिमन उर लागी॥
मुरुछा भई सक्ति के लागें। तब चलि गयउ निकट भय त्यागें॥

घायल वीर कैसे शोभित हैं, जैसे फूले हुए पलास के पेड़। लक्ष्मण और मेघनाद दोनों योद्धा अत्यंत क्रोध करके एक-दूसरे से भिड़ते हैं॥ तब उसने वीरघातिनी शक्ति चलाई। वह तेजपूर्ण शक्ति लक्ष्मणजी की छाती में लगी। शक्ति लगने से उन्हें मूर्छा आ गई। तब मेघनाद भय छोड़कर उनके पास चला गया॥

मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ।
जगदाधार सेष किमि उठै चले खिसिआइ॥

मेघनाद के समान सौ करोड़ (अगणित) योद्धा उन्हें उठा रहे हैं, परन्तु जगत् के आधार श्री शेषजी (लक्ष्मणजी) उनसे कैसे उठते? तब वे लजाकर चले गए॥

व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर। लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर॥
तब लगि लै आयउ हनुमाना। अनुज देखि प्रभु अति दुख माना॥

व्यापक, ब्रह्म, अजेय, संपूर्ण ब्रह्मांड के ईश्वर और करुणा की खान श्री रामचंद्रजी ने पूछा- लक्ष्मण कहाँ है? तब तक हनुमान् उन्हें ले आए। छोटे भाई को (इस दशा में) देखकर प्रभु ने बहुत ही दुःख माना॥

जामवंत कह बैद सुषेना। लंकाँ रहइ को पठई लेना॥
धरि लघु रूप गयउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरंता॥

जाम्बवान् ने कहा- लंका में सुषेण वैद्य रहता है, उसे लाने के लिए किसको भेजा जाए? हनुमान्‌जी छोटा रूप धरकर गए और सुषेण को उसके घर समेत तुरंत ही उठा लाए॥

राम पदारबिंद सिर नायउ आइ सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन॥

सुषेण ने आकर श्री रामजी के चरणारविन्दों में सिर नवाया। उसने पर्वत और औषध का नाम बताया, (और कहा कि) हे पवनपुत्र! औषधि लेने जाओ॥

देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि।
बिनु फर सायक मारेउ चाप श्रवन लगि तानि॥

भरतजी ने आकाश में अत्यंत विशाल स्वरूप देखा, तब मन में अनुमान किया कि यह कोई राक्षस है। उन्होंने कान तक धनुष को खींचकर बिना फल का एक बाण मारा॥

परेउ मुरुछि महि लागत सायक। सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
सुनि प्रिय बचन भरत तब धाए। कपि समीप अति आतुर आए ॥

बाण लगते ही हनुमान्‌जी 'राम, राम, रघुपति' का उच्चारण करते हुए मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। प्रिय वचन (रामनाम) सुनकर भरतजी उठकर दौड़े और बड़ी उतावली से हनुमान्‌जी के पास आए ॥

बोध वाक्य: "जल द्वारा स्नान करने पर केवल शरीर शुद्ध होता है। मन सत्य से पवित्र होता है। ज्ञान के द्वारा बुद्धि शुद्ध होती है। " – स्वामी विरजानंद

बोध कथा:-

स्वयं को पहचानें

एक जंगल में एक शेर का बच्चा अपने परिवार से बिछड़ गया। उसे एक गडरिया ने देखा, तो अपने घर उठा लाया। उसकी भेड़ों के बीच वह भी पलने लगा उसकी आदतें भी उन जैसी ही हो गयी। वह कुत्ते भेड़िए आदि को देखकर डरने लगा। एक दिन एक शेर ने भेड़ों के झुंड पर हमला बोला और दो भेड़ों को उठाकर ले जाने लगा। तभी उसकी नजर उस शेर के बच्चे पर पड़ी। वह भी अन्य भेड़ों के साथ डर कर भाग रहा था। शेर ने उसे पकड़ लिया और उससे पूछा कि तू कौन है?

वह बच्चा तो डर रहा था उसके मुंह से आवाज ही नहीं निकली। तब शेर उसे नदी के पास लाया और कहा-देख तेरी और मेरी सूरत एक जैसी हैं तू भेड़ का नहीं, शेर का बच्चा है। गर्दन उठा सीना फुला और मुंह खोलकर दहाड़ मार। जैसे ही शेर के बच्चे ने ऐसा किया तो उसकी आवाज से जंगल गूंज उठा। अब उसे अपनी वास्तविकता समझ में आयी। उसने भेड़ों का साथ छोड़ा और शेरों के साथ रहने लगा। यही स्थिति राष्ट्रीय समाज की है उसे अपनी शक्ति और गौरव का पता ही नहीं इस आत्मविस्मृति को मिटा कर उसे अपनी असली स्थिति की याद दिलाने का प्रयास ही प्रधानमंत्री जी कर रहे हैं।

मासिक गीत / गान :

हमको अपनी भारत की माटी से अनुपम प्यार है,
माटी से अनुपम प्यार है, माटी से अनुपम प्यार है ॥

इस धरती पर जन्म लिया था दसरथ नंन्दन राम ने,
इस धरती पर गीता गायी यदुकुल– भूषण श्याम ने।
इस धरती के आगे झुकता मस्तक बारम्बार है ॥
हमको अपनी भारत की माटी से अनुपम प्यार है..........

इस धरती की गौरव गाथा गायी राजस्थान ने,
इसे पुनीत बनाया अपने वीरों के बलिदान ने।
मीरा के गीतों की इसमें छिपी हुई झंकार है।।
हमको अपनी भारत की माटी से अनुपम प्यार है..........

कण-कण मंदिर इस माटी का कण– कण में भगवान् है,
इस माटी से तिलक करो यह मेरा हिन्दुस्तान है।
हर हिन्दू का रोम रोम भारत का पहरेदार है॥
हमको अपनी भारत की माटी से अनुपम प्यार है ,
माटी से अनुपम प्यार है , माटी से अनुपम प्यार है ॥

---00---

अप्रैल

चैत्र – श्री वल्लभाचार्य जी ने अपने जीवन में हिमालय से कन्याकुमारी तथा द्वारका से जगन्नाथपुरी तक तीन बार भारत माता के दर्शन किये। जिसमें उन्हें उन्नीस वर्ष लगे। तीनों यात्राएँ क्रमश: सात एवं छह-छह वर्ष में पूरी हुई। सभी यात्राएँ भारत में धर्म क्रान्ति तथा जनता में दैवी संस्कार जागृति करने के प्रयोजनार्थ थीं। ऐसा माना जाता है कि पहली यात्रा उन्होंने बारह वर्ष की उम्र में प्रारम्भ की थी। भारतवर्ष में यात्राओं के दौरान जहाँ चौरासी स्थानों पर आप नेविश्राम किया, वे 84 बैठकों के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस सम्पूर्ण यात्रा में वे अपने मधुर कंठ से श्रीमद्भगवत की कथा का जनता को रसपान कराते रहे। इसी बीच मथुरा के निकट श्रीनाथ जी का स्वरूप प्रकट होने से वहाँ मंदिर की स्थापना की और यहीं से पुष्टिमार्गीय सेवा पद्यति का प्रादुर्भाव हुआ।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम :(i) 14 अप्रैल 1563, गुरु अर्जुनदेव सिक्खों के पांचवे गुरु (ii) 14 अप्रैल 1891, डॉ.भीमराव आंबेडकर (iii) 15 अप्रैल 1469, गुरु नानकदेव सिखों के प्रथम गुरु (आदि गुरु) (iv) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित औ रसंरक्षित करे।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

सोलर फोटोवॉल्टिक -1

अर्धचालक

अर्धचालक वे पदार्थ होते है जो इलेक्ट्रॉनों को अपने माध्यम से गुजरने की अनुमति प्रदान करते हैं जिससे कि इलेक्ट्रॉनों को धातु के समान बिजली का संचालन करने में आसानी हो। अर्धचालक दो प्रकार के होते है: (i) आतंरिक अर्धचालक (ii) बाह्य अर्धचालक

आतंरिक अर्धचालक: वे अर्धचालक जिनमे कोई मुक्त इलेक्ट्रॉन उपलब्ध नहीं होते हैं एवं सभी सह-संयोजक बंधन पूर्ण होते हैं शुद्ध अर्धचालक कहलाते हैं इन्हें "आंतरिक अर्धचालक" भी कहा जाता है। एक शुद्ध अर्धचालक एक इन्सुलेटर जैसा व्यवहार करता है। शुद्ध अर्धचालक कमरे के तापमान या तापमान मे वृद्धि के साथ विचित्र व्यवहार करता है। अर्धचालक का प्रतिरोध तापमान के साथ कम होता जाता हैं।

बाह्य अर्धचालक : जब अर्धचालक मे थोड़ी मात्रा मे धात्विक अशुद्धता को मिलाया जाता है तो यह धारा प्रवाह के गुणों को प्राप्त कर लेता है इसलिए इसे अशुद्धता अर्धचालक या ब्राह्य अर्धचालक कहा जाता है। किसी अर्धचालक को ब्राह्य (अशुद्धता) अर्धचालक बनाने के लिए अशुद्धता मिलाने की प्रक्रिया को डोपिंग कहा जाता है। अशुद्ध अर्धचालक दो प्रकार के होते हैं। (i) N-प्रकार अर्धचालक (ii) P- प्रकार अर्धचालक।

N- प्रकार अर्धचालक: अर्धचालक में अल्प मात्रा में भी अशुद्धियां को मिलाने पर N प्रकार के सेमीकंडक्टर का निमार्ण किया जा सकता है जिसके कारण चालन बैंड में इलेक्ट्रॉनों की सांद्रता बढ़ जाती है और बैलेंस बैंड में होल की सांद्रता अधिक हो जाती है जिसके फलस्वरूप फर्मी स्तर चालन बैंड के नीचे की ओर शिफ्ट हो जाता है। इस प्रकार के अर्धचालक बनाने के लिए पंच संयोजी (Pentavalent) परमाणु की आवश्यकता होती है जो इस प्रकार है जैसे आर्सेनिक, एंटीमनी, फास्फोरस, आदी। इस प्रकार के परमाणुओं में पांच वैलेंस इलेक्ट्रॉन होते हैं जिन्हें डोनर परमाणु कहते हैं। **P- प्रकार अर्धचालक**: जब अर्धचालक परमाणु में अशुद्ध परमाणु को मिलाया जाता है तो P- प्रकार के अर्धचालक का निर्माण होता है | इस प्रक्रिया में संयोजी बैंड में होल्स की संख्या अधिक होती हैं जिसके फलस्वरूप फर्मी स्तर संयोजकता बैंड के निकट चला जाता जाता है। इस प्रकार के अर्धचालक बनाने के लिए त्रिसंयोजक (Trivalent) परमाणु की आवश्यकता होती है जो इस प्रकार है जैसे, बोरॉन, एल्युमिनियम आदी इस प्रकार के परमाणुओं में तीन संयोजकता इलेक्ट्रॉन होते हैं जिन्हें एक्सेप्टर परमाणु कहते हैं।

सौलर फोटोवोल्टिक सिद्धांत:सोलर ऊर्जा ने प्रकाशीय निकाय में सभी का ध्यान आकर्षित किया हैं | सोलर फोटोवॉल्टिक सिस्टम (PV), सौर ऊर्जा को सीधे विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करता है जिसे सोलर सेल के नाम से भी जाना जाता है। "फोटोवोल्टिक या सौर सेल" एक अर्धचालक उपकरण है। 'फोटोवोल्टिक प्रभाव' पहली बार 1839 में बेकरेल द्वारा देखा गया था। सर बेकरेल ने अपने प्रयोगो के माध्यम से बताया की जब एक विद्युत रासायनिक सेल के एक तरफ प्रकाश को निर्देशित किया जाता है तो

एक वोल्टेज का निर्माण होता है। 1950 के दशक के उत्तरार्ध में, सिलिकॉन सौलर सेल्स को बनाने का मुख्य उद्देश बिजली जनरेटर के लिए पर्याप्त रूप से रूपांतरण दक्षता के साथ बनाया था। फोटोवोल्टिक के प्रमुख उपयोग इस प्रकार हैं (i)अंतरिक्ष उपग्रहों(ii)दूरस्थ रेडियो संचार बूस्टर स्टेशनों (iii)समुद्री चेतावनी रोशनी। सौलर ऊर्जा से चलने वाले वाहन और बैटरी चार्जिंग, सोलर पीवी पावर के हाल के दिलचस्प अनुप्रयोगों में से कुछ हैं।जब सूर्य का प्रकाश अर्धचालक जैसे सिलिकॉन 1.1 eV के निश्चित ऊर्जा अंतराल पर आपतीत होता है तो उसके संयोजी बैंड के इलेक्ट्रॉन ऊर्जा पाकर चालन बैंड में चले जाते हैं और इसके फलस्वरूप संयोजी बैंड में होल्स की संख्या बढ़ जाती है इस प्रक्रिया में फोटॉन 'इलेक्ट्रॉन-होल' युग्म (Pair) उत्पन्न करते हैं एवं शेष ऊर्जा उष्मा के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं यह ऊष्मा संयोजी बैंड की ऊपरी सतह से इलेक्ट्रान-होल्स युग्म उत्पन्न करती हैं जिससे इलेक्ट्रान-होल्स युग्म की संख्या में वृद्धि होती हैं। पूरे सेल में एक संभावित अंतर स्थापित किया जाता है जिससे की एक बाहरी लोड (load) के माध्यम से करंट प्राप्त हो सके।

सौलर सेल्स के प्रकार : लागत को कम करने और दक्षता को अनुकूलित करने के लिए सौलर सेल विभिन्न सामग्रियों और विभिन्न संरचनाओं से बने होते हैं। बाजार में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की सौलर सेल सामग्री हैं जैसेः सिंगल क्रिस्टल, पॉलीक्रिस्टलाइन और अमोर्फौस सिलिकॉन, मिश्रित पतली सामग्री और अर्धचालक अवशोषित परत जो विशेष अनुप्रयोगों के लिए अत्यधिक कुशल सेल्स प्रदान करती है। सोलर सेल के दो मुख्य प्रकार है जैसे : (i) **सिलिकॉन फोटोवोल्टिक सेल** (सिंगल क्रिस्टल सौलर सेल): एक सिलिकॉन फोटोवोल्टिक सेल की मुख्य विशेषता उच्च शुद्धता वाले सिलिकॉन क्रिस्टल का एक पतला वेफर है जो बोरॉन की एक अल्प मात्रा के साथ डोप किया जाता है। सिलिकॉन फोटोवोल्टाइक सेल्स को बहुत शुद्ध सिलिकॉन के उपयोग की जरुरत होती है। सिलिकॉन का सबसे अच्छा स्रोत सिलिका (सिलिकॉन डाइऑक्साइड) है, जो प्रकृति में क्वार्ट्ज रॉक और रेत के रूप में प्रचुर मात्रा में होता है। क्वार्ट्ज चट्टानों को 'मेटलर्जिकल ग्रेड' सिलिकॉन का उत्पादन करने के लिए कार्बन-आधारित एजेंटों की मदद से एक चाप-भट्ठी (arc-furnace) में कम किया जाता है। **पॉलीक्रिस्टलाइन सिलिकॉन सेल** : पॉलीक्रिस्टलाइन सिलिकॉन सेल की तुलना में, सिंगल क्रिस्टल सिलिकॉन सेल के उत्पादन की लागत काफी अधिक है। पॉलीसिलिकॉन को पिघले हुए सिलिकॉन बाथ से खींचे गए पतले रिबन में प्राप्त किया जाता है और बड़े आकार के क्रिस्टलीय प्राप्त करने के लिए बहुत धीरे-धीरे ठंडा किया जाता है। सेल्स को सावधानी से बनाया जाता है ताकि ग्रेन बौन्दरिएस (grain boundaries) इलेक्ट्रॉनों के प्रवाह में कोई बड़ा हस्तक्षेप न करें और ग्रेन सेल्स की मोटाई से आकार में बड़ा हो। निम्नलिखित तीन डिज़ाइन हैं जिनकी सहयता से पॉलीक्रिस्टलाइन सिलिकॉन सौलर सेल का निर्माण किया जाता है जैसे: (i) **पीएन जंक्शन सेल** : ऐसी सेल में, कांच, ग्रेफाइट, धातुकर्म ग्रेड सिलिकॉन और धातु जैसे सब्सट्रेट पर रासायनिक वाष्प जमाव द्वारा एक पॉलीक्रिस्टलाइन सिलिकॉन फिल्म जमा की जाती है। (ii) **धातु इन्सुलेटर अर्धचालक एमआईएस सेल्स :** इस प्रकार के सेल को धातु और अर्धचालक के बीच SO2 की एक पतली इन्सुलेट परतडालकर विकसित किया जा सकता है।(iii) **ऑक्साइड-इन्सुलेटर अर्धचालक सेल्स का संचालन**

सौलर सेल्स का वर्गीकरण : सौलर सेल्स को निम्न के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है:(i)सेल का आकार(ii)सक्रिय सामग्री की मोटाई (iii) जंक्शन संरचना का प्रकार (iv) सक्रिय सामग्री का प्रकार।

बिजली उत्पादन के लिए बुनियादी फोटोवोल्टिक प्रणाली (Basic Photovoltaic system for power generation): एक सौर सेल को बनाने के लिए भौतिकी P-N जंक्शन का उपयोग किया जाता है। सौलर सेल द्वारा प्रदान किए जाने वाला वोल्टेज, करंट और बिजली निम्नलिखित कारकों से प्रभावित होती है:(i) सूर्य के प्रकाश की स्थिति, तीव्रता, तरंग दैर्ध्य और आपतन कोण आदि (ii) जंक्शन, तापमान, समाप्ति, आदि की शर्तें(iii) बाहरी प्रतिरोध।सोलर सेल्स से प्राप्त होने वाली अधिकतम शक्ति (Pmax) को निम्नलिखित समीकरण द्वारा प्रदर्शित किया जाता है :

$$P_{max} = V_{max} \times I_{max}$$ जहां, V_{mp} और I_{mp} अधिकतम पावर पॉइंट पर वोल्टेज और करंट हैं।

सोलर सेल्स का दैनिक जीवन में उपयोग : सोलर स्ट्रीट लाइट एक प्रकार का फोटोवोल्टेक बिजली उत्पन्न करने वाला उपकरण है जिससे कई लाभ है जैसे: (i) आकार में कॉम्पैक्ट (ii) अत्यधिक टिकाऊ (iii) अत्यधिक कुशल (iv) कम रखरखाव फोटोवोल्टेक मॉड्यूल को प्रकाश संरचना पर रखा जाता है जिसमे पीवी मॉड्यूल एक रिचार्जेबल बैटरी को चार्ज करता है जो रात के समय एक कॉम्पैक्ट फ्लोरोसेंट लाइट /प्रकाश उत्सर्जक डायोड /लैंप (Lamp) को शक्ति प्रदान करती है। पीवी मॉड्यूल में मोनो-क्रिस्टलीय सिलिकॉन सौलार सेल्स का उपयोग किया जाता है जो बैटरी (लेड-एसिड बैटरी) को चार्ज करने के लिए दिन के समय सौलर ऊर्जा को डीसी पावर में परिवर्तित करते हैं।

सोलर हाई मास्ट : पारंपरिक प्रकाश व्यवस्था की तुलना में हाई मास्ट प्रकाश व्यवस्था बहुत बड़े स्थान से ऊंचाई के अनुपात को प्राप्त करता है। यह प्रकाश स्तंभों की आवश्यकता के बिना बड़े क्षेत्रों को रोशनी प्रदान करता है। प्रकाश उत्सर्जक डायोड हाई मास्ट लाइट का काफी जगह उपयोग होता है जैसे यातायात की सुरक्षा, मार्गदर्शन प्रदान करना, यात्रियों के लिए सुरक्षित एवं आरामदायक परिवेश प्रदान करता है। साथ ही दुर्घटनाओं और अपराधों को कम करने में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सोलर होम लाइट : सोलर होम लाइट की सहायता से उन स्थानों पर बिजली भेजी जा सकती है जहां बिजली उपलब्ध नहीं एवं महंगी है।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी -

वयसि गते कः कामविकारः,शुष्के नीरे कः कासारः।
क्षीणे वित्ते कः परिवारः,ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः॥

श्रीमद्भगवतगीता

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी॥

हे पार्थ! मनुष्य जिस बुद्धि के द्वारा धर्म और अधर्म को तथा कर्तव्य और अकर्तव्य को भी यथार्थ नहीं जानता, वह बुद्धि राजसी है॥

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥

हे अर्जुन! जो तमोगुण से घिरी हुई बुद्धि अधर्म को भी 'यह धर्म है' ऐसा मान लेती है तथा इसी प्रकार अन्य संपूर्ण पदार्थों को भी विपरीत मान लेती है, वह बुद्धि तामसी है॥

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी॥

हे पार्थ! जिस अव्यभिचारिणी धारण शक्ति से मनुष्य ध्यान योग के द्वारा मन, प्राण और इंद्रियों की क्रियाओं को धारण करता है, वह धृति सात्त्विकी है॥

यया तु धर्मकामार्थान्धत्या धारयतेऽर्जुन।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी॥

परंतु हे पृथापुत्र अर्जुन! फल की इच्छावाला मनुष्य जिस धारण शक्ति के द्वारा अत्यंत आसक्ति से धर्म, अर्थ और कामों को धारण करता है, वह धारण शक्ति राजसी है॥

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी॥

हे पार्थ! दुष्ट बुद्धिवाला मनुष्य जिस धारण शक्ति के द्वारा निद्रा, भय, चिंता और दु:ख को तथा उन्मत्तता को भी नहीं छोड़ता अर्थात धारण किए रहता है- वह धारण शक्ति तामसी है॥

रामचरितमानस

उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी॥
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ॥

वहाँ लक्ष्मणजी को देखकर श्री रामजी साधारण मनुष्यों के अनुसार (समान) वचन बोले- आधी रात बीत चुकी है, हनुमान् नहीं आए। यह कहकर श्री रामजी ने छोटे भाई लक्ष्मणजी को उठाकर हृदय से लगा लिया॥

सकहु न दुखित देखि मोहि काउ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ॥

मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता॥

हे भाई! तुम मुझे कभी दुःखी नहीं देख सकते थे, तुम्हारा स्वभाव सदा से ही कोमल था। मेरे हित के लिए तुमने माता-पिता को भी छोड़ दिया और वन में जाड़ा, गरमी और हवा सब सहन किया॥

सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई॥

जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥

हे भाई! वह प्रेम अब कहाँ है? मेरे व्याकुलतापूर्वक वचन सुनकर उठते क्यों नहीं? यदि मैं जानता कि वन में भाई का विछोह होगा तो मैं पिता का वचन उसे भी न मानता॥

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा॥

अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता॥

पुत्र, धन, स्त्री, घर और परिवार- ये जगत् में बार-बार होते और जाते हैं, परन्तु जगत् में सहोदर भाई बार-बार नहीं मिलता। हृदय में ऐसा विचार कर हे तात! जागो॥

जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥

जैसे पंख बिना पक्षी, मणि बिना सर्प और सूँड बिना श्रेष्ठ हाथी अत्यंत दीन हो जाते हैं, हे भाई! यदि कहीं जड़ दैव मुझे जीवित रखे तो तुम्हारे बिना मेरा जीवन भी ऐसा ही होगा॥

जैहउँ अवध कौन मुहु लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई॥

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥

स्त्री के लिए प्यारे भाई को खोकर, मैं कौन सा मुँह लेकर अवध जाऊँगा ? मैं जगत् में बदनामी भले ही सह लेता। स्त्री की हानि से कोई विशेष क्षति नहीं थी॥

अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहिहि निठुर कठोर उर मोरा॥

निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम्ह प्रान अधारा॥

अब तो हे पुत्र! मेरे निष्ठुर और कठोर हृदय यह अपयश और तुम्हारा शोक दोनों ही सहन करेगा। हे तात! तुम अपनी माता के एक ही पुत्र और उसके प्राणाधार हो॥

सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। सब बिधि सुखद परम हित जानी॥

उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई॥

सब प्रकार से सुख देने वाला और परम हितकारी जानकर उन्होंने तुम्हें हाथ पकड़कर मुझे सौंपा था। मैं अब जाकर उन्हें क्या उत्तर दूँगा ? हे भाई! तुम उठकर मुझे सिखाते क्यों नहीं? ॥

प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर।

आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस॥

प्रभु के प्रलाप को कानों से सुनकर वानरों के समूह व्याकुल हो गए। हनुमान्‌जी आ गए, जैसे करुणरस में वीर रस आ गया हो॥

हरषि राम भेंटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।

तुरत बैद तब कीन्ह उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई॥

श्री रामजी हर्षित होकर हनुमान्‌जी से गले मिले। प्रभु परम सुजान और अत्यंत ही कृतज्ञ हैं। तब वैद्य (सुषेण) ने तुरंत उपाय किया, लक्ष्मणजी हर्षित होकर उठ बैठे॥

हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता

कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा॥

प्रभु भाई को हृदय से लगाकर मिले। भालू और वानरों के समूह सब हर्षित हो गए। फिर हनुमान्‌जी ने वैद्य को उसी प्रकार वहाँ पहुँचा दिया, जिस प्रकार वे उस बार उसे ले आए थे॥

बोध वाक्य:"तुम्हारा धर्म पौराणिक संस्कारों की धूल में छिप गया है। इन कालवाह्य संस्कारों की गंदी परतों को तोड़ फेंको। तुम्हारा सच्चा धर्म वैदिक धर्म है , जिस पर आरूढ होने से तुम फिर से विश्व विजयी हो सकते हो "- महर्षि दयानंद सरस्वती

बोध कथा:

यह कैसा धर्म ?

महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन और कर्ण का युद्ध हो रहा था, तो एक समय ऐसा था जब कर्ण के रथ का पहिया कीचड़ में धंस गया। वह शस्त्र रथ में ही रखकर नीचे उतरा और उसे निकालने लगा। यह देखकर भगवान कृष्ण ने अर्जुन को संकेत किया और उसने कर्ण पर वाणों की बौछार कर दी। इससे कर्ण बौखला गया। वह अर्जुन की निन्दा करने लगा, इस समय में निःशस्त्र हूं। ऐसे में मेरे ऊपर बाण चलाना अधर्म है। पर श्रीकृष्ण ने उसे मुंह तोड़ उत्तर दिया, आज तुम्हें धर्म याद आ रहा है, पर उस दिन तुम्हारा धर्म कहां गया था, जब द्रौपदी की साड़ी को भरी सभा में खींचा जा रहा था। जब अनेक महारथियों ने निहत्थे अभिमन्यु को घेरकर मारा था। तब तुम्हें धर्म की याद क्यों नहीं आयी ? श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपनी बाण वर्षा और तेज करने को कहा। परिणाम यह हुआ कि कर्ण ने थोड़ी देर में ही प्राण छोड़ दिये। यह इतिहास कथा बताती है कि धर्म का व्यवहार केवल धर्म पर चलने वालों के लिए ही होना चाहिए। दुष्टों को उन जैसी दुष्टता से दंड देना बिल्कुल गलत नहीं है।

मासिक गीत / गान :

युग युग से है अपने पथ पर देखो कैसा खड़ा हिमालय !
डिगता कभी न अपने प्रण से रहता प्रण पर अड़ा हिमालय !
जो जो भी बाधायें आईं उन सब से ही लड़ा हिमालय,
इसीलिए तो दुनिया भर में हुआ सभी से बड़ा हिमालय !

अगर न करता काम कभी कुछ रहता हरदम पड़ा हिमालय
तो भारत के शीश चमकता नहीं मुकुट–सा जड़ा हिमालय !
खड़ा हिमालय बता रहा है डरो न आँधी पानी में,
खड़े रहो अपने पथ पर सब कठिनाई तूफानी में !

डिगो न अपने प्रण से तो -सब कुछ पा सकते हो प्यारे !
तुम भी ऊँचे हो सकते हो छू सकते नभ के तारे !!
अचल रहा जो अपने पथ पर लाख मुसीबत आने में,
मिली सफलता जग में उसको जीने में मर जाने में !
(सोहन लाल द्विवेदी)

--00--

मई

वैशाख : राष्ट्र का अर्थ केवल भूमि का टुकड़ा और उस पर यहां-वहां से आकर रहने वाले कुछ लोगों का समूह मात्र नहीं है। इस राष्ट्र के लिए वहां के निवासियों का एक इतिहास एक परंपरा और उस भूमि के प्रति माता जैसा प्रेम भाव होना भी आवश्यक। और यह भाव भारतीय वांग्मय से प्राप्त होता है जहाँ आध्यात्मिकता और जीवन दृष्टि की तलाश प्रचीनकाल से चली आ रही है। भारतीय वांग्मय इतिहास की धरोहर हैं और वर्तमान का जीवन दृश्य जो प्राचीन बिम्ब के साथ हमारे सामने खड़ा होता है। भारतीय

वांग्मय की एक विशेषता यह भी है कि वह इतिहास शब्द को सार्थक करता चलता है। इतिहास दो शब्दों 'इति' और 'हास' से बना है। 'इति' का अर्थ होता है 'गति' और 'हास' का अर्थ होता है 'उल्लास'। अर्थात जो बांग्मय लोकजीवन में 'गति और उल्लास' दोनों प्रदान करता है वही कालजयी हो जाता है। हमारे वेद, उपनिषद कालजयी हैं। पुराण अपनी प्राचीनता को लिए जब नवीनता के साथ जुडक़र जीवन में 'गति और उल्लास' भरते हैं, तभी उनकी सार्थकता बढ़ती है। भारतीय वांग्मय को देखने समझने की इसी इतिहास दृष्टि ने उसे नित्यधीरे भारत की इसी प्राचीन दृष्टि-दर्शन धीरे-नूतन और चिरपुरातन बना के रखा है। आज बांग्मय- की ओर बढ़ रहा है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: (i) 9 मई रविन्द्र नाथ टैगोर जयंती (ii) 11 राष्ट्रीय प्रद्योगिकी दिवस (iii) 26 बुद्ध जयंती (iv) 31 तम्बाकू विरोधी दिवस (v) 24 मई 1907, महादेवी वर्मा दिवस (vi) 19 मई हिंदी हजारी प्रसाद द्विवेदी का निधन।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

स्वरोजगार के क्षेत्र

(1) रोजगार किसी भी राष्ट्र के लिए सबसे अधिक गंभीर चिंता का विषय है। बढती हुई जनसंख्या के साथ रोजगार का सृजन किस प्रकार हो यह एक चुनौती है। हम सभी जानते हैं कि आर्थिक संसाधन सीमित है। ऐसे में यदि युवा स्वंय रोजगार प्रदाता बन जाए तो निश्चित रुप से वे राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व का पालन करते हैं, साथ ही राष्ट्रीय आय व राष्ट्रीय उत्पादन में भी अपना योगदान देते है। यदि हम वर्तमान परिस्थितियों की बात करें तो गत दो वर्षों से संपूर्ण विश्व कोरोनामहामारी को झेल रहा है। कई युवाओं का रोजगार इसी वजह से समाप्त हुआ। ऐसे में स्वरोजगार जीविकोपार्जन का एक बेहतर क्षेत्र हैं। सरकार द्वारा भी आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के लिए अनेक प्रयत्न किये जा रहे हैं। देश स्वावलंबी आत्मनिर्भर कैसे होगा, इसके लिए जरुरी है कि हमारा युवा आत्मनिर्भर हो। सरकार द्वारा इस दिशा में बहुत से कार्य भी किए जा रहें हैं जैसे- Start-up India, Stand-up India, Make in India आदि। एक समय था जब भारत विश्व में अधिकांश वस्तुओं का सबसे बडा निर्यातक था। आज आवश्यकता है कि युवा स्वरोजगार के क्षेत्र मे आए और भारत को विश्व की सबसे बडी एवं मजबूत अर्थव्यवस्था बनाने में सहायता करें।

इसके लिए युवा अपनी शक्ति -सामर्थ्य की पहचान करे और साथ ही कमजोरियों को भी ध्यान में रखें। यदि इन दोनों की पहचान आपने कर ली और आपके पास पर्याप्त पूंजी है तो स्वरोजगार आपको अत्यन्त संतुष्टि देने वाला होगा। आप अपने हिसाब से समय प्रबंधन कर सकेंगें। आप अपने जुनून के लिए काम करेंगे और यह बात आपके काम के प्रति आपकी रुचि को दोगुना कर देगी। एक अलग प्रकार का संतोष इस बात का भी होता है कि आप अपने देश अपने समाज के काम आ रहे हैं। भारत आज सबसे युवा देश है। यहाँ स्वरोजगार की संभावनाएं भी अपार हैं। तकनीक और इंटरनेट के प्रयोग ने सभी को बहुत निकट कर दिया है और स्वरोजगार के नए आयम भी खोले हैं। पहले भारत में कृषि ही ऐसा क्षेत्र माना जाता था जहाँ स्वरोजगार था, लेकिन आज के समय में यदि व्यक्ति लीक से हटकर सोचता है तो उसकी अलग सोच ही स्वरोजगार का अवसर बन सकती है।

(2) स्वरोजगार के क्षेत्र : कुछ ऐसे क्षेत्र जो आज से युवाओं को स्वरोजगार के नए अवसर प्रदान कर सकतें हैं। उनकी यहाँ हम चर्चा करेंगे - (i) **App Development**–आज के समय में लगभग सभी लोग मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते हैं। इस कारण ऐप डेव्लॉपमेंट के क्षेत्र में बहुत संभावनाए है। इसमें हम दूर दराज के क्षेत्रों में भी काम कर सकते हैं। आज हर काम ऐप की सहायता से संभव है। यहाँ तक कि खाना आर्डर करना, दवा मंगाना आदि सभी काम ऐप की सहायता से हो रहे हैं। (ii) **Baking/ Cooking** – आज की भाग दौड़ की दुनिया में महिलाएं भी घर के बाहर काम कर रही हैं। समय की कमी के कारण वे बहुत सारी चीजें स्वयं बना नहीं पातीं। अतः यह भी एक ऐसा क्षेत्र है। जहाँ संभावनाऐं अपार हैं। आप अपना कुकिंग चैनल शुरु कर सकते हैं। या बेकिंग कुकिंग क्लासेस ले सकते हैं अपनी विधियों की किताब छाप सकते हैं। होटल आदि में फुड कन्सल्टेन्ट के रुप में भी काम कर सकते हैं। (iii) **Blogging ब्लॉगिंग** - लिखना स्वरोजगार का एक सबसे आसान क्षेत्र हैं। इसके लिए केवल एक लैपटॉप एवं इंटरनेट कनेक्शन की जरुरत हैं। ऐसे बहुत सारे क्षेत्र एवं टॉपिक हैं जिनपर ब्लॉग लिखे जा सकते है। हम अगर ऐसा भी कहे कि ब्लॉग लिखने से आप अपने विचारों को दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नही होगी। विज्ञापन इस प्रकार के स्वरोजगार से पैसा कमाने का एक अच्छा साधन हो सकतें हैं। (v) **बेव डिजाइनिंग** -वर्तमान परिस्थितियों में लगभग सभी कुछ ऑनलाइन या सोशल मीडिया पर हैं। इसी कारण सभी व्यवसायियों को भी अपने व्यवसाय को भी ऑनलाइन रखना जरुरी हो गया हैं। यह केवल सोशल मीडिया से

संभव नही है । इसके लिए उन्हें एक व्यवसायिक वेबसाइट की भी जरुरत होती हैं। आप थोडे से कम्पयूटर ज्ञान के साथ इस क्षेत्र को स्वरोजगार के लिए चुन सकतें हैं । (v) **आंतरिक सज्जा -**क्या आपको रंग बनावट साझ सज्जा बहुत पंसद है यदि हॉ तो निश्चित ही आंतरिक सज्जा का क्षेत्र आपके लिए बहुत लाभदायक हो सकता हैं। यदि आप शहरी क्षेत्र में रहते हैं तो आप रियल स्टेट ऐंजेट आर्कीटेक्ट बिल्डर्स की सहायता से इस क्षेत्र में भी बहुत अच्छा काम कर सकते हैं एवं इसे स्वरोजगार के रुप मे अपना सकते हैं।(vi) **पोषण सलाहकार द-** आज के समय में लोगो का खान पान एवं दिनचर्या बहुत बदल गई हैं। ज्यादातर लोग ऐसी ऑफिस में कुर्सी पर बैठे-बैठे ही पुरा काम करते हैं। ऐसे में पोषण संबंधी परेशानिया होना बहुत स्वभाविक है। अधिकांश लोग यह भी नही जानते की उनके रोज के भोजन का पोषण मूल्य क्या है। इसी कारण वे पोषण सलाहकार की सेवाऐं लेना उचित समझते हैं और अच्छा मूल्य भी चुकाते हैं । (vii) **इवेन्ट प्रबंधन -** आज के समय में लगभग सभी देशों में शहरीकरण और उद्योगिकरण कि प्रकिया बहुत तेजी से हो रही हैं। अधिकतर महिलाए भी विभिन्न कार्य क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही हैं, अतः समयाभाव के कारण इवेन्ट प्रबंधकों की मांग पहले की अपेक्षा बढी हैं । इस क्षेत्र में तेजी का एक मुख्य कारण फिल्मों का प्रभाव भी हैं जिसने लोगों के रहन सहन के स्तर को बहुत तेजी से बदला हैं । इन्ही कारणो कि वजह से छोटे से छोटे कार्यक्रमों के आयोजन के लिए इवेन्ट प्रबंधकों कि सेवाऐं ली जा रही हैं। इससे स्वतः ही इस क्षेत्र में रोजगार की असीमित संभावनाए उत्पन्न हुई है। यद्यपि इसमें बहुत ही कठोर परिश्रम की आवश्यकता हैं लेकिन इसमें लाभ अपेक्षाकृत अधिक हैं । (viii) **जीवन प्रशिक्षक-** यदि आप अपनें दैनिक दिनचर्या का प्रबंधन बहुत अच्छे से करते हैं और ऐसा सोचते है कि आप इस कौशल को दुसरों तक भी पहुचाए तो जीवन प्रशिक्षक का क्षेत्र भी एक अच्छा क्षेत्र हो सकता है। अधिकांश व्यक्ति इस बात के बारे मे ज्यादा चितिंत नहीं होते की वे अपने वित्तीय संसाधन सामाजिक जीवन एवं अपने कॅरियर के बीच में किस प्रकार से सामान्यजस स्थापित करें। अतः यह क्षेत्र भी स्वरोजगार के लिए एक उभरता हुआ क्षेत्र हो सकता हैं । (ix) **डिजिटल मार्केटिंग -**डिजिटल मार्केटिंग का क्षेत्र भी वर्तमान में स्वरोजगार के लिए एक अच्छा क्षेत्र हैं। इसमें आप इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सहायता से आप वस्तुओं का प्रमोशन कर सकतें हैं। यह परंपरागत बाजार से अलग हैं और इसके लिए आपको डिजिटल मार्केटिंग का एक शॉर्टटर्म कोर्स करना होगा । (x) **टिफिन सेन्टर -**बडे शहरों मे घर के बने भोजन की बहुत मांग हैं। बढते शहरीकरण एवं बहुराष्टी्‍य कम्पनीयों मे बढते रोजगार के अवसरों के कारण अधिकांश युवा शहरों मे नौकरी कर रहें हैं। ऐसे मे उन्हे घर का भोजन नही मिल पाता यह भी देखने को मिलता है की कार्यस्थल की दूरी के कारण भी घर का भोजन ले जाना संभव नही होता ऐसे में यदि आप उन्हें घर का भोजन उपब्लध कराए तो निश्चित रुप से यह एक अच्छा स्वरोजगार का क्षेत्र हो सकता है । **उदाहरण:मुम्बई डब्बावाला** । (xi) **शिल्प -**यदि आपको आकृतियां बनाना चित्र बनाना या पेन्टिंग आदि का शौक हैं तो यह क्षेत्र भी स्वरोजगार के लिए बहुत अच्छा हो सकता हैं। आप विभिन्न प्रकार की चीजें बनाकर उनकी प्रदर्शनी लगाकार उन्हे बेच सकते हैं। वर्तामन समय में डिजिटल मार्केटिंग ए युट्यूब चैनल या अपनी वेबसाइट के द्वारा ऑनलाइन मार्केटिंग भी संभव हैं। अधिकांश लोग इस प्रकार के सामान को पंसद भी करते हैं और इसके लिए अच्छा मूल्य देनें को भी तैयार रहते हैं । (xii) **कतरन या बेकार अपशिष्ट से कलात्मक चीजें बनाना -** यदि हम वर्तमान परिस्थितियों कि बात करें तो मास्क पहनना अब हमारे दिनचर्या मे शामिल हो गया हैं। इसे बनाने के लिए बहुत थोडें से कपडें की जरुरत होती हैं । जो किसी भी टेलर की दुकान में बची हुई कतरनों से बनाया जा सकता हैं। इसी प्रकार घर में भी बहुत सारी चीजें टुटी हुई या अनुउपयोगी हो सकती हैं । जिनका कलात्मक प्रयोग संभव हैं । जैसे-. टुटे हुए टब, बाल्टी, मटका, बोतल, कप आदि को पेंट कर गमले बनाए जा सकते हैं । कतरन से सॉफट टॉयज भी बनाते हैं ।

(3) स्वरोजगार के अन्य क्षेत्र - (i) ड्रेस डिजाइनिंग बुटिक (ii) ब्यूटीपार्लर (iii) टूरिस्ट गाइड (iv) फोटोग्राफी (v) प्रूफरीडिंग एडिटिंग (vi) केन्डल मेंकिंग ।

(4) स्वरोजगार के लिए सरकारी योजनाएं -(a)- (i) मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना (ii) नेशनल अरबन लाइवलीहुड मिशन (iii) प्रधान मंत्री रोजगार निर्माण प्रोगा्रम (iv) प्रधान मंत्री रोजगार योजना (v) शिक्षित बेराजगार लोन योजना (vi) नेशनल अप्रेन्टिस प्रमोशन स्कीम (b)- (i) Integrated Rural Development Programme (IRDP)(ii) Self-Employment Programme of Urban Poor(iii) Prime Minister Employment Generation Programme (PMEGP(iv) Mukhya Mantri Yuva Swarojagar Yojna

(5) स्वरोजगार की आवश्यकता - रोजगार सृजन किसी भी देश के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण विषय है। वर्तमान परिस्थितियों मे तो यह सपूंर्ण विश्व के लिए चिन्ता का विषय है। एक ओर महामारी और दूसरी ओर कम होते हुए रोजगार के अवसर इनके कारण आज का पढा लिखा एवं सक्षम युवा भी रोजगार नही पा रहा है। अतः आवश्यकता इस बात कि है कि युवा स्वयं पहल

करें और स्वरोजगार प्रदाता के रुप में स्वंय को स्थापित करें। वर्तमान में सरकार द्वारा बहुत सी योजनाए लागू की गई हैं। जो युवाओं को अपने रोजगार स्थापित करने में सहायक होगी। बैंक भी शिक्षित बेरोजगार युवाओं को लोन दे रहे है। बहुत से सरकारी संस्थान युवाओं के लिए ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित कर रहें है। जिससे कौशल विकास हो सके मध्यप्रदेश सरकार का कौशल विकास विभाग भी इसमें प्रयासरत है। भारत जैसे राष्ट्र जहॉ जनसंख्या बहुत अधिक है वहॉ स्वरोजगार अत्यन्त लाभप्रदाय हो सकता है। भारत सरकार की आत्मनिर्भर भारत Start-up India, Stand-up India, Vocal for Localआदि योजनाएं निश्चित रुप से इनमें सहायक है।

(6) महत्व -यद्यपि स्वरोजगार चुनौतियों से भरपूर है लेकिन इसके बावजूद भी इसके बहुत से लाभ है , जैसे-(i)स्वामित्व (ii)अपनी कार्य अनुसूचि(iii)कलात्मकता निखारने का अवसर(iv)अशिक्षित व कम शिक्षित लोंगो के लिए वरदान है।(v)अपने साथी-कर्मचारी चुननें के अवसर (vi)अपना कार्य स्थल - क्षेत्र चुननें का अधिकार (vii)नवाचार के अवसर।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी :

मा कुरु धनजनयौवनगर्वं,हरति निमेषात्कालः सर्वं।
मायामयमिदमखिलम् हित्वा,ब्रह्मपदम् त्वं प्रविश विदित्वा॥

श्रीमद्भगवतगीता

सुखं त्विदानीं त्रिविधं श्रृणु मे भरतर्षभ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति॥
यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्॥

हे भरतश्रेष्ठ! अब तीन प्रकार के सुख को भी तू मुझसे सुन। जिस सुख में साधक भजन, ध्यान और सेवादि के अभ्यास से रमण करता है और जिससे दुःखों के अंत को प्राप्त हो जाता है, आरंभकाल में यद्यपि वह विष के तुल्य प्रतीत होता है, परन्तु परिणाम में अमृत के तुल्य है, इसलिए वह परमात्मविषयक बुद्धि के प्रसाद से उत्पन्न होने वाला सुख सात्त्विक कहा गया है॥

विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम्।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम्॥

जो सुख विषय और इंद्रियों के संयोग से होता है, वह पहले- भोगकाल में अमृत के तुल्य प्रतीत होने पर भी परिणाम में विष के तुल्य है इसलिए वह सुख राजस कहा गया है॥

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्॥

जो सुख भोगकाल में तथा परिणाम में भी आत्मा को मोहित करने वाला है, वह निद्रा, आलस्य और प्रमाद से उत्पन्न सुख तामस कहा गया है॥

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिःस्यात्त्रिभिर्गुणैः॥

पृथ्वी में या आकाश में अथवा देवताओं में तथा इनके सिवा और कहीं भी ऐसा कोई भी सत्त्व नहीं है, जो प्रकृति से उत्पन्न इन तीनों गुणों से रहित हो॥

रामचरितमानस

सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा। सर संधान कीन्ह करि दापा॥
छाड़ा बान माझ उर लागा। मरती बार कपटु सब त्यागा॥

कोसल पति श्री रामजी के प्रताप का स्मरण करके लक्ष्मणजी ने वीरोचित दर्प करके बाण का संधान किया। बाण छोड़ते ही उसका सर- धड़ से अलग हो गया। मरते समय उसने सब कपट त्याग दिया॥

रामानुज कहँ रामु कहँ अस कहि छाँड़ेसि प्रान।
धन्य धन्य तव जननी कह अंगद हनुमान॥

राम के छोटे भाई लक्ष्मण कहाँ हैं? राम कहाँ हैं? ऐसा कहकर उसने प्राण छोड़ दिए। अंगद और हनुमान कहने लगे- तेरी माता धन्य है, धन्य है॥

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥

रावण को रथ पर और श्री रघुवीर को बिना रथ के देखकर विभीषण अधीर हो गए। प्रेम अधिक होने से उनके मन में सन्देह हो गया। श्री रामजी के चरणों की वंदना करके वे स्नेह पूर्वक कहने लगे॥

नाथ न रथ नहि तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना॥

हे नाथ! आपके न रथ है, न तन की रक्षा करने वाला कवच है और न जूते ही हैं। वह बलवान् वीर रावण किस प्रकार जीता जाएगा ? कृपानिधान श्री रामजी ने कहा- हे सखे! सुनो, जिससे जय होती है, वह रथ दूसरा ही है॥

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥

शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिए हैं। सत्य और शील उसकी मजबूत ध्वजा और पताका हैं। बल, विवेक, दम और परोपकार- ये चार उसके घोड़े हैं, जो क्षमा, दया और समता रूपी डोरी से रथ में जोड़े हुए हैं॥

ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥

ईश्वर का भजन ही चतुर सारथी है। वैराग्य ढाल है और संतोष तलवार है। दान फरसा है, बुद्धि प्रचण्ड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष है॥

अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा॥

निर्मल (पापरहित) और अचल (स्थिर) मन तरकस के समान है। शम (मन का वश में होना), (अहिंसादि) यम और (शौचादि) नियम, ये बहुत से बाण हैं। ब्राह्मणों और गुरु का पूजन अभेद्य कवच है। इसके समान विजय का दूसरा उपाय नहीं है॥

सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥
महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर॥

हे सखे! ऐसा धर्ममय रथ जिसके हो उसके लिए जीतने को कहीं शत्रु ही नहीं है॥ हे धीरबुद्धि वाले सखा! सुनो, जिसके पास ऐसा दृढ़ रथ हो, वह वीर संसार रूपी महान् दुर्जय शत्रु को भी जीत सकता है॥

बोध वाक्य: " परमात्मा मन के भीतर है उसे बाहर ढूढने की जरूरत नहीं। जटा बांधने , केश बढ़ाने, द्वारका , काशी , मथुरा में भटकने से कोई लाभ नहीं। साहिब तो हर घट के भीतर है , उसे बड़े सहज रूप में मन के भीतर देखा जा सकता है।"-संत दादू

बोध कथा:

हंस और उल्लू

एक बार स्वामी विवेकानंद अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में व्याख्यान दे रहे थे। स्वामी जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति तथा धर्म के सभी तत्वों का वैज्ञानिक महत्व है। यह सुनकर एक अमेरिकी बीच में उठकर बोला, वास्तव में आपकी संस्कृति महान है, तभी तो आपके यहां देवी लक्ष्मी का वाहन उल्लू बताया गया है। अब जरा बताइए कि उल्लू को देवी लक्ष्मी का वाहन बताने के पीछे क्या वैज्ञानिक तर्क है ?

स्वामी जी अत्यंत सहजता पूर्वक बोले, पश्चिम देशों की तरह भारत में धन को ही सब कुछ नहीं माना गया है। हमारे ऋषि - मुनियों ने चेतावनी दी है कि लक्ष्मी रूपी धन के असीमित मात्रा में पास आते ही मनुष्य आंखें होते हुए भी उल्लू की तरह अंधा हो

जाता है। इसी का संकेत देने के लिए लक्ष्मी का वाहन उल्लू बताया गया है। इसके पीछे यही वैज्ञानिक तर्क है। इसके बाद स्वामी जी फिर बोले, सरस्वती ज्ञान और विज्ञान की प्रतीक हैं इसलिए सरस्वती का वाहन हंस बताया गया है ,जो नीर, क्षीर विवेक का प्रतीक है। वह व्यक्ति यह अवधारणा सुनकर स्वामी जी के प्रति नतमस्तक हो गया।

मासिक गीत / गान :

जीवन का श्रम ताप हरो हे!
सुख-सुषुमा के मधुर स्वर्ण हे!
सूने जग गृह द्वार भरो हे!

लौटे गृह सब श्रान्त चराचर
नीरव, तरु अधरों पर मर्मर,
करुणानत निज कर पल्लव से
विश्व नीड़ प्रच्छाय करो हे!

उदित शुक्र अब, अस्त भनु बल,
स्तब्ध पवन, नत नयन, पद्म दल
तन्द्रिल पलकों में, निशि के शशि!
सुखद स्वप्न वन कर विचरो हे!
(सुमित्रा नंदन पन्त)

--00--

जून

जेष्ठ : दत्तात्रेय के तीन सिर, छह हाथ और चार कुत्ते हैं। उनके सामने एक गाय और एक वृक्ष है। छह हाथों में से एक हाथ में डमरू है, एक हाथ में चक्र, एक में शंख और एक में जप-माला, अन्य दो हाथों में कमण्डल और त्रिसूल है। दत्ता के तीन शिर ब्रह्म तत्व, शिव तत्व और विष्णु तत्व के प्रतीक हैं। जो सृजन, पालन और संहार के प्रतीक हैं। त्रिसूल अहंकार के दमन का प्रतीक है, तो डमरू आत्म-जागरण का। 'ओंकार' का सदा नाद करते हैं जो तीनों स्वरूपों को बोध कराता है। उनका 'सोहम' शब्द भी इसका प्रतीक है कि 'मैं ही ब्रह्म हूँ'। हाथ का चक्र इस बात का प्रतीक है कि जीवन निरन्तर चलता है, उसका आरंभ और अन्त नहीं है। यह चक्र कर्म बन्धन से मुक्ति देता है। जप-माला ईश्वर स्मरण का माध्यम है, जीव को अपने मूलतत्व का सदा स्मरण। जलपूर्ण कमण्डल अमृत-तत्व का प्रतीक है जो आत्मा की उस भूख को शांत करता है, जिसके द्वारा परमात्मा और आत्मा का साक्षात्कार होता है और जीव आवागमन के मार्ग से मुक्त होता है। चार कुत्ते चार वेद के प्रतीक हैं, जो सत्य मार्ग में असत्य का शिकार करते हुए, स्वर्ग तक की यात्रा पूरी करते हैं और आनन्द की अनुभूति होती है। गाय कामधेनु की प्रतीक है। वह सभी उन इच्छाओं की पूर्ति करती है जो भगवान चाहते हैं। वह सभी भौतिक और पराभौतिक वस्तुओं की साम्राज्ञी है। सामने अन्डुम्बरा का पेड़ हैं। यह अन्डुम्बरा अपूर्व वस्तु है जिसके पुष्प से जो रस निकलता है ईश्वर उसका पान करते हैं। कहा जाता है जहाँ अन्डुम्बरा वृक्ष होता है वहाँ दत्तात्रेय रहते हैं।

योग (भाग-चार)

अन्य परंपराओं में योग :

1. **तंत्र:** तांत्रिक अभ्यास व्यक्ति को सनातन परम्परा में योग, ध्यान, और संन्यास से जोड़ता है। तांत्रिक परंपरा में चक्र ध्यान पर ज्यादा जोर दिया जाता है। इसे एक प्रकार का कुण्डलिनी योग माना जाता है, जिसके माध्यम से ध्यान और पूजा के लिए "हृदय" में स्थित चक्र में देवी को स्थापित करते हैं।
2. **जैन धर्म:** दूसरी शताब्दी के जैन ग्रन्थ तत्वार्थ सूत्र के अनुसार मन, वाणी और शरीर सभी गतिविधियों का कुल 'योग' है। पतंजलि योगसूत्र के पांच यम और जैन धर्म के पाँच प्रमुख प्रतिज्ञाओं में अलौकिक सादृश्य है।
3. **बौद्ध-धर्म में योग :** प्राचीन बौद्ध धर्म के अंतगर्त बुद्ध के प्रारंभिक उपदेशों में योग विचारों की सबसे प्राचीन निरंतर अभिव्यक्ति पायी जाती है।
4. **हठयोग योग :** हठयोग , योग की एक विशेष प्रणाली है। हठ का शाब्दिक अर्थ हठ पूर्वक किसी कार्य को करने से लिया जाता है। हठ में 'ह' का अर्थ 'सूर्य' तथा 'ठ' का अर्थ 'चन्द्र' बताया गया है। 'सूर्य' और 'चन्द्र' की समान अवस्था हठयोग है। शरीर में कई हजार नाड़ियाँ है , उनमें तीन प्रमुख नाड़ियों का वर्णन है। सूर्यनाड़ी अर्थात् पिंगला जो दाहिने स्वर का प्रतीक है। चन्द्र नाड़ी अर्थात इड़ा जो बायें स्वर का प्रतीक है। इन दोनों के बीच तीसरी नाड़ी सुषुम्ना है। इस प्रकार हठयोग वह क्रिया है जिसमें पिंगला और इड़ा नाड़ी के सहारे प्राण को सुषुम्ना नाड़ी में प्रवेश करा कर ब्रहम रन्ध्र में समाधिस्थ किया जाता है।
5. **मंत्रयोग:** मंत्रयोग का सम्बन्ध मन से है, मन को इस प्रकार परिभाषित किया है- मननइतिमनः। जो मनन, चिन्तन करता है, वही मन है। मन की चंचलता का निरोध मंत्र के द्वारा करना 'मंत्रयोग' है। मंत्र से ध्वनि तरंगें पैदा होती है मंत्र शरीर और मन दोनों पर प्रभाव डालता है। मंत्र जप मुख्यरूप से चार प्रकार से किया जाता है। (1) वाचिक (2) मानसिक (3) उपांशु (4) अजपा।
6. **ज्ञानयोग :** सांख्य योग से सम्बन्ध रखता है। पुरुष प्रकृति के बन्धनों से मुक्त होना ही ज्ञानयोग है।
7. **कुंडलिनीयोग :** (लययोग) चित्त का अपने स्वरूप में विलीन होना या चित्त की निरुद्ध अवस्था लययोग के अन्तर्गत आता है। साधक के चित्त में जब चलते, बैठते,सोते और भोजन करते समय हर समय ब्रह्म का ध्यान रहे इसी को लययोग कहते हैं।
8. **राजयोग:** राजयोग सभी योगों का राजा कहलाता है क्योंकि इसमें प्रत्येक प्रकार के योग की कुछ न कुछ सामग्री अवश्य मिल जाती है। राजयोग में महर्षि पतंजलि द्वारा रचित अष्टांग योग का वर्णन आता है। राजयोग का विषय चित्तवृत्तियों का निरोध करना है।

भारत के प्रमुख दर्शन :

भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद को प्रामाणिक मानने वाले दर्शन को 'आस्तिक' तथा वेद को अप्रमाणिक मानने वाले दर्शन को 'नास्तिक' कहा जाता है। आस्तिक दर्शन छ: हैं- न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त। वेदबाह्य दर्शन छ: हैं- चार्वाक, आजीवक या आजीविक, बृहस्पति, बौद्ध- सौत्रान्तिक, वैभाषिक, और जैन।

'आस्तिक' दर्शन

1. **न्याय दर्शन -** दृष्ट्रा ऋषि गौतम। चार प्रमाण हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द। 'न्याय सूत्र'। न्याय दर्शन में शरीर, इन्दियाँ, चित्त, प्रवृत्ति, बुद्धि, दोष, दु:ख, फल आदि शामिल हैं। कणाद ऋषि द्वारा प्रवर्तित वैशेषिक दर्शन और गौतम मुनि प्रवर्तित न्याय दर्शन के सिद्धान्त एक जैसे हैं। न्याय दर्शन एक प्रकार से वैशेषिक सिद्धान्त की ही विस्तृत व्याख्या है या माना जाना चाहिए कि इन दोनों दर्शनों में एक ही दर्शन-दृष्टि है, जिसका पूर्वांग वैशेषिक है और उत्तरांग न्याय।
2. **सांख्य दर्शन-** दृष्ट्रा कपिल मुनि। 'सांख्य' का शाब्दिक अर्थ है - 'संख्या' या विश्लेषण। इसकी सबसे प्रमुख धारणा सृष्टि के प्रकृति-पुरुष से बनी होने की है, यहाँ प्रकृति (यानि पंचमहाभूतों से बनी) जड़ है और पुरुष (या जीवात्मा) चेतन। योगशास्त्रों

के ऊर्जास्रोत (ईडा-पिंगला), शाक्तों के शिव-शक्ति के सिद्धांत इसके समानान्तर दिखते हैं। पुरुष चेतन है, वह शरीर, मन व इन्द्रिय से भिन्न है। पुरुष प्रकृति के परिणामों का उपभोग करता है।

3. **योग दर्शन-** दृष्ट्रा महर्षि पतंजलि । ध्यान और समाधि मुक्ति के साधन । अष्टांग योग-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। आत्मा, शरीर, मन, बुद्धि आदि से ऊपर है, जिसके कारण वह पाप-पुण्य,सुख-दुख आदि से भी ऊपर है।
4. **वैशेषिक दर्शन-** वैशेषिक दर्शन के प्रर्वतक कणाद ऋषि हैं। कणाद का पहला नाम क्रांतिभान था जो बाद में काश्यप तथा कणाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ। परमाणुवाद इनकी सबसे बड़ी देन। इनका मत है कि धर्म के दो प्रकार - सामान्य धर्म और विशेष धर्म हैं। सामान्य धर्म में, अहिंसा, सत्यवचन, ब्रह्मचर्य, पवित्र दव्य सेवन, भाव शुद्धि, प्राणहित साधन, विशेष देवता की सिद्धि आदि आते हैं। विशेष धर्म में - चार वर्ण और चार आश्रमों का पालन। उनका प्रमुख दर्शन ग्रंथ 'वैशेषिक' है। किन्तु जहाँ अन्य दर्शनों में मूल तत्वों की संख्या चौबीस मानते हैं वहीं कणाद , इन्हें पच्चीस मानते हैं।
5. **मीमांसा दर्शन-** इस दर्शन के ऋषि जैमिनी हैं। इसमें कर्म की प्रधानता और वेदों के प्रति अटूट श्रद्धा बताई गई है। संसार में जितने जीव उतनी ही आत्माएँ हैं। आत्मा अविनाशी है। सृष्टि अनादि और अनंत है।
6. **वेदांत दर्शन-** प्रवर्तक वादरायण व्यास हैं। आत्मा परमात्मा का अंश है। सब कुछ ब्रह्म ही ब्रह्म है। गौड़पाद ने अद्वैत वेदांत की प्रतिष्ठा की। शंकराचार्य ने वेदान्त का विशद विवेचन किया।

वेदबाह्य दर्शन

1. **चार्वाक :** चार्वाक दर्शन एक प्राचीन भारतीय भौतिकवादी दर्शन है। यह मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है तथा पारलौकिक सत्ताओं को यह सिद्धांत स्वीकार नहीं करता है। यह दर्शन वेद बाह्य भी कहा जाता है। चार्वाक प्राचीन भारत के एक अनीश्वरवादी,नास्तिक और तार्किक थे।
2. **आजीवक या आजीविक:** आजीविक या 'आजीवक', दुनिया की प्राचीन दर्शन परंपरा में भारतीय जमीन पर विकसित हुआ पहला नास्तिकवादी या भौतिकवादी सम्प्रदाय था। भारतीय दर्शन और इतिहास के अध्येताओं के अनुसार आजीवक संप्रदाय की स्थापना मक्खलिगोसाल (गोशालक) ने की थी।
3. **बृहस्पति :** बृहस्पति को आमतौर पर चार्वाक या लोकायत दर्शन के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। बृहस्पति को चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र ग्रन्थ में अर्थशास्त्र का एक प्रधान आचार्य माना है।
4. **जैन दर्शन :** जैन दर्शन एक प्राचीन भारतीय दर्शन है। इसमें अहिंसा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जैन धर्म की मान्यता अनुसार 24 तीर्थंकर हैं। जैन दर्शन के अनुसार जीव और कर्मो का सम्बन्ध अनादि काल से है। जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकर हुए जिनमें प्रथम ऋषभ देव तथा अन्तिम महावीर हैं।
5. **बौद्ध दर्शन :** 'दुःख से मुक्ति' बौद्ध धर्म का सदा से मुख्य ध्येय रहा है। कर्म, ध्यान एवं प्रज्ञा इसके साधन रहे हैं। बौद्धमत में उपनिषदों के आत्मवाद का खंडन करके "अनात्मवाद" की स्थापना की गई है। फिर भी बौद्धमत में कर्म और पुनर्जन्म मान्य हैं। सिद्धांत भेद के अनुसार बौद्ध परंपरा में चार दर्शन प्रसिद्ध हैं। इनमें वैभाषिक और सौत्रांतिक मत हीनयान परंपरा में हैं। योगाचार और माध्यमिक मत महायान परंपरा में हैं ।
6. **सौत्रान्तिक** : सौत्रांतिक मत हीनयान परंपरा का बौद्ध दर्शन है। इस मत के अनुसार पदार्थों का प्रत्यक्ष नहीं,अनुमान होता है। अत : उसे बाह्यानुमेयवाद कहते हैं। सौत्रान्तिक मत में सत्ता की स्थिति बाह्य से अन्तर्मुखी है।
7. **वैभाषिक** : वैभाषिक मत, हीनयान परम्परा का बौद्ध दर्शन है। इसका प्रचार भी लंका में है। यह मत बाह्य वस्तुओं की सत्ता तथा स्वलक्षणों के रूप में उनको प्रत्यक्ष मानता है। अत : उसे बाह्य प्रत्यक्षवाद अथवा "सर्वास्तित्ववाद" कहते हैं।
8. **योगिक सिद्धियाँ :** आठ ऐश्वर्य या सिद्धियाँ इस प्रकार हैं-''अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, ईषित्वं, प्राप्ति, प्रकाम्य।" अर्थात शूक्ष्म हो जाना, विषाल हो जाना, भारी हो जाना, हल्का हो जाना, शासक बन जाना, वश में कर लेना, इच्छानुसार वस्तु की प्राप्ति और जैसा चाहे वैसा रूप बना लेना।
9. **योग की व्याहृतियाँ-** भू भुव: स्व: ये तीन व्याहृतियाँ हैं। ॐ योग का अंतिम बोध हैं।

(10) पंचकोश : मानवी चेतना को पाँच भागों में विभक्त किया गया है। इस विभाजन को पाँच कोश कहा जाता है। प्राणियों का स्तर इन चेतनात्मक परतों के अनुरूप ही विकसित होता है। कृमि कीटकों की चेतना इन्द्रियों की प्रेरणा के इर्द गिर्द की घूमती रहती है। शरीर ही उनका सर्वस्व होता है। उनका 'स्व' काया की परिधि में ही सीमित रहता है। इससे आगे की न उनकी इच्छा होती है, न विचारणा न क्रिया। प्रत्येक कोश का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य यह छः शत्रु और ममता, तृष्णा आदि दुष्प्रवृत्तियाँ मनोमय कोश में छिपी रहती है। कोश साधना से उन सब का निराकरण होता है। ये पाँचकोश इस प्रकारहैं -

(1) अन्नमय कोश -अन्नमय कोश का अर्थ है, इन्द्रिय चेतना। अन्न से शरीर और मस्तिष्क निर्मित होता है। सम्पूर्ण दृश्यमान जगत, ग्रह-नक्षत्र,तारे और पृथ्वी, आत्मा की परमसत्ता की अभिव्यक्ति है। वैदिक ऋषियों ने अन्न को ब्रह्म कहा है। यह प्रथम कोश है, जहाँ आत्मा स्वयं को अभिव्यक्त करती रहती है। इस जड़-प्रकृति जगत से बढ़कर भी कुछ है। जड़ का अस्तित्व मानव और प्राणियों से पहले का है। पहले पाँच तत्वों (अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी,आकाश) की सत्ता ही विद्यमान थी

(2) प्राणमय कोश -प्राणमय कोश अर्थात् जीवनी शक्ति। प्राण पांच प्रकार के होते हैं- प्राण, समान,उदान, व्यान,अपान। उपनिषद का ऋषि कहता है - तुम (शरीर) और आत्मा (हृदय) प्राण में प्रतिष्ठित है। प्राण अपान में प्रतिष्ठित है। अपान व्यान में प्रतिष्ठित है। व्यान उदान में प्रतिष्ठित है। उदान सामान में प्रतिष्ठित है , जिसको नेति -नेति कहकर वर्णन किया गया है। यह प्राणमय कोश सभी वनस्पतियों, पशु और मानव दो भागों को मिलाकर भौतिक और आध्यात्मिक स्वरूप प्राणों से जुड़े हुए हैं। उसी प्रकार वाणी का मन से, मन का अपान से, प्राण का अपान से, मृत्यु का अपान से, पांच तत्वों का तीन गुणों (सत, रज, तम) से, गुणों का महतत्व से, महतत्व का आत्मा से और अनंत आत्मा का परमात्मा से समलय होता है। प्राणमय कोश की क्षमता जीवनी शक्ति के रूप में प्रकट होती है।

(3) मनोमय कोश– मनोमय कोष साधारणतया मन और बुद्धि के संयोग को माना जाता है। मन का अर्थ है संकल्प और विकल्प। हम जो देखते, सुनते हैं अर्थात हमारी इन्द्रियों द्वारा जब कोई सन्देश हमारे मस्तिष्क में जाता है तो उसके अनुसार वहाँ सूचना एकत्रित हो जाती है, और मस्तिष्क से हमारी भावनाओं के अनुसार रसायनों का श्राव होता है जिससे हमारे विचार बनते हैं, जैसे विचार होंते हैं उसी तरह से हमारा मन स्पंदन करने लगता है और इस प्रकार प्राणम य कोश के बाहर एक आवरण बन जाता है यही हमारा मनोमय कोश होता है। मनोमय स्थिति विचारशील प्राणियों की होती है। यह और भी ऊँची स्थिति है। मननात्- मनुष्य:। मनुष्य नाम इसलिए पड़ा कि वह मनन कर सकता है। मनन अर्थात् चिन्तन।

(4) **विज्ञानमय कोश** -इसमें अचेतन सत्ता का भाव प्रवाह होता है। इसका निर्माण अन्तर्ज्ञान या सहज ज्ञान से होता है। इसे भाव-संवेदना का स्तर कह सकते हैं। दूसरों के सुख-दुख में भागीदार बनने की सहानुभूति के आधार पर इसका परिचय प्राप्त किया जा सकता है। आत्मभाव का आत्मीयता का विस्तार इसी स्थिति में होता है। अन्तःकरण विज्ञानमय कोश का ही नाम है। दयालु, उदार, सज्जन, सहृदय, संयमी, शालीन और परोपकार परायण व्यक्तियों का अन्तराल ही विकसित होता है। उत्कृष्ट दृष्टिकोण और आदर्श क्रियाकलाप अपनाने की महानता इसी क्षेत्र में विकसित होती है। महामानवों का यही स्तर समुन्नत रहता है।

(5) **आनंदमय कोश** -आत्म बोध-आत्म जागृति।आनंदमय कोश आत्मा की उस मूलभूत स्थिति की अनुभूति है जिसे आत्मा का वास्तविक स्वरूप कह सकते हैं। आनंदमय कोश जागृत होने पर जीव अपने को अविनाशी ईश्वर अंग, सत्य, शिव, सुन्दर, मानता है। शरीर, मन और साधन एवं सम्पर्क परिकर को मात्र जीवनोद्देश्य के उपकरण मानता है। यह स्थिति ही आत्मज्ञान कहलाती है। यह उपलब्ध होने पर मनुष्य हर घड़ी सन्तुष्ट एवं उल्लसित पाया जाता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा:

आचार्य शंकर वाणी :

दिनयामिन्यौ सायं प्रातः,शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपिन मुन्च्त्याशावायुः॥

श्रीमद्भगवतगीता

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः॥

हे परंतप! ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के तथा शूद्रों के कर्म स्वभाव से उत्पन्न गुणों द्वारा विभक्त किए गए हैं॥

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥

अंतःकरण का निग्रह करना, इंद्रियों का दमन करना, धर्मपालन के लिए कष्ट सहना, बाहर-भीतर से शुद्ध रहना, दूसरों के अपराधों को क्षमा करना, मन, इंद्रिय और शरीर को सरल रखना, वेद, शास्त्र, ईश्वर और परलोक आदि में श्रद्धा रखना, वेद-शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन करना और परमात्मा के तत्त्व का अनुभव करना- ये सब-के-सब ही ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं॥

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्॥

शूरवीरता, तेज, धैर्य, चतुरता और युद्ध में न भागना, दान देना और स्वामीभाव, ये सब-के-सब क्षत्रिय के स्वाभाविक कर्म हैं॥

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु॥

अपने-अपने स्वाभाविक कर्मों में तत्परता से लगा हुआ मनुष्य भगवत्प्राप्ति रूप परमसिद्धि को प्राप्त हो जाता है। अपने स्वाभाविक कर्म में लगा हुआ मनुष्य जिस प्रकार से कर्म करके परमसिद्धि को प्राप्त होता है, उस विधि को तू सुन॥

रामचरितमानस

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा। उपजा उर अति छोभ बिसेषा॥
सुरपति निज रथ तुरत पठावा। हरष सहित मातलि लै आवा॥

देवताओं ने प्रभु को पैदल (बिना सवारी के युद्ध करते) देखा, तो उनके हृदय में बड़ा भारी क्षोभ (दुःख) उत्पन्न हुआ। (फिर क्या था) इंद्र ने तुरंत अपना रथ भेज दिया। (उसका सारथी) मातलि हर्ष के साथ उसे ले आया॥

तेज पुंज रथ दिब्य अनूपा। हरषि चढ़े कोसलपुर भूपा॥
चंचल तुरग मनोहर चारी। अजर अमर मन सम गतिकारी॥

उस दिव्य अनुपम और तेज के पुंज (तेजोमय) रथ पर कोसलपुरी के राजा श्री रामचंद्रजी हर्षित होकर चढ़े। उसमें चार चंचल, मनोहर, अजर, अमर और मन की गति के समान शीघ्र चलने वाले (देवलोक के) घोड़े जुते थे॥

रथारूढ़ रघुनाथहि देखी। धाए कपि बलु पाइ बिसेषी॥
सही न जाइ कपिन्ह कै मारी। तब रावन माया बिस्तारी॥

श्री रघुनाथजी को रथ पर चढ़े देखकर वानर विशेष बल पाकर दौड़े। वानरों की मार सही नहीं जाती। तब रावण ने माया फैलाई॥

तानेउ चाप श्रवन लगि छाँड़े बिसिख कराल।
राम मारगन गन चले लहलहात जनु ब्याल॥

धनुष को कान तक तानकर श्री रामचंद्रजी ने भयानक बाण छोड़े। श्री रामजी के बाण समूह ऐसे चले मानो सर्प लहलहाते (लहराते) हुए जा रहे हों॥

आवत देखि सक्ति अति घोरा। प्रनतारति भंजन पन मोरा ॥
तुरत बिभीषन पाछें मेला। सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ॥

अत्यंत भयानक शक्ति को आती देख और यह विचार कर कि मेरा प्रण शरणागत के दुःख का नाश करना है, श्री रामजी ने तुरंत ही विभीषण को पीछे कर लिया और सामने होकर वह शक्ति स्वयं सह ली ॥

लागि सक्ति मुरुछा कछु भई । प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई ॥
देखि बिभीषन प्रभु श्रम पायो। गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो ॥

शक्ति लगने से उन्हें कुछ मूर्छा हो गई । प्रभु ने तो यह लीला की, पर देवताओं को व्याकुलता हुई । प्रभु को श्रम प्राप्त हुआ देखकर विभीषण क्रोधित हो हाथ में गदा लेकर दौड़े ॥

तब रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।
काटे बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप ॥

तब श्री राम ने रावण के सिर, भुजाएँ, बाण और धनुष काट डाले । पर वे फिर बहुत बढ़ गए, जैसे तीर्थ में किए हुए पाप बढ़ जाते हैं !॥

नाभिकुंड पियूष बस याकें। नाथ जिअत रावनु बल ताकें ॥
सुनत बिभीषन बचन कृपाला। हरषि गहे कर बान कराला ॥

इसके नाभिकुंड में अमृत का निवास है । हे नाथ! रावण उसी के बल पर जीता है । विभीषण के वचन सुनते ही कृपालु श्री रघुनाथजी ने हर्षित होकर हाथ में विकराल बाण लिए ॥

सायक एक नाभि सर सोषा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा ॥
लै सिर बाहु चले नाराचा। सिर भुज हीन रुंड महि नाचा ॥

एक बाण ने नाभि के अमृत कुंड को सोख लिया । दूसरे तीस बाण कोप करके उसके सिरों और भुजाओं में लगे । बाण सिरों और भुजाओं को लेकर चले। सिरों और भुजाओं से रहित रुण्ड (धड़) पृथ्वी पर नाचने लगा ॥

मंदोदरि आगें भुज सीसा। धरि सर चले जहाँ जगदीसा ॥
प्रबिसे सब निषंग महुँ जाई। देखि सुरन्ह दुंदुभीं बजाई ॥

रावण की भुजाओं और सिरों को मंदोदरी के सामने रखकर रामबाण वहाँ चले, जहाँ जगदीश्वर श्री रामजी थे । सब बाण जाकर तरकस में प्रवेश कर गए । यह देखकर देवताओं ने नगाड़े बजाए ॥

तासु तेज समान प्रभु आनन। हरषे देखि संभु चतुरानन ॥
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा । जय रघुबीर प्रबल भुजदंडा ॥

रावण का तेज प्रभु के मुख में समा गया। यह देखकर शिवजी और ब्रह्माजी हर्षित हुए । ब्रह्माण्डभर में जय-जय की ध्वनि भर गई। प्रबल भुजदण्डों वाले श्री रघुवीर की जय हो ॥

बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा। जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ॥

देवता और मुनियों के समूह फूल बरसाते हैं और कहते हैं- कृपालु की जय हो, मुकुन्द की जय हो, जय हो!॥

बोध वाक्य: ''जयदेव की देववाणी की स्निग्ध पीयूषधारा, जो काल की कठोरता में दब गई थी, अवकाश पाते ही लोकभाषा की सरलता में परिणत होकर मिथिला की अमराइयों में विद्यापति के कोकिल कंठ से प्रकट हुई और आगे चलकर ब्रज के करीलकंजों के बीच फैल मुरझाए मनों को सींचने लगी। आचार्यों की छाप लगी हुई आठ वीणाएँ श्री कृष्ण की प्रेमलीला का कीर्तन करनें उठीं, जिनमें सबसे ऊँची, सुरीली और मधुर झनकार अन्धे कवि सूरदास के वीणा की थी।''-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

बोध कथा:

अभिमान

महाराज बिंबिसार को नीद नहीं आ रही थी। मखमली सेज काँटे जैसी लग रही थी। मगध साम्राज्य का सारा वैभव भी उनके बेचैन मन को राहत देने में असमर्थ था। वे बिस्तर पर करवट बदलते रहे, लेकिन कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। उनके नींद नहीं आने का कारण यह था कि तीर्थंकर महावीर ने स्पष्ट रूप से कह दिया था कि उन्हें नरक में जाना पड़ेगा। नरक की कल्पना से ही वे काँप उठे। उन्होंने सोचा कि उनके पास कोष की कमी नहीं है, वे सारे साम्राज्य के स्वामी हैं, फिर भला मोक्ष उन्हें अलभ्य कैसे रहेगा? इतना ही नहीं उन्होंने अकारण कभी किसी का दिल भी नहीं दुखाया था। दूसरे ही दिन वे तीर्थंकर के चरणों में उपस्थित हो गए और उनसे बोले- 'प्रभो! मेरा साम्राज्य और सारा कोष आपके चरणों में अर्पित है। कृपया मुझे नरक-गमन से मुक्त कराएँ। मैं नरक से मुक्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार हूँ, परंतु मैं नरक में नहीं जाना चाहता।'

बिंबिसार की बेचैनी देखकर तीर्थंकर के अधरों पर स्मित हास्य की रेखा खिंच आई। उन्होंने जान लिया कि महाराजा को अहं ने ग्रसित कर लिया है और जहाँ अभिमान है, वहाँ मोक्ष कैसा ? वे बोले-'महाराज, आप अपने राज्य के पुण्य नामक श्रावक से सामयिक फल प्राप्त कीजिए। वही आपके उद्धार का उपाय हैं। महाराज उस श्रावक के पास पहुँचे और बोले-'श्रावक श्रेष्ठ! मेरी याचना स्वीकार करो, जो मूल्य माँगोगे मैं तुम्हें दूँगा।' इतना कहकर उन्होंने सामयिक से फल की माँग की। इस पर श्रावक बोला- 'महाराज, सामयिक तो समता का नाम है। राग-द्वेष की विषमता को चित्त से दूर कर देना ही तो सामयिक है। इसे कोई कैसे दे सकता है? जब तक आप सम्राट होने का अहंकार छोड़ न दें, वह आपको उपलब्ध नहीं हो सकता।' बस, बिंबिसार को ज्ञान मिल गया।

मासिक गीत / गान :

वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्
भारत वन्दे मातरम् जय भारत वन्दे मातरम्
रुक ना पाये तूफानो में सबके आगे बढे कदम
जीवन पुष्प चढ़ाने निकले माता के चरणों में हम ॥

मस्तक पर हिमराज विराजित उन्नत माथा माता का
चरण धो रहा विशाल सागर देश यही सुन्दरता का
हरियाली साड़ी पहने मा गीत तुम्हारे गाए हम ॥

नदियन की पावन धारा है मंगल माला गंगा की
कमर बन्ध है विंध्याद्रि की सातपुरा की श्रेणी की
सह्याद्रि का वज्रहस्त है पौरुष को पहचाने हम ॥

नही किसी के सामने हमने अपना शीश झुकाया है
जो हम से टकराने आया काल उसी का आया है
तेरा वैभव सदा रहे मा विजय ध्वजा फहराये हम ॥

--00--

आलोक -

- स्वामी विवेकानन्द कॅरियर मार्गदर्शन योजना एवं कॅरियर मित्र के उद्देश्यों एवं गतिविधियों की जानकारी दी जाए।
- सुभाषित पंक्तियों और बोध वाक्यों में जीवन का सार होता है, इनमें अगाध जीवनानुभव होता है, इनको समझने से न केवल विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण होगा, अपितु वे इनसे जीवन में मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकेंगे इसलिए सभी विद्यार्थियों को सुभाषित और बोध वाक्यों तथा बोध कथाओं का मर्म समझाते हुए इनको कंठस्थ भी कराया जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को ध्यान में रखते हुए आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संकल्प बढ़ाया जाए। एक साल में सर्टिफिकेट, दो साल में डिप्लोमा एवं तीन साल में डिग्री सहित मल्टीपल एंट्री, मल्टीपल एग्जिट सिस्टम औरचॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस)की जानकारी प्रत्येक विद्यार्थी को दी जाए।
- व्याख्यानों हेतु बाह्य विशेषज्ञों की सहायता के लिए भोपाल कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है। महाविद्यालय के प्राध्यापकों /सहायक प्राध्यापकों के माध्यम से कक्षावार विद्यार्थियों को अभ्यास करवाया जाए ताकि वे अपनी क्षमता एवं रुचि को पहचान पायें।
- विद्यार्थियों को कॅरियर के प्रति जागरूक बनाने हेतु सप्ताह के हर शनिवार को विशेषज्ञों की सहायता से संकायवार प्रेरणात्मक व्याख्यानों का आयोजन ऑनलाइन/ऑफ़लाइन किया जाए तथा संबंधित संकाय में उपलब्ध कॅरियर अवसरों की अनिवार्यतः जानकारी दी जाए।
- संकाय और कक्षावार विद्यार्थियों से प्लेसमेंट हेतु उनकी रुचि, रुझान एवं कौशल की जानकारी लिखित में प्राप्त की जाए तथा महाविद्यालय में इसका संधारण किया जाए। उक्त जानकारी लेते समय जिले, प्रदेश एवं देश में उपलब्ध रोजगार अवसरों/संस्थाओं की प्रोफाइल/जॉब प्रोफाइल की जानकारी भी विद्यार्थियों को दी जाए। प्लेसमेंट हेतु स्थानीय एवं बाह्य रोजगार प्रदाताओं को आमंत्रित किया जाए। प्रकोष्ठ की कॅरियर लायब्रेरी को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।
- प्राचार्यो से आग्रह है कि वे व्यक्तिगत रुचि लेकर अपने स्तर से इस हेतु कार्यवाही सुनिश्चित करने का कष्ट करें, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके। प्रत्येक महाविद्यालय में एक कॅरियर बोर्ड एवं कॅरियर मैगज़ीन का होना सुनिश्चित किया जाए। विद्यार्थियों कोरोजगार के अवसरों / सेवाओं की जानकारी अनिवार्यतः दी जाए।
- प्रदेश के सभी जिलों के महाविद्यालयों में निरंतर ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन कॅरियर अवसर मेलों का आयोजन किया जाएगा। समस्त महाविद्यालय अपने जिले में आयोजित होने वाले कॅरियर अवसर मेलों की संपूर्ण जानकारी एवं आयोजन तिथि, संबंधित आयोजक महाविद्यालय से प्राप्त कर विद्यार्थियों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें ताकि इच्छुक विद्यार्थियों को कॅरियर अवसर मेलों एवं प्लेसमेंट का लाभ प्राप्त हो सके ।
- महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कैंपस प्लेसमेंट के साथ व्यक्तित्व विकास में शासन की शिक्षक- अभिभावक योजना के माध्यम से सतत प्रयत्नशील रहना है। इस हेतु वार्षिक कैलेण्डर में व्यक्तित्व विकास के विषय भी शामिल किये जा रहे हैं ।
- आत्मनिर्भर भारत को दृष्टिगत रखते हुये जो महाविद्यालय ग्रामीण पृष्ठभूमि के हैं एवं जहाँ कृषि या कृषि इतर कार्यों से जुड़े परिवारों के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, ऐसे महाविद्यालय रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को कृषि उपकरणों यथा- वाटरपंप-मोटर, सीड ड्रील, स्प्रिंकलर, ड्रिप इरीगेशन उपकरण के संस्थापन, रख-रखाव एवं मरम्मत की जानकारी के साथ-साथ जैविक खेती, उद्यानिकी, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती, वर्मी कम्पोस्ट आदि की जानकारी/ प्रशिक्षण भी उपलब्ध करायें।

  क्रीड़ा के क्षेत्र में भी आजीविका के काफी अवसर मौजूद हैं, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में स्पोर्ट्स कोटा अंतर्गत। अतः महाविद्यालय में पदस्थ/ कार्यरत क्रीड़ा अधिकारी भी इच्छुक विद्यार्थियों को समय-समय पर क्रीड़ा के क्षेत्र में रोजगार संभावनाओं की जानकारी उपलब्ध कराएं।

(आयुक्त उच्च शिक्षा से अनुमोदित)

जावक क्रमांक 348 / एस.व्ही.सी.जी.एस/22 दिनांक 21.09.2022

निदेशक

स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजन